CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हिन्दी के अव्यय वाक्यांश

लेखक

चतुर्भुज सहाय

491·43
स हि
3943

केन्द्रीय हिंदी संस्थान

आगरा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

STATE MUSEUM, LUCKNOW

LIBRARY

Acc. No. 3943

Book No. 491·43
स हि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

Presented

हिन्दी के अव्यय वाक्यांश

(एक शोध प्रबन्ध)

राज्य संग्रहालय पुस्तकालय, लखनऊ
क्रमसंख्या 3943
प्राप्ति तिथि 28.8.7
State Museum, Library, Lko.

लेखक
चतुर्भुज सहाय

केन्द्रीय हिंदी संस्थान
आगरा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रकाशक :
केन्द्रीय हिन्दी संस्थान
नया आगरा,
आगरा–5

491.43
ए हि

प्रतियां–500
मूल्य—रुपये 2·70

तिथि :
मार्च, 1970

मुद्रक :
एजूकेशनल प्रेस, आगरा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आमुख

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के अनुसंधान विभाग में हिन्दी भाषा के वर्णन से संबंधित जो परियोजनाएँ अध्यापकों को सौंपी गयी हैं, उनमें 'हिन्दी के अव्यय वाक्यांश' परियोजना डा० चतुर्भुज सहाय ने पूरी की है। इससे पहले संस्थान 'हिन्दी की आधारभूत शब्दावली', 'हिन्दी की क्रियाएँ' और 'हिन्दी-परसर्ग'— हिन्दी भाषा के वर्णन विश्लेषण से सम्बन्धित ये तीन परियोजनाएँ प्रकाशित कर चुका है। 'हिन्दी की क्रियाएँ' शीर्षक परियोजना का कार्य डा० चतुर्भुज सहाय ने ही किया था। हिन्दी भाषा के विभिन्न पक्षों का भाषा-वैज्ञानिक वर्णन-विश्लेषण संस्थान में भाषा-शिक्षण की वैज्ञानिक प्रविधि और शिक्षण सामग्री तैयार करने के उद्देश्य से किया जा रहा है। अन्ततः इस कार्य की परिणति हिन्दी के वर्णनात्मक व्याकरण के रूप में सहज सिद्ध होगी, परन्तु अभी हमारा लक्ष्य सीमित और व्यावहारिक ही है। इसी क्रम में संस्थान हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के तुलनात्मक और व्यतिरेकी अध्ययन से सम्बन्धित परियोजनाओं पर भी कार्य कर रहा है। डा० वी० रा० जगन्नाथन द्वारा प्रस्तुत 'हिन्दी और तमिल की समानस्रोतीय भिन्नार्थी शब्दावली' शीर्षक शोध प्रबन्ध अभी हाल में ही प्रकाशित किया गया है।

डा० चतुर्भुज सहाय की दो वर्ष पहले प्रकाशित 'हिन्दी की क्रियाएँ' शीर्षक परियोजना से हमें विश्वास हो गया था कि इस दिशा में डा० सहाय का अध्ययन और अनुसंधान जारी रहेगा और वे एक के बाद दूसरी परियोजना हाथ में लेकर हिन्दी भाषा सम्बन्धी वर्णनात्मक अध्ययन के अभाव की पूर्ति करने में निरन्तर प्रयत्नशील रहेंगे। डा० सहाय ने प्रस्तुत कार्य को पूरा करके उस विश्वास को पुनः नया कर दिया है। इस बीच उन्होंने औपचारिक और अनौपचारिक रूप में भाषा-विज्ञान के गहन अध्ययन को जारी रखते हुए अपनी योग्यता और क्षमता में भी वृद्धि की है। मुझे आशा है कि हिन्दी भाषाविज्ञान विशेषतः शैक्षणिक भाषाविज्ञान के नवीन क्षेत्र में, जिसमें कार्य करने वाले विद्वानों की संख्या अभी अत्यन्त न्यून है, डा० चतुर्भुज सहाय अपने कार्य के गुण, परिमाण और उसकी उपादेयता के आधार पर निश्चित स्थान और मान्यता प्राप्त करेंगे।

'हिन्दी के अव्यय वाक्यांश' को विद्वानों के सम्मुख रखते हुए हम आशा करते हैं कि इस पर भाषा प्रयोग की मानकता और वर्णन को व्यावहारिक उपादेयता की दृष्टि से विचार किया जायेगा। इसे अधिक प्रामाणिक और उपयोगी बनाने के लिए जो भी सुझाव दिये जायेंगे, उनका हम कृतज्ञतापूर्वक स्वागत करेंगे।

—ब्रजेश्वर वर्मा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भूमिका

आधुनिक युग में भाषाविज्ञान की दो शाखाओं को विशेष महत्त्व दिया जा रहा है ; वाक्य विज्ञान और अर्थविज्ञान । भाषा के वर्णन में वाक्य की प्रमुखता स्वीकार की जा चुकी है । शब्दों के ऐसे आवृत अर्थों की खोज को विशेष महत्त्व दिया जा रहा है, जो किसी न किसी रूप में वाक्य रचना को प्रभावित करते हैं । इस प्रयास को एकदम नया तो नहीं कहा जा सकता, किंतु यह निर्विवाद है कि आधुनिक युग में भाषा के वर्णन में इस पक्ष पर विशेष बल दिया जा रहा है। यदि दो शब्द वाक्य रचना को अलग अलग ढंग से प्रभावित करते हैं, तो उनकी अर्थगत विशेषताओं में भेद का होना आवश्यक है। उदाहरण के लिए, हिंदी में क्रियाओं के दो मोटे वर्ग हो सकते हैं, हँसना, रोना, सोना आदि क्रियाएँ और पढ़ना, फेंकना, मारना आदि क्रियाएँ । दोनों वर्गों की क्रियाएँ वाक्य रचना को प्रभावित करने की दृष्टि से एक दूसरे से भिन्न हैं । पहले वर्ग की क्रियाएँ कर्ता कारक में एक संज्ञा वाक्यांश को लेती हैं, दूसरे वर्ग की क्रियाएँ कर्ता कारक में एक संज्ञा वाक्यांश को लेने के अतिरिक्त कर्म कारक में एक और संज्ञा वाक्यांश को लेती हैं । इस प्रकार वाक्य रचना की दृष्टि में दोनों वर्ग भिन्न हैं । इसके साथ ही रूपान्तरण की जो संभावनाएँ सकर्मक क्रियाओं के साथ हैं, वे अकर्मक क्रियाओं के साथ नहीं। किन्तु केवल किसी क्रिया को अकर्मक और सकर्मक कह देना पर्याप्त नहीं है। 'पढ़ना', 'फेंकना', 'मारना', 'भरना'—सभी सकर्मक क्रियाएँ हैं, किंतु वाक्य रचना के संदर्भ में इनमें परस्पर कुछ न कुछ भेद है। 'पढ़ना' में 'कर्म' स्थानांतरित नहीं होता, 'फेंकना' में 'कर्म' स्थानांतरित होता है, 'मारना' के साथ 'करण' कारक के परसर्ग का ऐच्छिक लोप हो सकता है, और 'भरना' के साथ 'कर्म' के स्थान पर 'अधिकरण' के शब्द को भी रखा जा सकता है। इसी प्रकार अन्य शब्द वर्गों की सूक्ष्म अर्थगत विशेषताओं की खोज वाक्य रचना को समझने में सहायक होगी। उदाहरण के लिए 'विवाह', 'खिड़की' और 'घर' इन तीन संज्ञाओं को लिया जा सकता है । 'विवाह' एक घटनार्थक संज्ञा है, इससे एक प्रक्रिया का बोध होता है । घटनार्थक होने से यह एकदेशीय भी है । दूसरी तरफ, 'खिड़की' और 'घर' घटनार्थक संज्ञाएँ नहीं हैं । किंतु इनमें फिर परस्पर भेद है, खिड़की द्वार सूचक संज्ञा है, (वायु, प्रकाश आदि के आने जाने का मार्ग), 'घर' स्थान सूचक संज्ञा है (ऐसी जगह जहाँ लोग निवास करते हैं) । अर्थगत इन भिन्न विशेषताओं के कारण तीनों संज्ञाओं के प्रयोग में भी भेद देखा जा सकता है । 'विवाह' का प्रयोग समयवाचक वाक्यांश के रूप में हो सकता है, किंतु 'घर' या 'खिड़की' का नहीं । 'घर' और 'खड़की' में भी प्रयोग भेद है। जैसे, वह इस खिड़की से भाग गया ; वह इस घर से भाग गया । दोनों वाक्यों के अर्थों में भेद है । पहले वाक्य के दो अर्थ हो सकते हैं, किन्तु दूसरे वाक्य का केवल एक अर्थ हो सकता है।

वाक्य में प्रयुक्त शब्दों के कुछ अर्थ अनावृत होते हैं, कुछ अर्थ आवृत होते हैं। वाक्य रचना और रूपान्तरण में दोनों प्रकार के अर्थों का महत्त्व है। आवृत और अनावृत अर्थों के भेद को स्पष्ट करने के लिए एक उदाहरण लिया जा सकता है—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

1. उसने घर में पुस्तक फेंकी।
2. उसने घर में पुस्तक पढ़ी।

'फेंकी' और 'पढ़ी' शब्दों के दोनों प्रकार के अर्थों को इस प्रकार दिखा सकते हैं—

आवृत अर्थ		अनावृत अर्थ
+स्थानान्तरण	फेंकी	1. भूतकाल
		2. एक वचन
—स्थानान्तरण	पढ़ी	3. स्त्रीलिंग

दूसरा उदाहरण—

1. इस वर्ष कई विवाह हुए।
2. इस वर्ष कई खिड़कियाँ बनीं।
3. इस वर्ष कई घर बनें।

आवृत अर्थ		अनावृत अर्थ
+घटनार्थक +अप्राणिवाचक	विवाह	1. बहु वचन 2. कर्ता कारक
+द्वार सूचक +अप्राणिवाचक	खिड़कियाँ	
+स्थान सूचक +अप्राणिवाचक	घर	

किसी शब्द के आवृत अर्थों की खोज वहीं तक सार्थक है, जहाँ तक वाक्य रचना में उनका प्रभाव परिलक्षित हो। यदि यह बंधन नहीं होगा, तो शब्द के आवृत अर्थों की खोज की कहीं सीमा नहीं होगी।

इस प्रबंध में हिन्दी के अव्यय वाक्यांशों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। अर्थ, रचना और प्रयोग तीनों दृष्टियों से अव्यय वाक्यांशों पर विचार किया गया है। पहले अध्याय में अर्थ के आधार पर अव्यय वाक्यांशों का वर्गीकरण प्रस्तुत किया गया है। आगे के अध्यायों में रचना और प्रयोग की दृष्टि से उन पर विचार किया गया है। परिशिष्ट में तीन अन्य विषयों का वर्णन है। इनमें 'नकारात्मक शब्द' का संक्षिप्त रूप 'गवेषणा' के विशेषांक में प्रकाशित हो चुका है। उसी का परिवर्धित रूप यहाँ प्रस्तुत है।

यह शोधकार्य एक परियोजना के रूप में लगभग एक वर्ष पहले आरम्भ हुआ था। सामग्री संकलन का कार्य कु० गोपीरानी श्रीवास्तव, अनुसंधान सहायक और श्री रामलाल वर्मा, अनुसंधान सहायक ने पूरा किया और इस रूप में ये दोनों अनुसंधान सहायक इस शोधकार्य के हिस्सेदार हैं।

इस कार्य को पूरा करने में मुझे निरन्तर डा० व्रजेश्वर वर्मा, निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान और डा० रमानाथ सहाय, कार्यकारी निदेशक, क० मु० विद्यापीठ से प्रेरणा और सहायता मिली है। इन लोगों के प्रति मैं अपना आभार प्रकट करता हूँ।

चतुर्भुज सहाय

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषय सूची

	पृष्ठ
1—हिन्दी के अव्यय वाक्यांश	1
2—समयवाचक अव्यय वाक्यांश	2
3—स्थानवाचक अव्यय वाक्यांश	19
4—रीतिवाचक अव्यय वाक्यांश	34
5—करणवाचक अव्यय वाक्यांश	41
6—साहचर्यवाचक अव्यय वाक्यांश	47
7—कारणवाचक अव्यय वाक्यांश	52
8—प्रयोजनवाचक अव्यय वाक्यांश	54
9—विविध अव्यय वाक्यांश	56
परिशिष्ट	
1—'कि' उपवाक्य	61
2—नकारात्मक शब्द	69
3—'और'	80

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

1

हिन्दी के अव्यय वाक्यांश

हिन्दी वाक्यों की रचना में अनिवार्य और ऐच्छिक दोनों प्रकार के घटक सम्मिलित होते हैं। वाक्य की पूर्णता के लिए जो घटक अनिवार्य होते हैं, उनको छोड़ कर अन्य सभी घटक ऐच्छिक घटक कहे गये हैं। कर्त्ता, कर्म, पूरक और क्रिया के रूप में प्रयुक्त होने वाले वाक्यांश वाक्य के अनिवार्य घटक हैं। इन वाक्यांशों के अतिरिक्त जो वाक्यांश वाक्य में प्रयुक्त होते हैं, वे ऐच्छिक होते हैं। इन ऐच्छिक वाक्यांशों को ही प्रस्तुत प्रबन्ध में अव्यय वाक्यांश कहा गया है। वे इस प्रकार हैं :—

1. समयवाचक अव्यय वाक्यांश
2. स्थानवाचक अव्यय वाक्यांश
3. रीतिवाचक अव्यय वाक्यांश
4. करणवाचक अव्यय वाक्यांश
5. साहचर्यवाचक अव्यय वाक्यांश
6. कारणवाचक अव्यय वाक्यांश
7. प्रयोजनवाचक अव्यय वाक्यांश
8. विविध अव्यय वाक्यांश

उपर्युक्त अव्यय वाक्यांशों में स्थान वाचक अव्यय वाक्यांश इस अर्थ में एक विशिष्ट अव्यय वाक्यांश है कि यह कुछ क्रियाओं के वाक्य में प्रयुक्त होने पर अनिवार्य घटक बन जाता है। ऐसी क्रियाओं का यथास्थान वर्णन किया गया है।

अव्यय वाक्यांशों का उपर्युक्त वर्गीकरण अर्थ के आधार पर किया गया है। फुटकर अव्यय वाक्यांशों को "विविध अव्यय वाक्यांश" के अन्तर्गत रखा गया है। इन अव्यय वाक्यांशों को पूर्ववर्ती अव्यय वाक्यांशों में नहीं रखा जा सकता था। अव्यय वाक्यांशों पर रचना और प्रयोग की दृष्टि से संबद्ध अध्यायों में विचार किया गया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

2

समयवाचक अव्यय वाक्यांश

2:0:0—प्रयोग और रचना की दृष्टि से समयवाचक वाक्यांशों को पाँच वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

1. संज्ञा से बनने वाले समयवाचक वाक्यांश,
2. समयवाचक क्रियाविशेषण वाक्यांश,
3. पूर्वापर समयवाचक वाक्यांश,
4. कृदन्त समयवाचक वाक्यांश,
5. उपवाक्यस्तरीय समयवाचक वाक्यांश।

2:1:0—संज्ञा से बनने वाले समयवाचक वाक्यांश—जिन संज्ञा शब्दों से समयवाचक वाक्यांश बनते हैं, वे सभी जातिवाचक, संख्य और अप्राणिवाचक संज्ञाएँ हैं। इन संज्ञाओं को सर्वप्रथम दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

1. समयवाचक संज्ञाएँ,
2. घटनावाचक संज्ञाएँ।

पहले प्रकार की संज्ञाओं में 'वर्ष', 'साल', 'सोमवार' आदि हैं। दूसरे प्रकार की संज्ञाओं में 'दीपावली' 'विवाह', 'उत्सव', 'जन्मदिन' आदि हैं। संक्षेप में इनकी अर्थ संबन्धी विशेषताएँ इस प्रकार हैं :

1—समयवाचक संज्ञाएँ

+जातिवाचक
+अप्राणिवाचक
+समयवाचक
+संख्य
+सार्वभौम

2—घटना वाचक संज्ञाएँ

+जातिवाचक
+अप्राणिवाचक
+घटनार्थक
+संख्य
+एकदेशीय

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

2:1:1—समयवाचक संज्ञाएँ पुनः दो वर्गों में विभाजित होंगी ।

1. क्रमिक समयवाचक संज्ञाएँ,
2. अक्रमिक समयवाचक संज्ञाएँ ।

2:1:2—क्रमिक समयवाचक संज्ञाएँ एक के बाद एक आती हैं, बीच में कोई व्यवधान नहीं होता । जैसे—सप्ताह, वर्ष, मिनट आदि । एक सप्ताह के बाद दूसरा सप्ताह, दूसरे के बाद तीसरा, तीसरे के बाद चौथा । अर्थात् एक सप्ताह के समाप्त होते ही दूसरा सप्ताह आरम्भ हो जाता है । इस वर्ग में आने वाली कुछ संज्ञाएँ इस प्रकार हैं—

वर्ष	महीना	पल
पखवाड़ा	साल	सप्ताह
युग	मौसम	मिनट
घन्टा	पहर	घड़ी
सेकेन्ड	क्षण	दिन (24 घन्टे का)
	सन	तारीख

अक्रमिक समयवाचक संज्ञाएँ एक के बाद एक नहीं आतीं, बीच में व्यवधान होता है; जैसे—सोमवार, जुलाई, सुबह आदि । सोमवार के बाद सोमवार नहीं, मंगलवार आता है, जुलाई के बाद अगस्त और सुबह के बाद दोपहर आता है ।

क्रमिक और अक्रमिक समयवाचक संज्ञाओं में यह भेद है कि क्रमिक समयवाचक संज्ञाएँ बिना भेदक$_{-1}$ या विशेषण के प्रयुक्त नहीं होतीं; जबकि अक्रमिक समय वाचक संज्ञाएँ ऐच्छिक रूप में भेदक या विशेषण को लेती हैं । 'भर' या 'बार' के साथ या द्वित्व रूप में आने पर क्रमिक समय वाचक संज्ञाओं के पूर्व भेदक$_{-1}$ का आना आवश्यक नहीं है, (देखिए 2:1:9 और 2:6:3) ।

भेदक इस प्रकार हैं—भेदक$_{-1}$—इस, उस, किसी, कई, कुछ, एक, दो आदि संख्यायें, पहला, दूसरा आदि संख्यायें, प्रति, अगला, पिछला, गत ।

भेदक$_{-2}$—ठीक, केवल ।

विशेषण—अच्छा, बुरा आदि ।

उदाहरण—क-1—मोहन **अगले वर्ष** आयेगा ।
2 *मोहन **वर्ष** आयेगा,
ख-1—मैं **दूसरे घन्टे** में पहुँचूँगा ।
2—*मैं **घन्टे** में पहुँचूँगा,
ग-1—मैं **अगले सोमवार को** आऊँगा ।
2—मैं **सोमवार को** आऊँगा,
घ-1—मैं **अगली जुलाई में** आऊँगा ।
2—मैं जुलाई में आऊँगा,

'क' और 'ख' वाक्यों में क्रमिक समयवाचक संज्ञाओं का प्रयोग है, और इसीलिए बिना भेदक$_{-1}$ के इनका प्रयोग सही नहीं है । 'ग' और 'घ' वाक्यों में अक्रमिक समयवाचक संज्ञाओं का प्रयोग है, और इसीलिए बिना भेदक के भी इनका प्रयोग सही है ।

भेदक$_{-2}$—दोनों प्रकार की समय वाचक संज्ञाओं के लिए ऐच्छिक है । जैसे—

---

* यह सर्वत्र अप्रयोगार्ह का चिन्ह है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क–1—मोहन **केवल अगले वर्ष** आयेगा ।
2—मोहन **ठीक अगले वर्ष** आयेगा ।
3—मोहन **अगले वर्ष** आयेगा ।
ख–1—मोहन **केवल सोमवार को** आयेगा ।
2—मोहन **ठीक सोमवार को** आयेगा ।
3—मोहन **सोमवार को** आयेगा ।

उपर्युक्त विवरण को संक्षेप में इस प्रकार रखा जा सकता है ।

± भेदक$_{-2}$ + भेदक$-_1$	क्रमिक समय वाचक संज्ञाएँ
± भेदक$_{-2}$ ± भेदक$-_1$	अक्रमिक समय वाचक संज्ञाएँ

(±) ऐच्छिक का चिन्ह है, (+) अनिवार्य का चिन्ह है । भेदक$_2$ और भेदक$_1$ उपर्युक्त क्रम में आयेंगे ।

क्रमिक समयवाचक संज्ञाओं में अर्थ सम्बन्धी छह विशेषताएँ हैं—

क्रमिक समय वाचक संज्ञाएँ	
	+जातिवाचक +अप्राणिवाचक +समय वाचक +क्रमिक वाचक +संख्य +सार्वभौम

प्रत्येक क्रमिक समयवाचक संज्ञा में ये विशेषताएँ वर्तमान हैं ।

2: 1: 3—अक्रमिक समयवाचक संज्ञाएँ दो प्रकार की हैं—

1—अक्रमिक समय वाचक वर्ग–1—इसमें निम्नलिखित संज्ञाएँ हैं ।

सोमवार, मंगलवार आदि दूसरे दिन,
जुलाई, अगस्त आदि दूसरे महीने,
वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा आदि अन्य ऋतुएँ,
एकादशी, पूर्णमासी आदि तिथियाँ, दिनांक 6, 7, आदि ।
सन् 1959, 1960, 1961 आदि ।

इनके अतिरिक्त निम्नलिखित संज्ञाएँ इसके अन्तर्गत हैं— समय, वक्त, देर । ये क्रमिक या अक्रमिक नहीं हैं ।

2—अक्रमिक समयवाचक वर्ग – 2—इसमें निम्नलिखित संज्ञाएँ हैं—

सुबह, शाम, दोपहर, सन्ध्या, रात, दिन (प्रकाश का समय), बारह बजे, दो बजे आदि ।

पहले वर्ग वे में संज्ञाएँ हैं, जो सीधे भेदक–1 के साथ आ सकती हैं । दूसरे वर्ग वे में संज्ञाएँ हैं, जो सीधे भेदक – 1 के साथ न आकर बीच में अन्य शब्द डाल देती हैं । भेदक – 2 दोनों प्रकार की संज्ञाओं से सीधे जुड़ सकता है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उदाहरण—1—वह अगले सोमवार को आयेगा।
इस
दूसरे

'अगले' 'इस' 'दूसरे' आदि भेदक शब्द 'सोमवार' के ठीक पूर्व आ सकते हैं। किन्तु दूसरे वर्ग के शब्दों के साथ इनके आने पर ऐच्छिक रूप से या तो अन्य शब्द इनके स्थान पर आ जाते हैं, या अन्य शब्द दोनों के मध्य आ जाते हैं—जैसे—

इस शाम→**आज** शाम
अगली शाम→अगले **दिन** शाम
दूसरी शाम→दूसरे **दिन** शाम
किसी शाम→किसी **दिन** शाम
प्रति शाम→प्रति **दिन** शाम
उस शाम→**कल** शाम

दाहिनी तरफ के रूप अधिक प्रचलित हैं। 'शाम' के साथ प्रयुक्त भेदक शब्दों को देखने से यह पता चलता है कि 'इस' 'उस' की जगह क्रमशः 'आज' और 'कल' हो जाता है, तथा अन्य भेदक शब्दों और 'शाम' के बीच में 'दिन' को डाल दिया जाता है। 'शाम' की तरह ही दोपहर, सुबह आदि इस वर्ग की अन्य संज्ञाओं के साथ भेदक — 1 का प्रयोग मिलता है।

भेदक—2 दोनों प्रकार की अक्रमिक समयवाचक संज्ञाओं के साथ सीधे प्रयुक्त होता है। जैसे—

ठीक सोमवार को, केवल सोमवार को।
ठीक अगस्त में, केवल अगस्त में।
ठीक शाम को, केवल शाम को।
ठीक दोपहर को, केवल दोहपर को।

अक्रमिक समयवाचक संज्ञाओं में भी अर्थ सम्बन्धी छह विशेषताएँ हैं—

अक्रमिक समयवाचक संज्ञाएँ
+ जातिवाचक
+ अप्राणिवाचक
+ समयवाचक
+ अक्रमिकवाचक
+ संख्य
+ सार्वभौम

2:1:4—घटनावाचक संज्ञाओं की अर्थ सम्बन्धी विशेषताओं का उल्लेख आरम्भ में कर दिया गया है। घटनावाचक संज्ञाएँ समयवाचक संज्ञाओं से अर्थ की दृष्टि से दो बातों में भिन्न हैं, वह है इनका 'घटनार्थक' और 'एक देशीय' होना। इन संज्ञाओं से किसी न किसी क्रिया का बोध होता है, जो घटित होती है। ये क्रियाएँ सामान्य रूप से एकदेशीय होती हैं। देखिए—3:5:3

ऐसी संज्ञाओं का प्रयोग समयवाचक वाक्यांश के रूप में होता है। इस वर्ग के कुछ शब्द इस प्रकार हैं—

विवाह, जन्मदिन, दीपावली, दशमी
होली, दावत, छुट्टी, उत्सव
समारोह, पूजा, परीक्षा, चुनाव आदि।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

घटनार्थक समयवाचक संज्ञाओं के साथ भेदक — 1, भेदक — 2 और विशेषणों का प्रयोग ऐच्छिक रूप में होता है।

± भेदक 2, ± भेदक — 1	घटनार्थक समयवाचक संज्ञाएँ

विशेषणों का प्रयोग सामान्य रूप से ठीक संज्ञा के पूर्व होता है।

परसर्गों के प्रयोग की दृष्टि से घटनार्थक संज्ञाएँ समयवाचक संज्ञाओं से भिन्न हैं।

अन्त में संज्ञा से वनने वाले समय वाचक वाक्यांशों को इस रूप में रखा जा सकता हैं।

समयवाचक वाक्यांश में सम्मिलित होने वाली संज्ञाएँ

- समयवाचक संज्ञाएँ
  - (i) क्रमिक समयवाचक संज्ञाएँ
  - अक्रमिक समयवाचक संज्ञाएँ
    - (ii) वर्ग — 1
    - (iii) वर्ग — 2
- (iv) घटनावाचक संज्ञाएँ

उपर्युक्त दो या दो से अधिक प्रकार की संज्ञाओं के एक साथ प्रयुक्त होने पर उनका सामान्य क्रम इस प्रकार माना जा सकता है—

क्रमिक समयवाचक संज्ञा + अक्रमिक समयवाचक संज्ञा + घटनार्थक समयवाचक संज्ञा।

उदाहरण—(i) अगले वर्ष जुलाई में उसके विवाह में,

(ii) अगले वर्ष उसके जन्मदिन पर

(iii) अगले महीने शाम को आदि

2:1:5—परसर्गों के प्रयोग की दृष्टि से संज्ञा से बनने वाले समयवाचक वाक्यांशों पर विचार करना आवश्यक है। परसर्गों पर विचार करने से पूर्व समयवाचक प्रश्नार्थक शब्दों के आधार पर संज्ञा से निर्मित या भिन्न प्रकार के सभी समयवाचक वाक्यांशों पर विचार कर लेना उपयुक्त होगा। सभी प्रकार के समयवाचक वाक्यांशों को समयवाचक प्रश्नार्थक शब्दों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है—

1. समय में किसी बिन्दु को द्योतित करने वाले वाक्यांश। इस प्रकार के समयवाचक वाक्यांश 'कब' के उत्तर में आते हैं। जैसे, वह कब गया ? कल, सोमवार को, जुलाई में आदि।
2. समय के उस बिन्दु का द्योतक, जब से कोई क्रिया आरम्भ होती है। इस प्रकार के समयवाचक वाक्यांश 'कब से' के उत्तर में आते हैं। जैसे—वह कब से काम करेगा ? कल से, सोमवार से, जुलाई से आदि।
3. समय के उस बिन्दु का द्योतक जब तक किसी क्रिया का समाप्त होना अभीष्ट हो। इस प्रकार के समयवाचक वाक्यांश 'कब तक' के उत्तर में आते हैं। जैसे—वह कब तक घर जायेगा ? कल तक, सोमवार तक, जुलाई तक आदि।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

4. किसी निश्चित समय में क्रिया की आवृत्ति संख्या के द्योतक। इस प्रकार के समयवाचक वाक्यांश 'कितनी बार' के उत्तर में आते हैं। जैसे—वह कितनी बार घर जाता है ? महीने में दो बार, जुलाई में एक बार आदि।

संज्ञा से निर्मित समयवाचक वाक्यांश उपर्युक्त चारों प्रकार के अर्थों में प्रयुक्त हो सकता है। उपर्युक्त अर्थों को द्योतित करने के लिए विभिन्न परसर्गों का प्रयोग किया जाता है। पहले अर्थ में संज्ञा से संयुक्त होने वाले कई परसर्ग हैं, जैसे—को, में, पर, से। दूसरे अर्थ में 'से', तीसरे अर्थ में 'तक', और चौथे अर्थ में 'बार' का प्रयोग संज्ञा के साथ होता है।

संज्ञा से निर्मित सभी समयवाचक वाक्यांश किसी न किसी परसर्ग के साथ आते हैं। जहाँ प्रत्यक्ष रूप में परसर्ग नहीं होता, वहाँ उसका लोप समझना चाहिए। क्योंकि संज्ञा या संज्ञा के पूर्व के भेदक या विशेषण विकृत रूप में प्रयुक्त होते हैं—जैसे—

क—वह **अगले दिन** घर जायेगा।

ख—वह **उस दिन** घर जायेगा।

यहाँ 'दिन' के बाद परसर्ग का लोप मानना आवश्यक है। क्योंकि उसके पूर्व 'अगले' और 'उस' विकृत रूप में प्रयुक्त हुए हैं। संज्ञा समयवाचक वाक्यांशों के साथ आने वाले परसर्गों का वर्णन नीचे दिया जाता है।

2:1:6—'कब' के उत्तर में आने वाले समयवाचक वाक्यांशों के साथ निम्नलिखित परसर्गों का प्रयोग होता है; को, में, से, पर।

क—सबसे पहले अक्रमिक समय वाचक संज्ञाओं पर विचार किया जायेगा क्योंकि परसर्गों के प्रयोग की दृष्टि से इनमें परस्पर काफी भेद है—

'को' का प्रयोग सोमवार, मंगलवार आदि सातों दिनों के साथ होता है—सोमवार को, मंगलवार को, आदि।

'को' का प्रयोग सभी दिनांकों के साथ होता है—पहली तारीख को, छह को, आठ को आदि।

'शाम' के साथ 'को' का प्रयोग होता है—शाम को

इन संज्ञाओं के साथ केवल 'को' का प्रयोग मिलता है। दूसरी ऐसी संज्ञाएँ और हैं, जिनके साथ 'को' का प्रयोग होता है, किन्तु उनके साथ 'को' के अतिरिक्त अन्य परसर्ग भी प्रयुक्त हो सकते हैं।

'में' का प्रयोग हिन्दी और अंग्रेजी महीनों के साथ होता है; जैसे-वैशाख में, जेठ में, असाढ़ में आदि, तथा जुलाई में, अगस्त में आदि, अंग्रेजी महीनों के पूर्व जब दिनांक आते हैं, तो 'महीनों' के बाद 'को' लगता है, 'में' नहीं। जैसे— 7 अगस्त को, 6 जुलाई को आदि।

ऋतुओं और मौसमों के नामों के साथ 'में' का प्रयोग मिलता है : जैसे—वसन्त में, ग्रीष्म में, 'हेमन्त में' आदि, गरमी में, बरसात में, जाड़े में। सनों के साथ 'में' का प्रयोग होता है–सन् 1969 में, सन् 1970 में आदि। दिनांक के साथ आने पर इनके साथ 'को' का प्रयोग होता है। जैसे—दिनांक 6 अगस्त 1959 को, 7 जुलाई, सन् 1970 को।

'दिन' के साथ 'में' का प्रयोग होता है—दिन में।

'देर' के साथ 'में' या 'से' का प्रयोग होता है—देर में, देर से।

'को' या 'पर'—तिथियों के साथ 'को' या 'पर' का प्रयोग होता है। एकादशी को, एकादशी पर, पूर्णमासी को, पूर्णमासी पर।

'से' या 'पर'—'समय' या 'वक्त' के साथ इनमें से किसी एक का प्रयोग हो सकता है; समय से, समय पर; वक्त से, वक्त पर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

'को' या 'में' का प्रयोग 'दोपहर' और 'रात' के साथ होता है—

दोपहर को, दोपहर में।

रात को, रात में।

'प्रातःकाल' और 'सुबह' के साथ कोई परसर्ग नहीं आता। एक बजे, दो बजे के साथ भी परसर्ग नहीं आता।

वह कब आया? उत्तर—प्रातःकाल, सुबह।

ख—क्रमिक समयवाचक संज्ञाएँ—इनको परसर्गों के प्रयोग की दृष्टि से मोटे तौर से दो वर्गों में रख सकते हैं। इन संज्ञाओं के बारे में पहले ही यह कहा जा चुका है कि ये बिना भेदक या विशेषण के नहीं आतीं।

1—वर्ष, महीना, सप्ताह, **दिन**—इनके साथ संख्यावाचक (किन्तु पहला, दूसरा नहीं) भेदकों को छोड़कर अन्य भेदकों के आने पर सामान्य रूप से परसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे—

क—वह	अगले	वर्ष	घर जायेगा।
	इस		
	उस	साल	
	किसी	महीने	
	पहले	सप्ताह	
	दूसरे		

अगले वर्ष, अगले साल, अगले महीने, अगले सप्ताह। इस वर्ष, इस साल, इस महीने, इस सप्ताह। इसी प्रकार आगे।

संख्यावाचक (निश्चय और अनिश्चय दोनों) भेदकों के साथ साल, महीना और सप्ताह के बाद परसर्गों का लोप नहीं होता। 'में' 'पर' में से किसी एक का प्रयोग होता है। उदाहरण—

क—वह कब आया?

उत्तर—वह दो साल पर आया।

वह दो महीने पर आया।

वह दो सप्ताह पर आया।

ख—वह कब गया?

उत्तर—वह दो	साल	में गया।
	महीने	
	सप्ताह	
	दिन	

इसी प्रकार 'कई' 'कुछ' के साथ भी परसर्ग का लोप नहीं होगा—कई वर्षों में; कई वर्ष पर, कुछ वर्षों में; कुछ वर्षों पर

2—अन्य क्रमिक समयवाचक संज्ञाओं में 'युग', 'पखवाड़ा', 'मिनट', 'घन्टा' आदि हैं। इनके साथ सामान्य रूप से परसर्गों का लोप नहीं होता, ये चाहे जिस भेदक के साथ आयें।

उदाहरण—क—मोहन कब घर पहुँचा?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्तर—मोहन	दो अगले दूसरे कुछ आदि	घन्टे में घर पहुँचा।

इसी प्रकार मिनट आदि अन्य क्रमिक समयवाचक संज्ञाओं के साथ 'में' का प्रयोग होगा।

ग—घटनार्थक समयवाचक संज्ञाओं के साथ परसर्गों का लोप कभी नहीं होता। परसर्गों में 'में' और 'पर' का प्रयोग होता है। प्रत्येक घटनार्थक संज्ञा के साथ प्रायः दोनों में से कोई भी आ सकता है—जैसे—दीपावली पर, दीपावली में, छुट्टी में, छुट्टी पर, चाय में, चाय पर। 'विवाह' के साथ केवल 'में' का प्रयोग मिलता है।

उदाहरण—

वह दीपावली में/पर घर आयेगा।

वह चाय में/पर घर आयेगा।

अर्थात् चाय के अवसर पर।

घ—भेदक शब्दों के प्रयोग से उपर्युक्त कुछ परसर्ग कुछ संज्ञा शब्दों के साथ आने पर लुप्त हो जाते हैं। क्रमिक समयवाचक संज्ञाओं का प्रयोग भेदक शब्दों के साथ ही होता है। अतः भेदक शब्दों के साथ परसर्गों का वर्णन इन संज्ञाओं के साथ हो चुका है। घटनार्थक संज्ञाओं के परसर्गों का लोप किसी स्थिति में नहीं होता, चाहे भेदक के साथ आयें, चाहे अकेले। अक्रमिक समयवाचक संज्ञाओं में निम्नलिखित शब्दों के साथ परसर्गों का लोप भेदक शब्दों के कारण मिलता है; समय, वक्त, शाम, दोपहर, रात।

उदाहरण—

क—मोहन आज शाम (को) आयेगा।

मोहन ठीक समय (से/पर) आया।

तुम आज दोपहर (को/में) नहीं जाओगे।

वह आज रात (में/को) आया।

( ) ऐच्छिक घटक का बोधक है। अन्य अक्रमिक समयवाचक संज्ञाओं के साथ भेदकों के आने पर उपर्युक्त परसर्गों का लोप नहीं मिलता।

उपर्युक्त परसर्गों के अतिरिक्त 'कब' के उत्तर में आने वाले संज्ञा समयवाचक वाक्यांशों के साथ 'के दिन' और 'के समय' परसर्गीय शब्दावली का भी प्रयोग मिलता है। इनका प्रयोग सामान्य रूप से अक्रमिक समयवाचक संज्ञाओं और घटनार्थक संज्ञाओं के साथ होता है। जैसे—

सोमवार के दिन, शाम के समय, विवाह के समय, विवाह के दिन आदि।

अक्रमिक समयवाचक संज्ञाओं में भी प्रथम वर्ग के साथ अधिकतर 'के दिन' और द्वितीय वर्ग के साथ 'के समय' आता है। यहाँ यह ध्यान में रखना चाहिए कि 'के दिन' और 'के समय' का प्रयोग सभी के साथ नहीं होगा। कभी 'के अवसर पर' या 'के मोके पर' का प्रयोग मिलता है।

2:1:7—'कब से' के उत्तर में आने वाले संज्ञा समयवाचक वाक्यांशों के साथ 'से' आता है। 'से' का प्रयोग समयवाचक वाक्यांश में सम्मिलित होने वाली सभी संज्ञाओं के साथ हो सकता है। 'से' क्रिया के सातत्य का भी बोध कराता है। 'से' का लोप किसी भी परिस्थिति में नहीं होता। उदाहरण—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

1. मोहन **अगले वर्ष से** पढ़ेगा।
2. मोहन **सोमवार से** काम पर जायेगा।
3. राम **शाम से** रामायण पाठ करेगा।
4. वह सीता के **विवाह से** ही यहाँ रह रहा है।

सातत्य अर्थ में—

क—**दो घन्टे से** पानी बरस रहा है।

ख—उसने **दो दिनों से** नहीं खाया है। आदि

आरम्भ द्योतक 'से' और सातत्य द्योतक 'से' के प्रयोग में अन्तर है।

1. **सोमवार से** पानी बरसेगा।
2. रात से रामायण पाठ होगा।
3. ***दो घण्टे से** पानी बरसेगा।
4. ***दो दिनों से** रामायण पाठ होगा।

उपर्युक्त उदाहरणों में भविष्यकाल की क्रियाओं के साथ सातत्य बोधक 'से' से बने समयवाचक वाक्यांशों का प्रयोग गलत है।

2:1:8—'कब तक' के उत्तर में आने वाले समयवाचक वाक्यांशों के साथ 'तक' का प्रयोग होता है, जैसे—अगले सप्ताह तक, मंगलवार तक, शाम तक, विवाह तक। 'तक' का प्रयोग समयवाचक वाक्यांश में सम्मिलित होने वाली सभी संज्ञाओं के साथ हो सकता है। संख्यावाचक भेदक शब्दों (पहला, दूसरा आदि को छोड़ कर) से युक्त संज्ञाओं के साथ 'तक' का ऐच्छिक रूप से लोप हो जाता है।

क—1. वह **दो साल तक** बनारस रहा।
2. वह **दो साल** बनारस रहा।

ख—1. वह **दो घण्टे तक** बोला।
2. वह **दो घण्टे** बोला।

ग—1. वह **दो सोमवार तक** यहीं था।
2. वह **दो सोमवार** यहीं था।

घ—1. वह **दो विवाहों तक** यहीं था।
2. वह **दो विवाहों में** यहीं था।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, घटनार्थक संज्ञाओं के साथ परसर्गों का लोप नहीं होता। इसीलिए 'विवाह' के साथ 'तक' या 'में' का प्रयोग है।

हिन्दी में 'कब' और 'कब तक' कहीं-कहीं एक दूसरे में मिल गये हैं, अर्थात् 'कब तक' का प्रयोग एक तरफ 'कब' के स्थान पर और दूसरी तरफ 'कब तक' के स्थान पर होता है। जैसे—

क—1. तुम **कब तक** घर जाओगे ?
2. तुम **कब** घर जाओगे ?
} 3. मैं **दो साल में** घर जाऊँगा।

ख—1. तुम **कब तक** घर जाओगे। }
2. मैं **दो साल तक** घर जाऊँगा।
3. मैं **दो साल** घर जाऊँगा।

'क' के तीसरे वाक्य का अभिप्राय है, 'मैं' दो साल में एक बार घर जाऊँगा, और लगभग दो साल के बाद जाने की क्रिया होगी। 'ख' के दूसरे और तीसरे वाक्यों का अभिप्राय है, 'मैं' दो साल तक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बार-बार घर जाता रहूँगा। अर्थात् दो साल तक जाने की क्रिया होगी। 'ख' के उत्तर वाक्यों को प्राप्त करने के लिए 'कब तक' प्रश्नार्थक शब्द का ही प्रयोग होगा। जबकि 'क' के उत्तर वाक्य को प्राप्त करने के लिए 'कब तक' या 'कब' किसी एक का प्रयोग हो सकता है। एक और उदाहरण देखिये—

क—1. तुम **कब** यह काम कर लोगे ?
2. तुम **कब तक** यह काम कर लोगे ?
उत्तर—3. मैं **एक साल में** यह काम कर लूँगा।
ख—1. तुम **कब तक** यह काम कर लोगे ?
उत्तर—2. मैं **एक साल तक** यह काम कर लूँगा।
3. मैं **एक साल** यह काम कर लूँगा।

यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि 'एक साल में' से 'में' लुप्त नहीं होगा, जबकि 'एक साल तक' से 'तक' लुप्त हो सकता है।

2:1:9 'कितनी बार' के उत्तर में आने वाले समय वाचक वाक्यांशों के साथ 'बार' का प्रयोग होता है। 'बार' के पूर्व संख्या वाचक शब्द आते हैं। जब संज्ञा के साथ 'बार' का प्रयोग होता है तो संज्ञा के साथ उपयुक्त परसर्ग लगा रहता है।

उदाहरण--

1. वह **दो बार** घर जाता है।
2. वह **साल में दो बार** घर जाता है।
3. वह **दो घंटे में एक बार** बोलता है।
4. वह **सोमवार को दो बार** चाय पीता है।
5. उसने **विवाह में दो बार** दावत दी।
6. उसने **शाम को एक बार** बुलाया।

दूसरे उदाहरण से यह पता चलता है कि 'बार' के साथ आने पर क्रमिक समयवाचक संज्ञाओं के साथ भेदक शब्दों का प्रयोग अनिवार्य नहीं है। 'साल' क्रमिक समयवाचक संज्ञा है और इसके पूर्व कोई भेदक नहीं है।

उपर्युक्त चारों प्रकार के समयवाचक प्रश्नार्थक शब्दों के उत्तर में आने वाले संज्ञा समयवाचक वाक्यांशों के साथ लगने वाले परसर्गों का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है।

1.	कब	1.	संज्ञा—को, में, पर, से
2.	कब से	2.	संज्ञा—से
3.	कब तक	3.	संज्ञा—तक
4.	कितनी बार	4.	(संज्ञा + परसर्ग) संख्यावाचक शब्द + बार

2:2:0 समयवाचक क्रियाविशेषण वाक्यांश—समयवाचक क्रियाविशेषण शब्द कुल 20 हैं। इनको चार वर्गों में रखा जा सकता है—

वर्ग—1. अब
वर्ग—2. कल, आज, परसों, नरसों, आजकल
वर्ग—3. सदैव, हमेशा
वर्ग—4. क—रोज, बहुधा, अक्सर, प्रायः, कभी, कभी-कभी,
ख—तत्काल, तुरंत, फौरन, जल्दी, शीघ्र, बारबार।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भेदक—1 और विशेषण किसी भी समयवाचक क्रियाविशेषण के साथ नहीं आते। भेदक—2 के शब्द केवल वर्ग—1 और वर्ग—2 के समयवाचक क्रियाविशेषणों के साथ आते हैं। जैसे, केवल आज, ठीक आज, केवल अब, ठीक अब आदि। वर्ग—4 के साथ किसी परसर्ग का प्रयोग नहीं होता। वर्ग—3 के साथ 'से' का प्रयोग होता है, हमेशा से, सदैव से। वर्ग—2 के साथ 'से' और 'तक' का प्रयोग होता है ; कल से, कल तक, आज से, आज तक आदि। वर्ग—1 के साथ भी 'से' और 'तक' का प्रयोग होता है ; अब से, अब तक। 'बार' का प्रयोग सभी समयवाचक क्रियाविशेषणों के साथ मिलता है। 'बार' 'से' 'तक' की तरह कोई परसर्ग नहीं है। यह संज्ञा शब्द है, जो अपने पूर्व संख्यावाचक शब्द लेकर आता है, या द्वित्व रूप में प्रयुक्त होता है, बार-बार। यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि 'कब' के उत्तर रूप में जब समय वाचक क्रियाविशेषणों का प्रयोग होता है तब उनके साथ कोई परसर्ग नहीं होता। कभी-कभी ऐसी स्थिति में परसर्गीय शब्दावली (के दिन, के बाद, से पहले) का प्रयोग अवश्य हो जाता है ; आज के दिन, कल के दिन आदि। और यह परसर्गीय शब्दावली भी केवल वर्ग—2 के साथ आता है। वर्ग—1 के साथ केवल 'से पहले' का प्रयोग हो सकता है। संक्षेप में—

		समयवा. क्रियावि.		
—विशेषण	± भेदक—2	वर्ग—1	± (से तक से पहले)	± (+संख्या वा. +बार)
—भेदक—1		वर्ग—2	± (से तक परसर्गीय श.)	
		वर्ग—3	± से	
		वर्ग—4. क 3. ख	—परसर्ग	

'—' अनिवार्य निषेध का चिन्ह, + अनिवार्यता का चिन्ह।

± ऐच्छिक का चिन्ह।

2: 2: 1—जब दो या दो से अधिक समयवाचक क्रियाविशेषणों का प्रयोग एक साथ होता है, तो उनका सामान्य क्रम इस प्रकार होता है।

वर्ग—1, वर्ग—2, वर्ग—3, वर्ग—4 (उपवर्ग क, उपवर्ग ख)

	वर्ग	उदाहरण
1.	1+2	अब कल
2.	1+3	अब सदैव
3.	1+4	अब तुरन्त जाओ।
4.	2+3	कल से सदैव
5.	2+4	आज तुरन्त
6.	3+4	सदैव तुरन्त
7.	1+2+3	अब कल से सदैव
8.	1+2+4	अब कल शीघ्र

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

9. 2+ 3+ 4 कल से सदैव तुरन्त

10. 1 + 2+ 3+ 4 अब कल से हमेशा जल्दी, आदि।

ऊपर जो क्रम दिये गये हैं, उनके बारे में यह ध्यान में रखना चाहिए कि वर्ग–3 के बाद वर्ग– 4 ख के ही शब्द आ सकते हैं। अन्य वर्गों के बाद वर्ग–4 के दोनों उपवर्ग आ सकते हैं। यदि वर्ग–4 के दोनों उपवर्गों के शब्द एक साथ प्रयुक्त होंगे तो क–उपवर्ग का शब्द पहले होगा और ख–उपवर्ग का शब्द बाद में।

जैसे—1—रोज जल्दी आओ।

2—वह प्रायः शीघ्र आता है।

2:3:0—**पूर्वापर समयवाचक वाक्यांश**—इसके अन्तर्गत दो शब्द हैं—

1—पहले और 2—बाद

इन दोनों का स्वतन्त्र रूप में भी प्रयोग होता है, और समयवाचक शब्दों या अन्य शब्दों के साथ भी प्रयोग होता है।

उदाहरण—

1. मोहन **पहले** आया।
2. मोहन **बाद में** आया।
3. मोहन **दो दिन पहले** आया।
4. मोहन **दो दिन बाद** आया।

भेदक–2 के शब्द इनके पूर्व आ सकते हैं—ठीक पहले, ठीक बाद, केवल पहले, केवल बाद में।

भेदक–1 के शब्दों में से 'कुछ' और अन्य परिमाणवाचक शब्द(थोड़ा, बहुत, अधिक) इनके पूर्व आ सकते हैं—कुछ पहले, कुछ बाद में आदि।

2:3:1—'पहले' के बाद 'से' और 'तक' परसर्ग आ सकते हैं।'कब' के उत्तर रूप में जब इसका प्रयोग होता है, तब इसके साथ कोई परसर्ग प्रयुक्त नहीं होता। जैसे—

क 1. वह कब आया?

2. वह **पहले आया।**

'पहले' समयवाचक शब्दों या अन्य शब्दों से संयुक्त होकर भी आता है, सोमवार से पहले, शाम से पहले, आदि। क्रमिक समयवाचक संज्ञा के साथ आने पर 'पहले' से पूर्व 'से' का लोप हो जाता है, अन्यत्र 'से' का लोप नहीं होता।

(i) दो घन्टे पहले, एक महीने पहले
एक सप्ताह पहले, चार पहर पहले आदि।

(ii) जुलाई से पहले शाम से पहले
तारीख ६ से पहले विवाह से पहले
आज से पहले कल से पहले
मोहन से पहले।

'पहले' का प्रयोग उपवाक्य स्तर पर भी होता है।

उदाहरण—

1. तुम कब आओगे?

उत्तर—2. **पहले** मैं घर आऊँगा, **फिर** तुम्हारे यहाँ आऊँगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रथम उपवाक्य के साथ 'पहले' का प्रयोग हुआ है। दूसरे उपवाक्य में 'फिर' के स्थान में अन्य शब्द आ सकते हैं।

पहले............तब
फिर
इसके बाद
तदुपरान्त
अन्त में

उदाहरण--

पहले हम अपने लिए पतंग बनायेंगे फिर तुम्हारे लिए।
तब
तदुपरान्त
आदि

2:3:2--'कब' के उत्तर रूप में जब प्रयोग होता है, तब 'बाद' के बाद 'में' का प्रयोग होता है।

1. मैं **बाद में** आऊँगा।
2. मैं **कुछ बाद में** आऊँगा।

किन्तु जब किसी समयवाचक शब्द या अन्य शब्द के साथ इसका प्रयोग होता है, तब 'में' का लोप हो जाता है:—

1. मैं **सोमवार के बाद** आऊँगा।

क्रमिक समयवाचक संज्ञाओं के साथ 'बाद' का प्रयोग होने पर सामान्य रूप से उसके पूर्व का 'के' लुप्त हो जाता है। जैसे—

क 1. मैं **दो घण्टे बाद** आया।
2. मैं **दो वर्ष बाद** आऊँगा।

अक्रमिक समयवाचक और घटनार्थक संज्ञाओं के बाद सामान्य रूप से 'के' का लोप नहीं होता--

सोमवार के बाद, जुलाई के बाद, विवाह के बाद, छुट्टी के बाद।

बिना 'के' के भी इनके रूप मिलते हैं--

सोमवार बाद, जुलाई बाद, छुट्टी बाद, विवाह बाद,

अर्थात् उपर्युक्त प्रकार की संज्ञाओं के साथ 'के' का लोप ऐच्छिक है।

समयवाचक क्रियाविशेषण शब्दों तथा अन्य संज्ञा शब्दों और सर्वनामों के बाद 'के' का लोप नहीं होता। जैसे--

आज के बाद	* आज बाद
कल के बाद	* कल बाद
मोहन के बाद	* मोहन बाद
उसके बाद	* वह बाद।

'कब से' और 'कब तक' के उत्तर रूप में प्रयुक्त होने पर 'बाद' के साथ क्रमशः 'से' और 'तक' परसर्गों का प्रयोग होता है। इन परसर्गों का लोप नहीं होता।

2:3:3--'पहले' और 'बाद' के स्थान पर कभी-कभी क्रमशः 'पूर्व' और 'पश्चात्' शब्दों का प्रयोग होता है। किन्तु 'पूर्व' और 'पश्चात्' का प्रयोग सीमित है। इनका स्वतन्त्र रूप में प्रयोग नहीं होता--

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

1. * मैं **पूर्व** आया ।

2. * मैं **पश्चात्** आया ।

इनके पूर्व 'कुछ' 'थोड़ा' 'बहुत' या भेदक–2 के शब्द नहीं आते ।

इनका प्रयोग संज्ञा शब्दों तथा समयवाचक क्रियाविशेषण शब्दों के साथ उसी प्रकार होता है जिस प्रकार 'पहले' और 'बाद' का । जैसे––

(i) दो घण्टे पूर्व, एक वर्ष पूर्व
जुलाई से पूर्व, शाम से पूर्व
आज से पूर्व, मोहन से पूर्व ।

(ii) दो घण्टे पश्चात, एक सप्ताह पश्चात
सोमवार के पश्चात, छुट्टी के पश्चात
मोहन के पश्चात आदि ।

'सोमवार बाद' 'छुट्टी बाद' की तरह 'सोमवार पश्चात' 'छुट्टी पश्चात' प्रयोग नहीं चलते ।

'से' और 'तक' का प्रयोग इनके साथ हो सकता है ।

2: 3: 4—'पूर्व' और 'पश्चात्' की तरह 'आगे' और पीछे' शब्दों का प्रयोग भी क्रमशः 'पहले' और 'बाद' के स्थान पर होता है । इनका प्रयोग स्वतन्त्र रूप में मिलता है ।

1—मैं **आगे** आया ।

2—मैं **पीछे** आया ।

इनके पूर्व 'कुछ', 'बहुत', 'थोड़ा' शब्द आ सकते हैं—

कुछ आगे, कुछ पीछे, थोड़ा आगे, थोड़ा पीछे, बहुत आगे, बहुत पीछे ।

अन्य शब्दों के साथ सामान्य रूप से 'पहले' का प्रयोग होता है, आगे का नहीं ।

जैसे—सोमवार से पहले ।

* सोमवार के आगे ।

'पीछे' का प्रयोग––

दो दिन बाद	—	दो दिन पीछे
एक सप्ताह बाद	—	एक सप्ताह पीछे
सोमवार के बाद	—	* सोमवार के पीछे
छुट्टी के बाद	—	* छुट्टी के पीछे
उसके बाद	—	* उसके पीछे ।

स्पष्ट है कि 'आगे' और 'पीछे' का प्रयोग अत्यन्त सीमित है । 'से' और 'तक' का प्रयोग यथास्थान इनके साथ हो सकता है ।

'बाद' का अर्थ देने के लिए क्रमिक समयवाचक संज्ञाओं के साथ कभी-कभी 'में' या 'पर' का प्रयोग मिलता है जैसे —

1. वह **एक साल बाद** आयेगा ।
2. वह **एक साल पर** आयेगा ।
3. वह **एक साल में** आयेगा ।

2: 4: 0––**कृदन्त समयवाचक वाक्यांश**––धातुओं से भी समयवाचक अव्यय वाक्यांश बनते हैं ।

1. धातु + कर = खाकर, पढ़कर, नहाकर
2. धातु + ने + परसर्ग = लौटने तक, लौटने पर आदि ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परसर्ग — तक, पर, के बाद, के/से पहले ।

3. धातु+ते+ { ही / समय } =जाते ही, जाते समय ।

सभी प्रकार की धातुओं में—'कर' जोड़ने से समयवाचक अव्यय वाक्यांश नहीं बनते जैसे—

1. वह **हँसकर** बोला ।
2. वह **चौंककर** बोला ।

यहाँ 'हँसकर' 'चौंककर' समयवाचक नहीं हैं, बल्कि रीतिवाचक हैं । रीतिवाचक अव्यय वाक्यांशों के साथ विस्तार से इस प्रकार की धातुओं पर विचार किया गया है ।

दूसरे और तीसरे प्रकार के कृदन्त समयवाचक अव्ययों के पूर्व 'मेरे', 'तुम्हारे', 'मोहन के' आदि आ सकते हैं । जैसे—

मेरे लौटने के बाद — **उसके** लौटते ही

मोहन के लौटने से पहले, — **मोहन** के आते समय आदि

2:5:0—**उपवाक्य स्तरीय समयवाचक वाक्यांश**—समयवाचक वाक्यांश की जगह कभी-कभी उपवाक्य का भी प्रयोग होता है । इस प्रकार के उपवाक्यों को समयवाचक उपवाक्य कहते हैं । समयवाचक उपवाक्य आश्रित उपवाक्य होता है, पूरा वाक्य मिश्रित वाक्य होता है । इस प्रकार के वाक्यों की रचना 'जब-तब' की सहायता से होती है । समयवाचक उपवाक्य के साथ 'जब' और दूसरे उपवाक्य के साथ 'तब' का प्रयोग होता है । जैसे—

जब वह पढ़ रहा था, **तब** उसके साथ कोई नहीं था ।

दूसरे उपवाक्य के साथ 'तब' के अतिरिक्त अन्य शब्द भी आ सकते हैं-तो, तब से, तब तक, उस वक्त ।

जब.............. तो
तब
तब से
तब तक
उस वक्त

1. **जब** सावित्री ने यह देखा, **तो** वह धर्मराज के साथ चल पड़ी ।
2. **जब** तुम पढ़ रहे थे, **तब से** मैं तुम्हें ऐसे ही देख रहा हूँ ।
3. **जब** तुम पढ़ते थे, **तब तक** तुम बहुत सीधे थे ।
4. **जब** तुम पढ़ते थे, **उस वक्त** बहुत कम विद्यालय थे ।

प्रत्येक वाक्य के दोनों उपवाक्यों का 'काल' समान है, एक वाक्य को छोड़ कर । दूसरे वाक्य का पहला उपवाक्य 'भूतकाल' में है, और दूसरा उपवाक्य 'वर्तमान काल' में है । किन्तु सामान्य रूप से समय वाचक उपवाक्य और दूसरे उपवाक्य में समान 'काल' की क्रियाओं का ही प्रयोग होता है । कुछ और उदाहरण—

1. **जब** मोहन घर **जायेगा**, **तब** मैं भी घर **जाऊँगा** ।
2. **जब** तुम **पढ़ते हो**, **तब** मोहन भी **पढ़ता है** ।
3. **जब** तुम **पढ़ रहे थे**, **तब** मोहन **सो रहा था** ।

2:5:1:—'जब' के साथ 'से' या 'तक' परसर्ग का प्रयोग हो सकता है । सामान्यरूप से 'जब' के साथ जिस परसर्ग का प्रयोग होता है, उसी का प्रयोग 'तब' के साथ भी होता है जैसे—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जबसे—तब से, जब तक—तब तक ।

2: 5: 2—'जब—तब' में से 'जब' का ऐच्छिक रूप से लोप सम्भव है—

1. (जब) मैं पढ़ रहा था, **तब** तुम आये ।

'जब से—तब से', 'जब तक—तब तक' में से ऐच्छिक रूप से 'तब से' और 'तब तक' का लोप हो सकता है ।

1. **जब से** तुम पढ़ रहे हो, (तब से) मैं इसी शहर में हूँ ।
2. जब **तक** तुम यहाँ रहोगे, (**तब तक**) काम नहीं होगा ।

2: 5: 3—'जिस —उस' की सहायता से भी समयवाचक उपवाक्य मुख्य उपवाक्य से जुड़ते हैं । 'जिस' के बाद जो शब्द आता है, वही 'उस' के बाद आता है, जिस दिन—उस दिन, जिस महीने—उस महीने आदि । किन्तु 'जिस—उस' के बाद सभी प्रकार के शब्द नहीं आते । केवल वे संज्ञाएँ आती हैं, जिनसे समयवाचक वाक्यांश बनते हैं । उनमें भी घटनार्थक संज्ञाओं का प्रयोग सामान्य रूप से 'जिस—उस' के बाद नहीं होता, क्योंकि ये संज्ञाएँ एकदेशीय होती हैं । जैसे--

1. **जिस महीने में** तुम जा रहे हो, **उस महीने में** मैं नहीं जा सकूँगा ।
2. **जिस विवाह में** तुम जा रहे हो, **उस विवाह में** मैं नहीं जा सकूँगा ।
3. **जिस समय** तुम मेरे घर आये थे, **उस समय** मैं न्यूयार्क था ।
4. **जिस समारोह में** तुम मेरे घर आये थे, उस **समारोह में** मैं न्यूयार्क था ।
5. **जिस अगस्त में** तुम बनारस थे, **उस अगस्त में** मैं आगरा था ।
6. **जिस विवाह में** तुम बनारस थे, **उस विवाह में** मैं आगरा था ।

दूसरे वाक्य में 'जिस विवाह में—उस विवाह में' समयवाचक घटक नहीं हैं। चौथे और छठे वाक्य सामान्य रूप से संभव नहीं हैं, क्योंकि 'समारोह' और 'विवाह' घटनार्थक हैं, और एकदेशीय हैं।

घटनार्थक संज्ञाओं में कुछ, जो नितान्त एकदेशीय नहीं हैं, 'जिस—उस' के साथ प्रयुक्त होकर समयवाचक बन सकती हैं, जैसे—दीपावली, होली आदि ।

1. **जिस दीपावली पर** तुम बनारस थे, **उस दीपावली पर** मैं आगरा था ।

2: 6: 0 **समयवाचक वाक्यांशों का अनुक्रम—**

पहला अनुक्रम—उपवाक्यस्तरीय समयवाचक वाक्यांशों को छोड़कर शेष चार प्रकार के समयवाचक वाक्यांशों का सामान्य क्रम इस प्रकार है—

1 (समयवाचक क्रियाविशेषण वाक्यांश)   2 (संज्ञा से निर्मित समयवाचक वाक्यांश)

3 (कृदन्त समयवाचक वाक्यांश)   4 (पूर्वापर समयवाचक वाक्यांश)

उपर्युक्त चारों प्रकार के समयवाचक वाक्यांशों में से कोई एक, दो, तीन या चारों—एक साथ आ सकते हैं। उदाहरण—

1. अब/सोमवार को/खा लेने के बाद/पहले/तुम दवा पीना । (1 2 3 4)
2. कल/एकादशी को/वहाँ से लौटने पर/पहले/मैं तुमको प्रसाद दूँगा । (1 2 2 4)
3. कल/वहाँ से लौटने पर/पहले/मैं तुमको प्रसाद दूँगा । (1 3 4)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

1 4
4. कल/पहले/मैं घर जाऊँगा ।

2 3 4
5. अगले वर्ष/शहर से लौटकर/दो घण्टे बाद/मैं तुमको कहानी सुनाऊँगा ।

3 4
6. खाना खा कर/पहले/घर चलो ।

4
7. **पहले**/यहाँ आओ ।

2 4
8. अगले वर्ष/दो घण्टे बाद/आऊँगा ।

1 3
9. परसों/खाना खाकर/आना ।

2 4
10. शाम को/कुछ बाद में/आना ।

इसी प्रकार इनके अन्य क्रम होंगे ।

2:6:1 दूसरा अनुक्रम—दूसरे प्रकार का अनुक्रम अनुमानित समय का बोध कराने के लिए बनाया जाता है—

जैसे—

1. मोहन **सोमवार-मंगलवार को** आयेगा ।
2. वह **जुलाई-अगस्त तक** आयेगा ।

क्रमिक समयवाचक संज्ञाओं के साथ संख्यावाचक शब्द आते हैं—

3. वह **साल-दो साल में** आयेगा ।
4. यह काम **घण्टे दो घण्टे में** होगा ।

2:6:2 तीसरा अनुक्रम—तीसरे प्रकार का अनुक्रम युग्म के रूप में आता है, इनके दो प्रकार हैं ।

1. समान शब्दों का युग्म (कभी-कभी, अभी-अभी सुबह-सुबह आदि)
2. भिन्न शब्दों का युग्म (रात-दिन सुबह-शाम आदि)

समान शब्दों के युग्मों में महीने-महीने, घण्टे-घण्टे, मिनट-मिनट, सोमवार-सोमवार, एकादशी-एकादशी आदि भी आयेंगे । ये समय के अन्तराल का बोध कराते हैं । इस रूप में प्रयुक्त होने पर क्रमिक समयवाचक संज्ञाओं के पहले भेदक आदि का आना आवश्यक नहीं है ।

2:6:3 चौथा अनुक्रम—इस प्रकार के अनुक्रम को समानाधिकरण रचना कह सकते हैं—जैसे

1. मैं **आज सोमवार को** घर जाऊँगा ।
2. मैं **कल तारीख 6 को** नहीं आऊँगा ।
3. **अगले वर्ष सन् 1971 में** मैं अमेरिका जाऊँगा ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३

स्थानवाचक अव्यय वाक्यांश

3:1:0 वाक्य में स्थानवाचक वाक्यांशों का प्रयोग ऐच्छिक और अनिवार्य दोनों प्रकार के घटकों के रूप में होता है। यह क्रियाओं के ऊपर निर्भर करता है कि कहाँ स्थानवाचक वाक्यांश ऐच्छिक है, और कहाँ अनिवार्य।

उदाहरण— 1. राम **घर में** पढ़ रहा है।

2. राम **घर** जा रहा है।

पहले वाक्य में ऐच्छिक और दूसरे वाक्य में अनिवार्य घटक के रूप में स्थानवाचक वाक्यांश प्रयुक्त हैं।

3:1:1 ऐच्छिक रूप में स्थानवाचक वाक्यांश को लेने वाली क्रियाएँ भी दो वर्गों में विभाजित हो सकती हैं; स्थानवाचक वाक्यांश को लेने की विशेष योग्यता रखने वाली क्रियाएँ और साधारण क्रियाएँ।

उदाहरण—

1. उसने पुस्तक **मोहन के सामने फेंकी।**
2. उसने पुस्तक **मोहन के सामने पढ़ी।**

पहले वाक्य में 'मोहन के सामने' वाक्यांश से दो अर्थ निकाले जा सकते हैं; पहला अर्थ, मोहन के सामने खड़े होकर उसने पुस्तक अन्यत्र फेंक दी ; दूसरा अर्थ, अन्यत्र खड़ा होकर उसने पुस्तक मोहन के सामने फेंक दी। दूसरे अर्थ में 'फेंकना' क्रिया के परिणामस्वरूप पुस्तक मोहन के सामने पहुँची, जबकि पहले अर्थ में यह भाव नहीं है। दूसरे वाक्य में 'मोहन के सामने' वाक्यांश का दुहरा अर्थ नहीं होगा। इस उदाहरण से स्पष्ट है कि 'फेंकना' और 'पढ़ना' क्रियाएँ भिन्न प्रायोगिक क्षमताएँ रखती हैं। 'फेंकना' क्रिया में स्थानवाचक वाक्यांश को लेने की विशेष योग्यता है। इस प्रकार की क्रियाओं का विस्तृत वर्णन आगे किया जायेगा। यहाँ इतना ही कहना पर्याप्त है कि वाक्य में स्थानवाचक वाक्यांशों के प्रयोग को समझने के लिए क्रियाओं का वर्णन आवश्यक है।

3:2:0 रचना की दृष्टि से स्थानवाचक वाक्यांश तीन भागों में विभाजित हो सकते हैं :

1. अव्यय शब्दों से बनने वाले।
2. संज्ञा शब्दों से बनने वाले।
3. आवृत्ति एवं 'से-तक' और 'से-पर' से बनने वाले।

इनके अतिरिक्त दो सर्वस्थानवाचक वाक्यांश हैं—यहाँ, वहाँ। स्थानवाचक प्रश्नार्थक शब्दों में 'कहाँ' और 'किधर' का प्रयोग होता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

3:2:1 अव्यय शब्दों से बनने वाले स्थानवाचक वाक्यांश—नीचे स्थानवाचक अव्यय शब्दों की सूची है—

पीछे	अन्दर	तरफ	बगल
आगे	इधर	पास	यहाँ
सामने	उधर	समीप	
ऊपर	इधर-उधर	आसपास	
नीचे	बाहर	दायें	
तले	किनारे	बायें	
भीतर	ओर	अन्यत्र	

ये स्वतन्त्र रूप में भी आते हैं और संज्ञाओं के साथ संयुक्त रूप में भी आते हैं, 'तले' को छोड़कर। 'यहाँ' केवल प्राणिवाचक मानव वर्ग की संज्ञाओं के साथ संयुक्त होता है—

पेड़ के यहाँ*	मेरे यहाँ
गाय के यहाँ*	मोहन के यहाँ

अन्य अव्यय शब्दों के उदाहरण—1. वह **अन्दर** गया।

2. वह **घर के अन्दर** गया।

3:2:2 स्थानवाचक अव्यय शब्द संज्ञा से संयुक्त होने के लिए अपने पहले 'से' या 'के' लेते हैं। जैसे–

घर **से** पास   घर **से** पीछे

घर **के** पास   घर **के** पीछे

किन्तु 'से' और 'के' सर्वत्र एक स्थान पर नहीं आते। 'के' का प्रयोग सभी स्थानवाचक अव्यय शब्दों के पूर्व हो सकता है, 'अन्यत्र' को छोड़ कर। किन्तु 'से' का प्रयोग सबके पूर्व नहीं हो सकता। निम्नलिखित अव्यय शब्दों के साथ 'से' का प्रयोग नहीं होगा––

सामने	अन्दर
तले	ओर
भीतर	तरफ

जैसे—

घर **के** सामने	घर **के** अन्दर	घर **के** तले
*घर **से** सामने	*घर **से** अन्दर	*घर **से** तले
घर **के** भीतर	घर **की** तरफ	घर **की** ओर
*घर **से** भीतर	*घर **से** तरफ	*घर **से** ओर

'अन्यत्र' के साथ केवल 'से' का प्रयोग होता है। जैसे—घर **से** अन्यत्र (वह घर नहीं गया है, घर से अन्यत्र गया है)। *घर **के** अन्यत्र

3:2:3—वितरण भेद के साथ-साथ 'से' और 'के' में अर्थभेद भी है। 'के' शुद्ध रूप में संबंध-वाचक है। किन्तु 'से' का अर्थ बहुत स्पष्ट नहीं है। 'से' कई जगहों पर 'के' के स्थान पर प्रयुक्त होता देखा जाता है। जैसे—

घर **से** बाहर	घर **से** पास
घर **के** बाहर	घर **के** पास
घर **से** पीछे	घर **से** आगे
घर **के** पीछे	घर **के** आगे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इन उदाहरणों को देखने से लगता है कि 'से' 'के' की तरह संबंधवाचक ही है। किन्तु वास्तव में 'से' 'के' पूर्ण रूप से समानार्थी नहीं हैं। 'से' तुलनार्थक भी है।

1. वह **मुझसे पीछे** है। }
2. वह **मेरे पीछे** है। }
1. वह **मुझसे आगे** है। }
2. वह **मेरे आगे** है। }

दोनों वाक्य-युग्मों के पहले वाक्यों के स्थानवाचक वाक्यांश तुलनार्थक हैं।

'से' जहाँ संबंधवाचक के रूप में दिखाई पड़ता है, वहाँ उसमें दूरत्व या अपादानत्व का अर्थ भी निहित होता है। इसीलिए सर्वत्र 'के' के स्थान पर उसका प्रयोग नहीं होता। जैसे—

1. वह **घर के अन्दर** है।
2. *वह **घर से अन्दर** है।
3. वह **घर के बाहर** है।
4. वह **घर से बाहर** है।

अन्तिम दोनों वाक्य शुद्ध हैं, क्योंकि 'बाहर' घर से दूरत्व का बोधक है। किन्तु दूसरा वाक्य शुद्ध नहीं है, क्योंकि 'अन्दर' घर से दूरत्व का बोधक नहीं है। इसीलिए 'घर से पास' 'घर से समीप' 'घर से आसपास' सत्तार्थक 'है' के साथ तो प्रयुक्त होते हैं, किंतु गत्यर्थक क्रियाओं के साथ नहीं। जैसे—

1. स्कूल **घर से पास** है।
2. स्कूल **घर के पास** है।
3. * राम **घर से पास** गया।
4. राम **घर के पास** गया।

'से' में निहित दूरत्व का भाव नीचे के वाक्यों में और स्पष्ट है।

1. वह **घर से इधर-उधर** घूम रहा है।
2. वह **घर के इधर-उधर** घूम रहा है।
3. वह **मुझसे इधर-उधर** रहता है।
4. वह **मेरे इधर-उधर** रहता है।

पहले और तीसरे वाक्यों में दूरत्व का भाव है, और दूसरे तथा चौथे में निकटता का भाव है।

3:2:4—स्थानवाचक अव्यय शब्दों का प्रयोग सदा परसर्गों के साथ होता है। इसलिए ये विकारी रूप में प्रयुक्त होते हैं। परसर्ग कहीं-कहीं च्युत हो जाते हैं। परसर्गों के प्रयोग के आधार पर स्थानवाचक अव्यय शब्दों को चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

पहला वर्ग—

आगे	भीतर	दायें	से
पीछे	अंदर	बायें	
सामने	इधर	ओर	तक
ऊपर	उधर	तरफ	
नीचे	इधर-उधर	किनारे	को
तले	बाहर		

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दूसरा वर्ग—

बगल	पास	से, तक में
समीप	आसपास	को

तीसरा वर्ग—

अन्यत्र	से को

चौथा वर्ग—

यहाँ	से, तक, पर, को

पहले वर्ग के साथ 'को' सामान्य रूप से और शेष वर्गों के साथ आने पर अनिवार्य रूप से च्युत हो जाता है। 'को' को छोड़कर और कोई परसर्ग च्युत नहीं होता। स्वतन्त्र रूप में व्यवहृत होने पर 'ओर' तथा 'तरफ' अपने पूर्व अनिवार्य रूप से 'एक' लेते हैं, और 'किनारे' ऐच्छिक रूप से अपने पूर्व 'एक' लेता है।

3:2:5—संज्ञाएँ स्थानवाचक अव्यय शब्दों से मिलकर अव्यय वाक्यांशों का ही निर्माण करती है, क्योंकि ऐसे वाक्यांश अव्यय वाक्यांशों की तरह ही प्रयुक्त होते हैं। जैसे—

1. वह **मेरे घर** आता है।
2. वह **मेरे घर पर** आता है।
3. वह **मेरे घर के पास** आता है।
4. *वह **मेरे घर के पास पर** आता है।

प्रथम दो वाक्यों में स्थानवाचक संज्ञावाक्यांशों का प्रयोग है, और अन्तिम दो वाक्यों में स्थानवाचक अव्यय वाक्यांशों का। दूसरे वाक्य में 'पर' का प्रयोग हुआ है, किन्तु चौथे वाक्य में 'पर' का प्रयोग गलत है। चौथे वाक्य में 'पास' के बाद वे ही परसर्ग आ सकते हैं, जो दूसरे वर्ग के अव्यय शब्दों के साथ आते हैं।

3:3:0—संज्ञा शब्दों से बनने वाले स्थानवाचक वाक्यांश—संज्ञाओं से बनने वाले स्थानवाचक वाक्यांश परसर्गों या स्थानवाचक अव्यय शब्दों के साथ आते हैं। जिस प्रकार संज्ञा वाक्यांश का विस्तार होता है, उसी प्रकार संज्ञा से बनने वाले स्थानवाचक वाक्यांशों का भी।

1. वह **घर को** गया।
2. वह **घर के सामने** गया।

दूसरे वाक्य में प्रयुक्त स्थान वाचक वाक्यांश को पहले ही अव्यय वाक्यांश के रूप में स्वीकार किया जा चुका है। अतः अव्यय शब्दों से बनने वाले वाक्यांशों पर यहाँ विचार नहीं करना है।

3:3:1—स्थानवाचक संज्ञा वाक्यांश स्थानवाचक अव्यय वाक्यांशों की तरह ही सदा परसर्गों के साथ आते हैं। किंतु कुछ परसर्ग कुछ संज्ञाओं के साथ ऐच्छिक रूप में च्युत हो जाते हैं। संज्ञाओं को सबसे पहले दो मुख्य वर्गों में बाँटा जा सकता है।

1. स्थान वाचक संज्ञाएँ
2. अन्य संज्ञाएँ।

स्थानवाचक संज्ञाओं के साथ आने पर 'को' 'में' और 'पर' कहीं-कहीं ऐच्छिक रूप से च्युत हो जाते हैं। इस वर्ग के अन्तर्गत घर, विद्यालय, शहर, दफ्तर, स्कूल, बाजार, स्टेशन आदि संज्ञाएँ आती हैं। अन्य संज्ञाओं के साथ आने पर 'को' 'में' 'से' च्युत नहीं होते। शेष परसर्ग (से, तक, और में से) आने के बाद फिर च्युत नहीं होते, चाहे संज्ञा पहले वर्ग की हो, चाहे दूसरे वर्ग की। जैसे—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

1. वह **अपने घर** (को) गया ।
2. वह **अपने घर** (पर) है ।
3. वह **आजकल आगरे** (में) है ।
4. वह **पहाड़** पर गया ।
5. *वह **पहाड़** गया ।
6. वह **पहाड़ पर** है ।
7. *वह **पहाड़** है ।
8. स्याही **दावात में** है ।
9. *स्याही **दावात** है ।

स्थानवाचक संज्ञाओं से भिन्न संज्ञाओं के अन्तर्गत खिड़की, पेड़, कुर्सी, पहाड़, मेज, पानी, लोटा आदि संज्ञाएँ आती हैं । इन संज्ञाओं का स्थानवाचक वाक्यांश के रूप में प्रयोग होने पर इनके साथ के परसर्गों या स्थानवाचक अव्यय शब्दों का लोप कभी नहीं होता । उदाहरण ऊपर हैं ।

3: 3: 2—स्थानवाचक संज्ञाओं को पुनः दो वर्गों में रख सकते हैं ।

1. घर, स्कूल, विद्यालय, दफ्तर जैसी संज्ञाएँ ।
2. आगरा, बनारस, शहर, गाँव जैसी संज्ञाएँ ।

घर, स्कूल आदि ऐसे स्थान हैं, जिनमें एक या कई द्वार होते हैं । शहर, बनारस आदि इनसे भिन्न प्रकार के स्थान हैं । दोनों वर्गों में इस भेद के कारण परसर्गों के प्रयोग में भी भेद दिखायी देता है । उदाहरण के लिए—

1. वह आजकल **आगरे में** है ।
2. वह आजकल **आगरे** है ।

इन वाक्यों में अर्थ की दृष्टि से कोई भेद नहीं है । इन वाक्यों की तुलना निम्नलिखित वाक्यों से कीजिए—

1. वह **घर में** है ।
2. वह **घर** है ।

यहाँ 'घर में' और 'घर' में अर्थभेद है । इसी प्रकार 'पर' का प्रयोग दूसरे प्रकार की स्थान-वाचक संज्ञाओं के साथ सामान्य रूप से नहीं होता—

1. *वह **शहर पर** है ।
2. *वह **बनारस पर** गया ।

3: 3:3—अन्य वर्ग के अन्तर्गत आने वाली संज्ञाओं का भी वर्गीकरण संभव है । सबसे पहले इनको दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—

1. मार्गसूचक संज्ञाएँ—दरवाजा, खिड़की, गली, रास्ता, सुराख आदि ।
2. अन्य संज्ञाएँ—पेड़, कुर्सी, सुराही, लोटा आदि ।

निम्नलिखित उदाहरणों में इस वर्गीकरण की सार्थकता देखी जा सकती है ।

1. वह **इस गली से** भागा ।
2. वह **इस घर से** भागा ।
3. वह **इस कुर्सी से** भागा ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्तिम वाक्य सामान्य रूप से ठीक नहीं है। पहले वाक्य में 'इस गली से' के दो अर्थ हो सकते हैं ; पहला, गली वह स्थान है, जहाँ से उसने भागना शुरू किया; दूसरा, गली वह स्थान है, जहाँ से उसने भागना आरंभ नहीं किया, वलिक गली से होकर भागा। दूसरे वाक्य में आये हुए 'इस घर से' का केवल एक अर्थ है; वह जगह जहाँ से उसने भागना आरंभ किया। दूसरे अर्थ को यदि कहना आवश्यक हुआ तो उसे इस प्रकार कहेंगे—

वह **इस घर से होकर** भागा।

3:3:4—पेड़, कुर्सी वाले वर्ग में आने वाली संज्ञाओं को पुनः से वर्गों में विभाजित कर सकते हैं—ऐसी संज्ञाएँ जो अपने भीतर कोई वस्तु धारण करें। जैसे—लोटा, सुराही, बक्स, कमरा आदि। दूसरी वे संज्ञाएँ जो इनसे भिन्न हैं, जैसे—चौराहा, पेड़ दीवाल, फर्श, चारपाई, प्लेटफार्म आदि। पहले प्रकार की संज्ञाओं के साथ सामान्य रूप से 'में' का प्रयोग होता है, और दूसरे प्रकार की संज्ञाओं के साथ सामान्य रूप से 'पर' का प्रयोग होता है। वैसे इस वर्गीकरण को उचित ठहराने के लिए पर्याप्त कारण नहीं मिले हैं। स्थानवाचक वाक्यांश में सम्मिलित होने वाली संज्ञाओं का वर्गीकरण इस रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है—

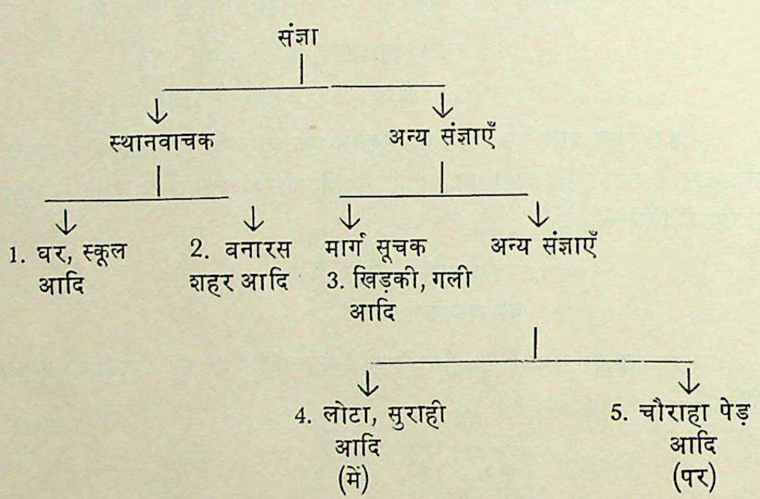

3:4:0—संज्ञा या अव्यय शब्दों की आवृत्ति से भी स्थानवाचक वाक्यांश बनते हैं—जैसे, घर-घर, जगह-जगह, पास-पास आदि।

1. वह **घर-घर** घूम रहा है।
2. वह **गली-गली** भटक रहा है।
3. वह **शहर-शहर** दौड़ रहा है।
4. वह **आगे-आगे** जा रहा है।
5. वह **पीछे-पीछे** आ रहा है।

3:4:1—कुछ स्थानवाचक वाक्यांश परसर्ग-युग्मों से बनते हैं। ये स्थानवाचक वाक्यांश नाप के बोधक होते हैं। इस प्रकार के परसर्ग-युग्म हैं, से—तक, से—पर।

1. वह **घर से स्कूल तक** रोता गया।
2. वे **बनारस से जौनपुर तक** दौड़ते रहे।
3. विश्वविद्यालय **घर से दो मील पर** है।
4. उसका मकान **यहाँ से दो फर्लांग पर** है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

'से—पर' से बनने वाले स्थानवाचक वाक्यांशों में 'पर' से पूर्व नाप देने वाले शब्द आते हैं, जैसे—मील, फर्लांग, योजन आदि ।

3: 5: 0—पहले यह कहा जा चुका है कि वाक्य में स्थानवाचक वाक्यांशों के प्रयोग को समझने के लिए क्रियाओं का वर्णन आवश्यक है, देखिए 3: 1: 1 । गत्यर्थक क्रियाएँ तो स्थानवाचक वाक्यांशों को अनिवार्य घटक के रूप में लेती ही हैं, अन्य क्रियाएँ भी स्थानवाचक वाक्यांशों को अनिवार्य घटक के रूप में लेती हैं । कुछ क्रियाएँ स्थानवाचक वाक्यांशों को अनिवार्य घटक के रूप में तो नहीं लेतीं, किंतु उनको लेने की विशेष क्षमता रखती हैं, जो क्षमता दूसरी क्रियाओं में नहीं होती । क्रियाओं की इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए समस्त क्रियाओं को चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है ।

1. स्थान परिवर्तन का अर्थ देने वाली क्रियाएँ—(फेंकना-वर्ग)
2. आधार-प्रधान क्रियाएँ—दो उपवर्ग—घुसेड़ना उपवर्ग, घुसना उपवर्ग
3. गत्यर्थक क्रियाएँ
4. अन्य वर्ग (पढ़ना वर्ग)

3: 5: 1: 0—पहले वर्ग में ऐसी क्रियाओं की गणना की गयी है, जिनमें किसी वस्तु को एक जगह से दूसरी जगह करने का भाव रहता है । ये क्रियाएँ सकर्मक हैं, किंतु चौथे वर्ग में आने वाली सकर्मक क्रियाओं से भिन्न हैं । इन क्रियाओं की सूची नीचे है—

फेंकना	झोंकना	खींचना	ठेलना	ढकलेना
खदेड़ना	धकेलना	बढ़ाना	भेजना	रखना
पहुँचाना	गिराना	उतारना	उछालना	रपटना

इस सूची में और क्रियाएँ भी सम्मिलित की जा सकती हैं ।

3: 5: 1: 1—इस सूची में उल्लिखित क्रियाएँ 'पढ़ना' 'खाना', 'मारना' आदि सकर्मक क्रियाओं से भिन्न हैं । ये स्थानवाचक वाक्यांशों को अनिवार्य घटक के रूप में तो नहीं लेतीं, किंतु उनको लेने की विशेष क्षमता रखती हैं । नीचे के उदाहरणों से यह बात स्पष्ट होगी—

1. उसने पुस्तक **घर में फेंकी** ।
2. उसने पुस्तक **घर में पढ़ी** ।
3. उसने मोहन को **घर में ढकेला** ।
4. उसने मोहन को **घर में मारा** ।
5. उसने **मोहन के सामने** पुस्तक **भेजी** ।
6. उसने **मोहन के सामने** पुस्तक **फाड़ी** ।

पहला, तीसरा और पाँचवाँ वाक्य द्वयार्थक हैं, और दूसरा, चौथा और छठा वाक्य द्वयार्थक नहीं हैं । इसका कारण वाक्यों में प्रयुक्त क्रियाएँ हैं । पहले वाक्य के दो अर्थ हो सकते हैं । पुस्तक फेंकने वाला घर में है, और वहाँ से उसने पुस्तक अन्यत्र फेंक दी, या फेंकने के परिणामस्वरूप पुस्तक घर में पहुँच गयी, फेंकने वाला घर से बाहर है । इसी प्रकार तीसरे और पांचवें वाक्यों के दो-दो अर्थ हैं । ढकेलने की क्रिया घर में हुई, या अन्यत्र से मोहन को घर में ढकेल दिया गया । ढकेलने के परिणामस्वरूप मोहन घर में पहुँचा । इस प्रकार का दुहरा अर्थ उन वाक्यों का संभव नहीं है, जिनमें 'पढ़ी', 'मारा' और 'फाड़ी' क्रियाएँ प्रयुक्त हैं । इससे स्पष्ट होता है कि 'फेंकना' आदि क्रियाएँ 'पढ़ना', 'मारना' आदि क्रियाओं से भिन्न हैं । इन क्रियाओं में यह भाव निहित होता है कि कोई वस्तु एक जगह से दूसरी जगह स्थानांतरित होगी ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

1. उसने पुस्तक घर में से बाहर फेंकी ।
2. *उसने पुस्तक घर में से बाहर पढ़ी ।
3. उसने मोहन को घर में से बाहर खींचा ।
4. *उसने मोहन को घर में से बाहर पीटा ।

दूसरा और चौथा वाक्य गलत हैं ।

3:5:1:2—फेंकना वर्ग की क्रियाएँ गत्यर्थक क्रियाओं से भिन्न हैं । गत्यर्थक क्रियाओं की तरह ये स्थानवाचक वाक्यांशों को अनिवार्य घटक के रूप में नहीं लेतीं । ये क्रियाएँ सकर्मक हैं, इसी से इनसे बने वाक्य कर्मवाच्य में रूपांतरित हो सकते हैं, जबकि गत्यर्थक क्रियाओं से बने वाक्य कर्मवाच्य में रूपातंरित नहीं हो सकते । गत्यर्थक क्रियाओं से बने वाक्यों में वाच्य परिवर्तन तो सम्भव है, किन्तु उस वाच्य को कर्मवाच्य नहीं स्वीकार किया जा सकता ।

1. वह पुस्तक फेंकता है ।
2. *उससे पुस्तक फेंकी जाती है ।
3. पुस्तक फेंकी जाती है ।
4. वह स्कूल से सीधे घर आता है ।
5. *उससे स्कूल से सीधे घर आया जाता है ।
6. स्कूल से सीधे घर आया जाता है ।

दूसरे और पाँचवें वाक्य को छोड़कर सभी वाक्य शुद्ध हैं । इनका व्यवहार बराबर होता है । 'फेंकना' आदि क्रियाएँ गत्यर्थक क्रियाओं से एक और बात में भिन्न हैं । 'ने' का प्रयोग गत्यर्थक क्रियाओं के साथ नहीं होता, जबकि फेंकना वर्ग की क्रियाओं के साथ 'ने' का प्रयोग होता है । निवासार्थक क्रियाओं से भी इस वर्ग की क्रियाएँ 'ने' के प्रयोग की दृष्टि से भिन्न हैं । 'रहना', 'ठहरना', 'टिकना', 'बसना' क्रियाएँ स्थानवाचक वाक्यांशों के साथ आती हैं, और 'ने' को अपने साथ कभी नहीं लेतीं ।

3:5:1:3—फेंकना आदि क्रियाएँ आधार-प्रधान क्रियाओं से भी भिन्न हैं । आधार-प्रधान क्रियाओं में कुछ अकर्मक हैं (घुसना, बिखरना, फैलना आदि) और कुछ सकर्मक हैं (घुसेड़ना, बिखेरना, फैलाना, ठूँसना आदि) । फेंकना आदि अकर्मक आधार-प्रधान क्रियाओं से स्पष्ट ही भिन्न हैं । ये सकर्मक आधार-प्रधान क्रियाओं (घुसेड़ना, ठूँसना, डालना आदि) से भी भिन्न हैं । निम्नलिखित उदाहरणों को देखिये—

1. उसने आदमियों को घर में घुसेड़ दिया ।
2. उसने आदमियों को घर में झोंक दिया ।
3. उसने आदमियों को घर में ठूँस दिया ।
4. उसने आदमियों को घर में ढकेल दिया ।

'झोंकना' और 'ढकेलना' से बनने वाले वाक्य द्वयार्थक हैं, किंतु 'घुसेड़ना' और 'ठूँसना' से बनने वाले वाक्य द्वयार्थक नहीं हैं । 'झोंकना' 'ढकेलना' प्रथम वर्ग की क्रियाएँ हैं, और उनको इस विशेषता का उल्लेख पहले भी किया जा चुका है । किंतु दूसरे वर्ग की सकर्मक क्रियाओं में यह विशेषता नहीं है ।

3:5:2:0—दूसरे वर्ग में आधार-प्रधान क्रियाएँ हैं । इनको पुनः दो उपवर्गों में रखा जा सकता है ; सकर्मक क्रियाओं का उपवर्ग और अकर्मक क्रियाओं का उपवर्ग । **प्रथम उपवर्ग** में इन क्रियाओं को रख सकते हैं—

घुसेड़ना	डालना	ठूँसना
बिछाना	बिखेरना	भरना
रखना	टाँगना	फैलाना, उँडेलना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ये क्रियाएँ चौथे वर्ग में आने वाली सकर्मक क्रियाओं (पढ़ना, खाना, पीना आदि) से भिन्न हैं। यद्यपि दोनों प्रकार की क्रियाएँ कर्म लेती हैं, किंतु 'घुसेड़ना' आदि क्रियाएँ स्थानवाचक वाक्यांश की आकांक्षा रखती हैं, और 'पढ़ना' आदि नहीं। घुसेड़ना उपवर्ग की क्रियाओं के परिणामस्वरूप कर्म और अधिकरण में सम्बन्ध जुड़ जाता है। यह बात 'पढ़ना' आदि क्रियाओं के बारे में नहीं कही जा सकती।

1. उसने **घर में** खाना **खाया**।
2. उसने **घर में** पानी **फैलाया**।
3. उसने **मेज पर** पुस्तक **पढ़ी**।
4. उसने **मेज पर** स्याही **उँडेली**।
5. उसने **चारों तरफ** फूल **देखे**।
6. उसने **चारों तरफ** चावल **बिखेरा**।

ऊपर के वाक्यों को ध्यानपूर्वक देखने पर दोनों प्रकार की क्रियाओं में अन्तर स्पष्ट हो जाता है। 'घर में' खाना खाने से 'घर' और 'खाना' में आधार-आधेय संबंध नहीं हुआ, किंतु 'घर में' पानी फैला देने से 'घर' और 'पानी' का संबंध आधार-आधेय का संबंध हो गया। यही बात अन्य वाक्यों में भी दिखायी देती है। इस भेद के कारण ही प्रथम उपवर्ग की क्रियाओं से जैसे वाक्य बन सकते हैं, वैसे पढ़ना आदि क्रियाओं से नहीं।

1. घर में पानी फैलाओगे तो चारों तरफ पानी हो जायेगा।
2. *घर में खाना खाओगे तो चारों तरफ खाना हो जायेगा।

3:5:2:1—घुसेड़ना उपवर्ग की क्रियाएँ 'जाना' आदि गत्यर्थक क्रियाओं से स्पष्ट ही भिन्न हैं। फेंकना वर्ग की क्रियाएँ जिस रूप में गत्यर्थक क्रियाओं से भिन्न हैं, उसी रूप में घुसेड़ना उपवर्ग की क्रियाएँ भी। हँसना, रोना आदि अकर्मक क्रियाओं से ये क्रियाएँ भिन्न हैं ही। फेंकना वर्ग और घुसेड़ना उपवर्ग की क्रियाएँ कैसे एक दूसरे से भिन्न हैं, यह पहले स्पष्ट किया जा चुका है। (देखिए 3:5:1:3)

3:5:2:2—घुसेड़ना उपवर्ग की क्रियाओं में एक छोटा-सा उपवर्ग उन क्रियाओं का है, जो कर्म और अधिकरण को एक ही विभक्ति में लेती हैं; भरना, उँडेलना, बिछाना।

1. उसने बक्स में **सामान** भर दिया।
2. उसने सामान से **बक्स** भर दिया।
3. उसने **घड़ा** उँडेल दिना।
4. उसने **पानी** उँडेल दिया।
5. उसने चारपाई पर **बिछौना** बिछा दिया।
6. उसने **चारपाई** बिछा दी।

3:5:2:3—दूसरे उपवर्ग में आने वाली क्रियाएँ नीचे हैं।

घुसना	अँटना	समाना
भरना	पड़ना	फैलना
बिखरना	बिछना	लेटना
रहना	बसना	ठहरना
लोटना	बैठना	टंगना, टिकना।

इन क्रियाओं में स्थानवाचक वाक्यांशों को लेने की विशेष क्षमता है, जो अन्य अकर्मक क्रियाओं में नहीं है। जैसे—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

1. **घर में घुसे हुए** लोग बातें कर रहे हैं ।
2. **घर में डरे हुए** लोग बातें कर रहे हैं ।
3. **घर में पड़े हुए** लोग क्या कर रहे हैं ?
4. **घर में नहाये हुए** लोग क्या कर रहे हैं ?

पहले और तीसरे वाक्य में स्थानवाचक वाक्यांशों का सम्बन्ध क्रमशः 'घुसे हुए' और 'पड़े हुए' कृदन्त रूपों से है, किंतु दूसरे और चौथे वाक्य में स्थानवाचक वाक्यांशों का संबंध 'डरे हुए' और 'नहाये हुए' कृदन्त रूपों से न होकर, वाक्य की क्रियाओं से है । इसके अतिरिक्त कुछ अकर्मक क्रियाएँ उस रूप में नहीं जा पातीं, जिस रूप में घुसना उपवर्ग की क्रियाएँ चली जाती हैं ।

1. **घर में घुसे हुए** लोग बाहर गये ।
2. ***घर में हँसे हुए** लोग बाहर गये ।
3. ***घर में चीखे हुए** लोग बाहर गये ।
4. ***घर में चिल्लाये हुए** लोग बाहर गये ।

'हँसे हुए', 'चीखे हुए', और 'चिल्लाये हुए' रूपों की जगह क्रमशः 'हँसने वाले', 'चीखने वाले' और 'चिल्लाने वाले' रूप आयेंगे । 'घुसे हुए' रूप सही है, और इसी प्रकार इस उपवर्ग की अन्य क्रियाएँ इस रूप में सही होंगी ।

उपर्युक्त कारणों से घुसना उपवर्ग की अकर्मक क्रियाओं को अन्य अकर्मक क्रियाओं से पृथक करना उपयुक्त है ।

बाल्टी में भरा हुआ जल
बाल्टी में मरा हुआ कीड़ा

दूसरे वाक्यांश में 'मरा हुआ कीड़ा बाल्टी में है' या 'बाल्टी में मरने वाला कीड़ा बाल्टी में है' यह स्पष्ट नहीं है । पहले वाक्यांश में इस प्रकार की कोई उलझन नहीं है ।

3:5:2:4—परसर्गों की दृष्टि से दूसरे वर्ग की क्रियाओं पर विचार करें, तो इनके कई अन्त-र्विभाग हो जायेंगे । घुसेड़ना उपवर्ग की क्रियाएँ—

1—

घुसेड़ना	में
ठूँसना	
भरना	

2—

बिछाना	पर
बिखेरना	
टाँगना	
उँडेलना	

3—

डालना	पर में
फैलाना	
रखना	

घुसना उपसर्ग की क्रियाएँ—

1—

अँटना	में
घुसना	
भरना	
समाना	

2—

टंगना	पर

3—

पड़ना	में पर
फैलना	
बिखरना	
बिछना	
लेटना	
लोटना	
बैठना	
सोना	
रहना	
टिकना	
ठहरना	
बसना	

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

3: 5: 2: 5—आधार-प्रधान सकर्मक क्रियाओं से बने वाक्य कर्मवाच्य में बदले जा सकते हैं। आधार-प्रधान अकर्मक क्रियाओं से बने वाक्यों में भी वाच्य परिवर्तन सम्भव है। यह वाच्य भाववाच्य कहलाता है। इस प्रकार के वाक्य नकारात्मक भाववाच्य में तो आते ही हैं, स्वीकारात्मक भाववाच्य में भी आते हैं। किन्तु जब स्वीकारात्मक भाववाच्य में ये वाक्य आते हैं, तो कर्ता निश्चित रूप से च्युत हो जाते हैं। जैसे—

1. वह चटाई पर बैठता है।
2. उससे चटाई पर नहीं बैठा जाता।
3. *उससे चटाई पर बैठा जाता है।
4. चटाई पर बैठा जाता है।
5. वह अपने घर रहता है।
6. उससे अपने घर नहीं रहा जाता।
7. *उससे अपने घर रहा जाता है।
8. अपने घर रहा जाता है।

तीसरा और सातवां वाक्य गलत हैं।

3: 5: 3: 0—गत्यर्थक क्रियाएँ—इन क्रियाओं में दूरी तय करने का भाव होता है। इनमें से कुछ स्थानवाचक वाक्यांश को अनिवार्य घटक के रूप में लेती हैं, और कुछ ऐच्छिक घटक के रूप में। इन क्रियाओं का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया जा सकता है।

दूरी दो प्रकार की हो सकती है—पड़ी रेखा की दूरी और खड़ी रेखा की दूरी। खड़ी रेखा की दूरी को तय करने का अर्थ 'चढ़ना' और 'उतरना' क्रियाओं में है। पड़ी रेखा की दूरी को पुनः तीन वर्गों में विभक्त कर सकते हैं—जल, थल और नभ की दूरी। जल में दूरी तय करने वाली क्रिया है 'तैरना'। नभ में है, 'उड़ना'। थल पर दूरी तय करने का भाव देने वाली क्रियाएँ अधिक हैं। इनकी सूची इस प्रकार है—

1	2	3	4
आना	खिसकना	घुमना	बढ़ना
चलना	टरकना	टहलना	लपकना
जाना	टलना	डोलना	बहना
पहुंचना	भागना	भटकना	
पधारना	हटना	रेंगना	
लौटना	निकलना	दौड़ना	
सिधारना			
को—प्रधान	से—प्रधान	में—प्रधान	और—प्रधान

3: 5: 3: 1—यहाँ प्रथम वर्ग में आने वाली क्रियाएँ 'आना' आदि गंतव्य स्थान को लेती हैं—

1. वह **घर** गया।
2. वह **घर** चला।
3. वह **घर** आया। आदि।

इसीलिए इनको 'को' प्रधान कहा गया है। 'को' का सामान्य रूप से लोप हो जाता है।

दूसरे वर्ग की क्रियाएँ किसी स्थान से दूर होने का भाव देती हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

1. वह **घर से** खिसक गया ।

2. वह **यहां से** टल गया । आदि

तीसरे वर्ग की क्रियाएँ गंतव्य स्थान नहीं लेतीं । इनके साथ स्थानवाचक वाक्यांश में सामान्य-रूप से **'में'** लगता है ।

1. वह **मैदान में** टहल रहा है ।

2. वह **शहर में** घूम रहा है ।

3. वह **खेत में** दौड़ रहा है । आदि ।

चौथे वर्ग में आने वाली क्रियाएँ दिशावाचक वाक्यांशों को लेती हैं, इसीलिए इनको ओर-प्रधान कहा गया है ।

1. वह **घर की ओर** लपका ।

2. वह **मेरी ओर** बढ़ा ।

3. पानी **पूरब** बह रहा है ।

3: 5: 3: 2—गत्यर्थक क्रियाओं को सकर्मक क्रियाओं से अलग रखा गया है । गत्यर्थक क्रियाओं के साथ 'ने' का प्रयोग नहीं होता । वाच्य परिवर्तन इन क्रियाओं में सम्भव है । नीचे कुछ उदाहरण हैं—

1. स्कूल से सीधे घर **आया जाता है ।**

2. दूसरों के घर एकाध बार **जाया जाता है ।**

3. यहाँ से बनारस एक घंटे में **पहुँचा जाता है ।**

4. शहर देखने के बाद घर **लौटा जाता है ।**

3: 5: 3: 3—जल में दूरी तय करने वाली क्रिया 'तैरना' 'में' परसर्ग को लेती है ।

तैरना	में

वह **नदी में** तैरता है ।

'उड़ना' भी सामान्य रूप से 'में' परसर्ग लेता है ।

उड़ना	में

चिड़िया **आसमान में** उड़ती है ।

खड़ी रेखा की दूरी को तय करने का भाव देने वाली क्रियाएँ इस प्रकार हैं, उठना, गिरना, चढ़ना, उतरना ।

उठना, उतरना	से

गिरना, चढ़ना	पर

3: 5: 4:0—चौथे वर्ग में आने वाली क्रियाएँ पहले के तीनों वर्गों की क्रियाओं से भिन्न हैं । इस वर्ग में सकर्मक और अकर्मक दोनों क्रियाएँ सम्मिलित हैं । ये क्रियाएँ स्थानवाचक वाक्यांश को सदा ऐच्छिक घटक के रूप में लेती हैं । ये क्रियाएँ सामान्य रूप से 'में' और 'पर' के साथ आती हैं । 'से' 'तक' और 'को' का प्रयोग इनके साथ प्रायः नहीं होता । जैसे—

1. वह **घर में** पढ़ रहा है ।

2. वह **चारपाई पर** पढ़ रहा है ।

3. वह **घर में** हँस रहा है ।

4. वह **छत पर** हँस रहा है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

5. वह **घर से** पढ़ रहा है।
6. वह **घर तक** पढ़ेगा।
7. *वह **घर को** पढ़ेगा।

सातवाँ वाक्य ठीक नहीं है। पांचवें और छठे वाक्य में गत्यर्थक क्रिया का भाव निहित है। पांचवें वाक्य का अर्थ है, 'वह घर से पढ़ता आ रहा है'। छठे का अर्थ है, 'वह घर तक पढ़ता जायेगा'। गत्यर्थक क्रियाओं के साथ उपर्युक्त सभी परसर्गों का प्रयोग मजे में होता है।

3:5:4:1—इस वर्ग की क्रियाएँ स्थानवाचक अव्यय शब्दों के साथ भी आती हैं। चौथे वर्ग में कुछ ऐसी क्रियाएँ हैं, जो 'में' के स्थान पर 'से' या 'में से' को भी लेती हैं। जैसे—

1. यह पुस्तक प्रकाशन **प्रेस से** छप रही है।
2. यह पुस्तक प्रकाशन **प्रेस में** छप रही है।
3. वह **आगरे से** इम्तहान देगा।
4. वह **आगरे में** इम्तहान देगा।
5. वह **घर में** चिल्ला रहा है।
6. वह **घर में से** चिल्ला रहा है।

हँसना, बोलना, रोना, कमाना इसी प्रकार की क्रियाएँ हैं।

3:6:0—अनुक्रम—अब तक वाक्य में प्रयुक्त एक स्थानवाचक वाक्यांश की रचना और प्रयोग पर विचार किया गया। किन्तु एक वाक्य में एक से अधिक स्थानवाचक वाक्यांशों का प्रयोग हो सकता है, अर्थात ये अनुक्रम में आ सकते हैं। एक साथ जब कई स्थानवाचक वाक्यांश आते हैं, तो उनमें कोई क्रम होता है या नहीं, इस पर विचार किया जा सकता है। अनुक्रम में सामान्य से विशेष की ओर जाने की प्रवृत्ति दिखायी देती है। कुछ उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं।

1. मेरी कुर्सी **उनके पास प्रोफ़ेसर की बायीं ओर** थी।
2. पतंग **हवा में ऊपर** उड़ा जा रहा था।
3. **नीचे जमीन पर** बैठ जाओ।
4. वह **बाजार में इधर-उधर** घूम रहा था।
5. **थोड़ी दूर पर, मंदिर की बगल में, एक बड़े से पत्थर पर** एक युवा बैठा हुआ था।
6. **ऊपर आसमान में चारों तरफ** बादल छा गये थे।

3:7:0—सर्वस्थानवाचक वाक्यांश—हिन्दी में दो सर्वस्थानवाचक वाक्यांश हैं—'यहाँ' और 'वहाँ'। 'यहाँ' निकटवर्ती स्थान के लिए और 'वहाँ' दूरवर्ती स्थान के लिए आता है। दोनों केवल स्थान-वाचक संज्ञा या स्थानवाचक अव्यय शब्दों के ही स्थान पर न आकर पूरे वाक्यांश के स्थान पर आते हैं।

1. वह **मेरे घर** आया और **यहाँ** आकर उसने देर तक बातें कीं।
2. मोहन **अपने मित्र के घर** गया और **वहाँ** उसने खाना खाया।

उपर्युक्त उदाहरणों में 'यहाँ' और 'वहाँ' क्रमशः 'मेरे घर' और 'अपने मित्र के घर' वाक्यांशों के स्थान पर आये हैं। दोनों वाक्यांशों में आये 'घर' की जगह 'यहाँ' 'वहाँ' को नहीं रखा जा सकता।

जैसे—

मेरे **यहाँ**, अपने मित्र के **वहाँ**

दूसरा वाक्यांश गलत है। पहला वाक्यांश सही तो है, किन्तु इस वाक्यांश में 'यहाँ' सर्वस्थान-वाचक वाक्यांश के रूप में नहीं, बल्कि अव्यय शब्द के रूप में प्रयुक्त हुआ है। इसकी चर्चा पहले की जा चुकी है, देखिए 3:2:1। जब यह अव्यय शब्द के रूप में स्थानवाचक वाक्यांश में प्रयुक्त होता है, तो इसको

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्थानवाचक वाक्यांश ही स्वीकार करना ठीक है। इसके स्थान पर सर्वस्थानवाचक वाक्यांश का प्रयोग हो सकता है—

1. श्याम **मोहन के यहाँ** गया और **वहाँ** उससे बातचीत की।

2. श्याम **मेरे यहाँ** आया और **यहाँ** उसने खाना खाया।

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि 'यहाँ' का प्रयोग दो रूपों में होता है। 'मेरे यहाँ' या 'मोहन के यहाँ' में 'यहाँ' स्थानवाचक अव्यय शब्द के रूप में है, और दूसरे वाक्य के दूसरे उपवाक्य में प्रयुक्त 'यहाँ' सर्वस्थानवाचक वाक्यांश के रूप में है। 'मेरे यहाँ' या 'मोहन के यहाँ' में प्रयुक्त 'यहाँ' को सर्वस्थानवाचक वाक्यांश न मानने का दूसरा कारण यह है कि सर्वस्थानवाचक वाक्यांश का प्रयोग स्थानवाचक वाक्यांश के प्रयोग के बाद ही होता है। जबकि 'मोहन के यहाँ' या 'मेरे यहाँ' का प्रयोग पहले हुआ है और किसी अन्य स्थानवाचक वाक्यांश के स्थान पर नहीं हुआ है। इसीसे इनसे बोधित स्थान अपने आप में स्पष्ट हैं, किसी स्थानवाचक वाक्यांश का पूर्व उल्लेख नहीं चाहिए। सर्वस्थानवाचक वाक्यांश 'यहाँ' और 'वहाँ' का आरम्भ में प्रयोग वहीं संभव है, जहाँ स्थान (निकटवर्ती या दूरवर्ती) संकेत से दिखाया जा सके।

1. यहाँ (संकेत करके) बैठो।

2. वहाँ (संकेत करके) जाओ।

यहाँ पर 'यहाँ' और 'वहाँ' का प्रयोग अभीष्ट स्थानों की जगह हुआ है। 'यहाँ' को अव्यय शब्दों के अन्तर्गत रखने का एक कारण और है, वह यह कि 'यहाँ' अन्य अव्यय शब्दों की तरह अपने पूर्व सम्बन्धवाचक प्रत्यय को लेता है।

मेरे यहाँ, मोहन के यहाँ आदि।

'वहाँ' का इस रूप में प्रयोग नहीं होता—मेरे वहाँ*, मोहन के वहाँ* आदि।

3:7:1—सर्वस्थानवाचक वाक्यांशों की इस विशेषता का उल्लेख 3:7:0 में किया जा चुका है कि ये स्थानवाचक वाक्यांशों के बाद ही प्रयुक्त होते हैं। एक वाक्य के दो उपवाक्यों में प्रयुक्त स्थानवाचक वाक्यांश और सर्वस्थानवाचक वाक्यांश के क्रम परिवर्तन से यह विशेषता स्पष्ट हो जायेगी।

उदाहरण—

1. क—राम **मोहन के घर** गया और **वहाँ** खाना खाया।
   ख—राम **वहाँ** गया और **मोहन के घर** खाना खाया।
2. क—राम **मेरे घर** आया और **यहाँ** खाना खाया।
   ख—राम **यहाँ** आया और **मेरे घर** खाना खाया।

'क' वाक्यों के पहले उपवाक्यों में स्थानवाचक वाक्यांश हैं, और दूसरे उपवाक्यों में सर्वस्थानवाचक वाक्यांश हैं; और दोनों एक ही स्थान का बोध कराते हैं। 'ख' वाक्यों में इन वाक्यांशों में क्रमपरिवर्तन हो गया है, पहले सर्वस्थानवाचक वाक्यांश और बाद में स्थानवाचक वाक्यांश हैं। और इस क्रम परिवर्तन का प्रभाव यह हुआ कि दोनों वाक्यांश भिन्न स्थानों का बोध करा रहे हैं। पहले क–वाक्य में 'मोहन के घर' और 'वहाँ' एक ही स्थान के बोधक हैं, किन्तु पहले ख–वाक्य में क्रम परिवर्तन के कारण ये दोनों भिन्न स्थानों के बोधक हैं। इससे स्पष्ट होता है कि सर्वस्थानवाचक वाक्यांश बाद में प्रयुक्त स्थानवाचक वाक्यांशों की जगह नहीं आते।

'यहाँ और वहाँ' के साथ निम्नलिखित परसर्ग आ सकते हैं।

यहाँ	से
	पर
	तक
	को

वहाँ	से
	तक
	पर
	को

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

'को' के लुप्त हो जाने की प्रवृत्ति है।

3: 8: 0—उपवाक्यस्तरीय स्थानवाचक वाक्यांश—अभी तक स्थानवाचक वाक्यांशों की चर्चा की गयी। इनके अतिरिक्त वाक्य में स्थानवाचक उपवाक्यों का भी प्रयोग होता है। स्थानवाचक उपवाक्यों का प्रयोग मिश्रित वाक्यों में होता है। वाक्य में एक मुख्य उपवाक्य होता है। स्थानवाचक उपवाक्य इसी पर आश्रित होता है। दोनों उपवाक्यों में संयोजक शब्दों का प्रयोग होता है। इसमें मुख्य उपवाक्य के साथ आने वाला संयोजक शब्द कभी-कभी च्युत हो जाता है। 'जहाँ-वहाँ', या 'जहाँ-उस जगह' की सहायता से ऐसे वाक्य बनते हैं।

1. **जहाँ** मोहन पढ़ रहा है, **वहाँ** राम नहीं जायेगा।
2. **जहाँ** मोहन पढ़ रहा है, **उस जगह** राम नहीं जायेगा।

यहाँ पहले उपवाक्य आश्रित हैं, और दूसरे उपवाक्य मुख्य हैं।

इन उपवाक्यों के क्रम में परिवर्तन हो सकता है।

3. राम **वहाँ** नहीं जायेगा, **जहाँ** मोहन पढ़ रहा है।
4. **उस जगह** राम नहीं जायेगा, **जहाँ** मोहन पढ़ रहा है।

कुछ स्थानों पर 'वहाँ' का लोप मिलता है।

1. तुम जहाँ जाना चाहते हो, जाओ।
2. मैं जहाँ जाना चाहता हूँ, जाऊँगा।

3: 9: 0 प्रश्नवाचक शब्द—स्थानवाचक प्रश्नार्थक अव्यय शब्द दो हैं—कहाँ और किधर।

1. मोहन **कहाँ** है ?
2. मोहन **कहाँ** जा रहा है ?
3. मोहन **किधर** है ?
4. मोहन **किधर** जा रहा है ?

परसर्गों के प्रयोग की दृष्टि से—

कहाँ	से पर तक को

किधर	से को

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

4

रीतिवाचक अव्यय वाक्यांश

4:1:0—रीतिवाचक अव्यय वाक्यांश क्रिया की विशेषता बताते हैं। ये सही अर्थों में क्रिया-विशेषण हैं। रूप की दृष्टि से इनको निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

1. –'पूर्वक' से संयुक्त,
2. –'अनुसार' से संयुक्त,
3. –'के विरुद्ध' से संयुक्त,
4. –'से' से संयुक्त,
5. –'में' से संयुक्त,
6. –'प्रकार/तरह' से संयुक्त,
7. कृदन्त रूप,
8. अन्य शब्द,

4:2:0—पूर्वक–यह संज्ञा से संयुक्त होता है। जिन संज्ञाओं से 'पूर्वक' संयुक्त होता हैं, वे भाववाचक होती हैं, जैसे—दुखपूर्वक, सुखपूर्वक, श्रद्धापूर्वक, प्रेमपूर्वक, भावपूर्वक, स्वेच्छापूर्वक आदि।

उदाहरण—

1. उसने **श्रद्धापूर्वक** मूर्ति के सामने सिर झुकाया।
2. उसने **स्वेच्छापूर्वक** भोजन किया।
3. वह कहानी **ध्यानपूर्वक** सुन रहा है।
4. वे दोनों **प्रेमपूर्वक** एक साथ रहने लगे।
5. वह **विश्वासपूर्वक** बोला।

'पूर्वक' का अर्थ 'साथ' है। 'श्रद्धापूर्वक' का भाव है कि उसमें मूर्ति के प्रति श्रद्धा है।

4:3:0—अनुसार–'अनुसार' का पूर्वगामी संज्ञा शब्द के साथ समास हो जाता है। जब समास नहीं होता तो 'के' के साथ 'अनुसार' का प्रयोग होता है। समास प्रायः व्यंजनांत और अकारान्त शब्दों के साथ होता है। इस प्रकार 'अनुसार' के दो रूप हुए—समास सहित और समास रहित रूप।

इच्छानुसार—इच्छा के अनुसार
आज्ञानुसार—आज्ञा के अनुसार
समयानुसार—समय के अनुसार
आवश्यकतानुसार—आवश्यकता के अनुसार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुछ ऐसी संज्ञाएँ हैं, जिनके साथ 'के अनुसार' हो आता है।

शक्ति के अनुसार—*शक्ति अनुसार

कहने के अनुसार—*कहनानुसार

मोहन के अनुसार—*मोहनानुसार

लड़के के अनुसार—*लड़कानुसार

उदाहरण—

1. वह आपकी **इच्छानुसार** काम करेगा।
2. वह **सुविधानुसार** काम करेगा।
3. वह तुम्हारे **कथनानुसार** घर नहीं जायेगा।
4. तुम अपनी **शक्ति के अनुसार** काम करो।
5. वह तुम्हारे **कहने के अनुसार** काम करेगा।

'अनुसार' अनुकूलता बोधक है। 'इच्छानुसार' का तात्पर्य है इच्छानुकूल या इच्छा के अनुकूल।

4:4:0—के विरुद्ध/–के प्रतिकूल

यह 'अनुसार' का विलोम है। ये अपने पूर्वगामी शब्दों के साथ समस्त रूप में नहीं आते।

उदाहरण—

1. वह तुम्हारी **इच्छा के विरुद्ध** काम नहीं करेगा।
2. वह **तुम्हारे प्रतिकूल** काम कर रहा है।
3. उसने तुम्हारे **कथन के विरुद्ध** काम किया।
4. तुम **समय के प्रतिकूल** काम मत करना।
5. उसने **मोहन के विरुद्ध** भाषण दिया।

4:5:0—से–'से' से बनने वाले रीतिवाचक अव्यय वाक्यांश बहुत अधिक है। 'से' के स्थान पर कभी-कभी 'सहित' और 'के साथ' आ सकते हैं—जैसे

स्वच्छंदता से,	स्वच्छंदता के साथ,	स्वच्छंदता सहित
प्रेम से	प्रेम के साथ,	प्रेम सहित
विस्तार से	विस्तार के साथ	विस्तार सहित

जिन शब्दों के साथ 'से', 'के साथ' और 'सहित' तीनों का प्रयोग हो सकता है, वे सामान्यतः सज्ञाएँ हैं। किन्तु सभी संज्ञाओं के साथ 'के साथ' या 'सहित' का प्रयोग नहीं मिलता। जैसे—

हृदय से, हृदय के साथ*, हृदय सहित*

मन से मन के साथ* मन सहित* वाक्यों में इनका प्रयोग—

1. उसने **हृदय से** धन्यवाद दिया।
2. * उसने **हृदय के साथ** धन्यवाद दिया।
3. * उसने **हृदय सहित** धन्यवाद दिया।

निम्नलिखित शब्दों के साथ केवल 'से' का प्रयोग होता है। ये शब्द संज्ञा से भिन्न शब्द हैं— झट, ठीक, धीरे, जोर, धम, फट।

झट से* झट के साथ *झट सहित। इसी प्रकार अन्य शब्दों के साथ।

इनमें से कुछ 'से' से बिना संयुक्त हुए भी रीतिवाचक घटक के रूप में प्रयुक्त होते हैं--

1. वह **झट** घर आया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

2. वह **ठीक** कह रहा है ।

3. **धीरे** चलो ।

4:6:0—में—यह संज्ञा शब्दों के साथ मिलकर आता है । जैसे—हँसी में, मजाक में, गुस्से में, प्रेम में ।

उदाहरण—

1. उसने यह बात **हँसी में** कही ।
2. उसने मोहन को **मजाक में** मारा ।
3. मैंने **धोखे में** तार पकड़ लिया ।
4. वह **घमंड में** चारों ओर घूम रहा है ।

4:7:0—तरह/प्रकार—इन दोनों में से कोई भी एक आ सकता है । इनसे बनने वाले वाक्यांश ये हैं— अच्छी तरह, अच्छी प्रकार, बुरी तरह/प्रकार, अनेक तरह, एक तरह, ठीक तरह । इनके बाद ऐच्छिक रूप से 'से' आ सकता है; अच्छी तरह से, बुरी तरह से आदि ।

उदाहरण—

1. उसने **अच्छी तरह (से)** पुस्तक पढ़ ली ।
2. उसने मोहन को **बुरी तरह (से)** पीटा ।
3. मैंने उसे **अनेक तरह (से)** समझाया ।
4. तुम **ठीक तरह (से)** काम करो ।

सार्वनामिक 'इस' 'उस' के साथ भी 'तरह' और 'प्रकार' जुड़ते हैं ; इस प्रकार, इस तरह, उस प्रकार, उस तरह ।

1. तुम **इस प्रकार** काम करो ।
2. मोहन को **इस तरह** मत बुलाना ।
3. **इसी प्रकार** दुनिया चलती है ।
4. **उस तरह** काम नहीं करना चाहिये ।

4:8:0—कृदन्त रूप-कृदन्त रूपों से भी रीति की अभिव्यक्ति होती है । रीतिवाचक कृदन्त रूपों की रचना '–ता '–या और '–कर' प्रत्ययों की सहायता से होती है। '–कर' का केवल एक रूप मिलता है । '–ता' और '–या' लिंग और वचन से प्रभावित होते हैं, और अव्यय रूप में भी आते हैं । ये क्रमशः '–ता' '–ते' और '–ती' के रूप में, और '–या '–ये' और '–यी' के रूप में आते हैं । अव्यय रूप में इनका रूप क्रमशः '–ते' और '–ये' होता है । '–ता और '–या' के बाद कभी ऐच्छिक और कभी अनिवार्य रूप से 'हुआ', 'हुई' या 'हुए' आते हैं ।

4:8:1—कर-सामान्य रूप से अकर्मक क्रियाएँ 'कर' के साथ रीतिवाचक बनती हैं। कुछ अकर्मक धातुएँ नीचे हैं, जो 'कर' के साथ रीतिवाचक रूप में आती हैं ।

अकड़ना	अकुलाना	अचकचाना
इठलाना	इतराना	हँसना
रोना	चिल्लाना	कुढ़ना
घबड़ाना	चकराना	खीझना
झेंपना	झुंझलाना	डरना
डांटना	हकलाना	गुर्राना आदि ।

वाक्यों में प्रयोग—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

1. वह **अकड़कर** कहने लगा।
2. वह **हँसकर** कहानी सुनाने लगा।
3. उसने मोहन को **झुंझलाकर** बुलाया।
4. वह **चिल्लाकर** रोने लगा।

उपर्युक्त वाक्यों में 'अकड़ना' और 'कहना', हँसना, और 'सुनाना' क्रियाएँ साथ-साथ हो रही हैं। 'अकड़ना' 'हँसना' आदि का मुख्य क्रिया से पूर्वापर सम्बन्ध नहीं है। अतः इनको समयवाचक नहीं कहा जायेगा। सकर्मक धातुओं के साथ 'कर' प्रायः समयवाचक अर्थ देता है। जैसे—

1. उसने **खाकर** कहानी सुनायी।

अर्थात 'खाने' की क्रिया के बाद सुनाने की क्रिया आरम्भ हुई। अतः 'खाकर' को हम समयवाचक घटक मानेंगे। सकर्मक धातुएँ ही नहीं, बल्कि अकर्मक धातुएँ भी 'कर' के साथ समयवाचक रूप में आती हैं—जैसे

1. वह **हँस कर** घर में भागा।
2. वह **चिल्लाकर** सो गया।

यहाँ 'हँसना' और 'चिल्लाना' का मुख्य क्रिया से पूर्वापर सम्बन्ध है, अतः इनको समयवाचक माना जायेगा।

'कर' के साथ धातुएँ द्वित्व रूप में भी आती हैं—

1. वह **हँस-हँस कर** कहने लगा।
2. वह **चिल्ला-चिल्लाकर** रोने लगा।

4:8:2:0–ता–लिंग और वचन से प्रभावित होने वाला रूप—

1. राम **दौड़ता (हुआ)** आया।
2. सीता **दौड़ती (हुई)** आयी।
3. लड़का **दौड़ता (हुआ)** आया।
4. लड़के **दौड़ते (हुए)** आये।

इसी तरह 'हँसता', 'रोता', 'गाता' आदि रूप 'हुआ', 'हुई', 'हुए' के साथ ऐच्छिक रूप से आयेंगे।

4·8:2:1—अव्यय रूप में जब 'ता' प्रयुक्त होता है, तब वह '–ते' के रूप में आता है। कहीं ऐच्छिक और कहीं अनिवार्य रूप में 'हुए' साथ आता है। अकर्मक धातु+ते के साथ 'हुए' का प्रयोग बराबर मिलता है—जैसे—

1. वह **हँसते हुए** बोला।
2. * वह **हँसते** बोला।
3. वह **मुसकुराते** हुए बोला।
4. * **मुसकुराते** बोला।

सकर्मक धातुएँ 'हुए' के बिना भी आ सकती हैं—

1. पक्षी पर **फड़फड़ाते हुए** उड़ गये।
2. पक्षी पर **फड़फड़ाते** उड़ गये।
3. वे बातें **करते हुए** जा रहे थे।
4. वे बातें **करते** जा रहे थे।

'–ते हुए' वाले रूप अव्यय रूप में प्रयुक्त हुए हैं, क्योंकि ये लिंग-वचन से प्रभावित नहीं होते। जैसे—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

1. लड़का **हँसते हुए** बोला ।
2. लड़की **हँसते हुए** बोली ।
3. लड़के **हँसते हुए** बोले ।
4. लड़कियाँ **हँसते हुए** बोलीं ।

4:8:2:2 –ता कृदन्त रूप द्वित्व में भी आते हैं, और तब 'हुआ' और उसके रूपों का प्रयोग नहीं होता—

दौड़ता-दौड़ता, भागता-भागता,

1. लड़का **दौड़ता-दौड़ता** आया ।
2. लड़की **दौड़ती-दौड़ती** आयी ।
3. वह कहानी **कहते-कहते** सो गया ।
4. वह **खाते-खाते** बोला ।

सकर्मक धातुएँ '–ते–'ते' वाले रूप में आ रही हैं—कहते-कहते, सुनते-सुनते, खाते-खाते आदि । अकर्मक क्रियाएँ भी इस रूप में आयेंगी, हँसते-हँसते, रोते-रोते ।

4: 8: 3:0–या–लिंग और वचन से प्रभावित होने वाला रूप—

1. सीता **दौड़ी (हुई)** आयी ।
2. राम **दौड़ा (हुआ)** आया ।
3. लड़का **दौड़ा (हुआ)** आया ।
4. लड़के **दौड़े (हुए)** आये ।

'–या' जब अव्यय रूप में प्रयुक्त होता है, तब वह–'ये' के रूप में आता है ।

1. वह सिर **झुकाये (हुए)** बोला ।
2. वह **ओवरकोट लिये (हुए)** दिन भर मैदान में रहा ।

ऊपर के दोनों कृदन्त रूप लिंग-वचन से प्रभावित नहीं होंगे ।

इस प्रकार के अव्यय कृदन्त रूपों में सामान्य रूप से अकर्मक कियाएँ नहीं आतीं । जैसे—

1. वह **लपका हुआ** घर गया ।
2. *वह **लपके हुए** घर गया ।
3. वह **दौड़ा हुआ** आया ।
4. *वह **दौड़े हुए** आया ।

कुछ अकर्मक क्रियाओं के रूप कृदन्त '-या' के साथ नहीं बनते । जैसे—

1. वह **हँसता हुआ** बोला ।
2. *वह हँसा हुआ बोला ।
3. वह **झेंपता हुआ** बोला ।
4. *वह **झेंपा हुआ** बोला ।

कुछ अकर्मक क्रियाएँ दोनों रूपों में आ सकती हैं—

1. वह **घबड़ाता हुआ** बोला ।
2. वह **घबड़ाया हुआ** बोला ।

4: 8: 3:1 '–या' कृदन्त रूप द्वित्व रूपों में भी आते हैं; –या –या, –ये –ये । द्वित्व रूपों के साथ 'हुआ' 'हुए' और 'हुई' नहीं आते ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

1. वह **दौड़ा-दौड़ा** घर आया ।
2. वह **भागा-भागा** घर पहुँचा ।
3. वह **लेटे-लेटे** बोला ।

4:9:0——**अन्य शब्द**——इन शब्दों में किसी प्रत्यय या शब्द को जोड़ना नहीं पड़ता । इस वर्ग में आने वाले शब्द कई प्रकार के हैं । इनका अलग-अलग वर्णन और प्रयोग नीचे दिया जा रहा है :

4:9:1—विशेषण शब्द—जैसे, अच्छा, बुरा, सुन्दर, खराब ठीक, तेज़, साफ़ आदि । इनका प्रयोग रीतिवाचक क्रियाविशेषण के रूप में होता है ।

उदाहरण—

क—1. वह गाना **अच्छा** गाता है ।
2. वह कपड़ा **सुन्दर** सीती है ।
3. वह मंत्र **साफ़** बोलता है ।

उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त रीतिवाचक क्रियाविशेषण अव्यय हैं, अर्थात ये लिंग-वचन से प्रभावित नहीं होंगे । इन रीतिवाचक घटकों को निम्नलिखित रेखांकित रूपों से भिन्न समझना चाहिये ।

ख—1. वह खाना **अच्छा** बनाता है ।
2. वह कपड़ा **साफ़** धोता है ।
3. वह चित्र **सुन्दर** बनाता है ।

इन उदाहरणों में 'अच्छा', 'साफ़' और 'सुन्दर' क्रिया की विशेषता तो बताते ही हैं, साथ ही वे 'कर्म' के गुण बन जाते हैं, गाना अच्छा गाने से गाने में कोई विशेषता नहीं आ जाती, किन्तु खाना अच्छा बनाने से खाने में विशेषता आ जाती है । इस भेद के कारण ही 'क' के वाक्यों में 'अच्छा' आदि को 'गाना' आदि से पूर्व रखने पर उनका क्रिया से सम्बन्ध टूट जाता है, किन्तु 'ख' के वाक्यों में इस क्रम परिवर्तन से 'अच्छा' आदि के क्रिया से सन्बन्ध में अन्तर नहीं आता ।

ग—1. वह **अच्छा** गाना गाता है ।
2. वह **सुन्दर** कपड़ा सीता है ।
3. वह **अच्छा** खाना बनाता है ।
4. वह **साफ़** कपड़े धोता है ।

प्रथम दो वाक्यों में 'अच्छा' और 'सुन्दर' का सम्बन्ध क्रिया से नहीं है । किन्तु अन्तिम दो वाक्यों में 'अच्छा' और 'साफ़' का सम्बन्ध क्रियाओं से भी है, क्योंकि वे क्रियाओं के परिणामस्वरूप 'कर्म' के शब्दों में पैदा होते हैं ।

4:9:2:——ध्वन्यात्मक पुनरुक्त शब्द—जैसे—झटपट, चटपट, तड़ातड़ झूठमूठ, थरथर, चुपचाप, भलीभाँति, धड़ाधड़, सटासट, गटागट आदि ।

उदाहरण—

1. वह **झटपट** घर चला गया ।
2. वह **चटपट** काम करता है ।
3. वह **गटगट** पानी पी गया ।

4:9:3——शेष शब्दों को तीसरे वर्ग में रख सकते हैं । जैसे—सहसा, अकस्मात, बेशक, ज़रूर, सचमुच, बिलकुल, कृपया, अनायास, स्वतः, एकटक, क्रमशः आदि ।

उदाहरण—

1. वह **अकस्मात** यहाँ आया ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

2. उसने **ज़रूर** यह काम किया ।

3. **कृपया** खाना खाइए ।

4:9:4––द्वित्व रूप —जैसे–अलग-अलग, ठीक-ठीक, धीरे-धीरे, जल्दी-जल्दी, मंद-मंद, तेज़-तेज़, अपने आप, आप ही आप,

1. वह **ठीक-ठीक** कह रहा है ।

2. हवा **मंद-मंद** चल रही है ।

3. वह **धीरे-धीरे** खा रहा है ।

4:10:0––'कैसे' प्रश्नवाचक शब्द के उत्तर में रीतिवाचक घटक आते हैं । जैसे—

1. उसने कैसे खाना खाया ?

2. उसने **जल्दी-जल्दी** खाना खाया ।

किन्तु रीतिवाचक से भिन्न घटक भी 'कैसे' के उत्तर में आते हैं––जैसे––

1. वह कैसे गया ?

2. वह **साइकिल** से गया ।

'साइकिल से' करणवाचक है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

5

करणवाचक अव्यय वाक्यांश

5:1:0--यह वाक्यांश वाक्य का ऐच्छिक घटक है। क्रिया को करने में जिस साधन की सहायता ली जाती है, उसे करण कारक में रखा जाता है। करण वाक्यांश की रचना में संज्ञा वाक्यांश के बाद 'से' 'में' या 'द्वारा' का प्रयोग करते हैं। इस वाक्यांश में आनेवाली सभी संज्ञाएँ अप्राणिवाचक होती हैं।

1. मोहन **चाकू से** आम काट रहा है।
2. मोहन **बाल्टी से** पौधे सींच रहा है।

5:2:0--करणवाचक वाक्यांश वाच्य परिवर्तन होने पर च्युत नहीं होते। कर्ता वाक्यांश वाच्य परिवर्तन होने पर स्वीकारात्मक वाक्यों में च्युत हो जाते हैं। जैसे—

1. **चाकू से** आम काटा जा रहा है।
2. **बाल्टी से** पौधे सींचे जा रहे हैं।
3. ***मोहन से** आम काटा जा रहा है।
4. ***मोहन से** पौधे सींचे जा रहे हैं।
5. **मोहन से** आम नहीं काटा जा रहा है।
6. **मोहन से** पौधे नहीं सींचे जा रहे हैं।

तीसरे और चौथे वाक्य कर्ता वाक्यांश के च्युत न होने के कारण गलत हैं। पांचवें और छठे वाक्य में कर्ता की असमर्थता दिखायी गयी है।

5:3:0--प्रयोग वैशिष्ट्य के आधार पर करण वाक्यांश को पांच वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से इन वर्गों में परस्पर कुछ न कुछ भेद है। इन वर्गों का नामकरण सम्बन्धित वर्ग के एक शब्द के आधार पर किया गया है। नाम इस प्रकार हैं--1. चाकू वर्ग, 2. कपड़ा वर्ग, 3. आँख वर्ग, 4. मोटर वर्ग, 5. मिट्टी वर्ग।

5:3:1—चाकू वर्ग--इस वर्ग में ऐसे उपकरण आते हैं, जिनको क्रिया के पूर्ण होने के बाद कर्म से पृथक किया जा सकता है। इस वर्ग में चाकू, लाठी, तलवार, डंडा, पत्थर, हाथ आदि शब्द आ सकते हैं। किन्तु इन शब्दों में ऐसी कोई निजी विशेषता नहीं है कि ये ही इस वर्ग में आयें, दूसरे शब्द नहीं। यहाँ अभिप्राय केवल यह है कि करणवाचक वाक्यांश का इस रूप में प्रयोग हो सकता है कि क्रिया की पूर्णता के बाद उपकरण को कर्म से अलग कर दिया जाय और इस वाक्यांश में सामान्य रूप से चाकू वर्ग के शब्द आते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उदाहरण--

1. उसने **चाकू से** आम काटा ।
2. उसने **तलवार से** शेर को मारा ।
3. उसने **हाथ से** दूध ढक दिया ।

'चाकू से', 'तलवार से' और 'हाथ से' करणवाचक वाक्यांश हैं । 'चाकू' आदि क्रिया के पूर्ण होने पर कर्म से पृथक हो जाते हैं । चाकू से आम काटा गया और काटने के बाद चाकू आम से पृथक हो गया । दो अन्य उदाहरणों में भी यही बात दिखायी देती है । प्रयोग की दृष्टि से इस प्रकार के वाक्यांश दूसरे प्रकार के करणवाचक वाक्यांशों से पृथक हैं । जैसे—

1. उसने **कपड़े से** दूध ढक दिया ।
2. उसने **हाथ से** दूध ढक दिया ।

'कपड़े से' और 'हाथ से' दोनों करणवाचक वाक्यांश हैं, किन्तु दोनों भिन्न प्रकार के हैं । पहले वाक्य में 'कपड़े से' का एक ही अर्थ है, वह यह कि ढकने के बाद कपड़ा दूध से पृथक नहीं हुआ । किन्तु दूसरे वाक्य में 'हाथ से' के दो अर्थ हो सकते हैं । पहला अर्थ यह कि हाथ ने किसी वस्तु से दूध को ढक दिया और ढकने के बाद हट गया ; दूसरा अर्थ यह कि हाथ ने स्वयं अपने से दूध को ढक दिया और इसलिए दूसरे अर्थ में हाथ दूध से पृथक नहीं हुआ ।

दूसरा उदाहरण—

1. उसने **हाथ से** पुस्तक ढक दी ।
2. उसने **कपड़े से** पुस्तक ढक दी ।
3. उसने सुन्दरी को **अपने हाथों से** सजाया ।
4. उसने सुन्दरी को **आभूषणों से** सजाया ।

पहले और तीसरे वाक्यों में प्रयुक्त करणवाचक वाक्यांश दूसरे और चौथे वाक्यों में प्रयुक्त करण-वाचक वाक्यांशों से अर्थ और प्रयोग दोनों दृष्टियों से भिन्न हैं । अर्थ की दृष्टि से ये किस प्रकार भिन्न हैं, यह अभी ऊपर स्पष्ट किया गया । निम्नलिखित उदाहरणों को देखने से इनमें प्रयोग भेद भी दिखायी देगा ।

1. *पुस्तक **हाथ में** ढकी है ।
2. पुस्तक **कपड़े में** ढकी है ।
3. *सुन्दरी **हाथों में** सुशोभित है ।
4. सुन्दरी **आभूषणों में** सुशोभित है ।

केवल दूसरा और चौथा वाक्य सही हैं । इन वाक्यों में करणवाचक वाक्यांशों का प्रयोग 'में' के साथ इसलिए संभव हुआ कि 'कपड़ा' और 'आभूषण' कर्म से पृथक होने वाले नहीं हैं, जबकि 'हाथ' कर्म से पृथक हो जाता है ।

5:3:2—कपड़ा वर्ग–इस वर्ग के करणवाचक वाक्यांशों में प्रयुक्त उपकरण कर्म से पृथक् नहीं होते । निम्नलिखित उदाहरणों पर विचार कीजिये ।

1. उसने **प्रकाश से** घर जगमगा दिया ।
2. उसने **लाल रंग से** चित्र रंगा ।
3. उसने **काली स्याही से** पुस्तक लिखी ।
4. उसने **आभूषणों से** लता को सजा दिया ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त 'प्रकाश', 'लाल रंग', 'काली स्याही' और 'आभूषण' क्रमशः 'घर', 'चित्र', 'पुस्तक' और 'लता' से पृथक नहीं होंगे। 'घर' तभी तक जगमगायेगा जब तक 'प्रकाश' होगा, 'प्रकाश' के खत्म होते ही घर की जगमगाहट लुप्त हो जायेगी। इसी प्रकार आभूषणों से पृथक होते ही 'लता' की शोभा या सजावट लुप्त हो जायेगी। इससे स्पष्ट है कि ये उपकरण पहले वर्ग के उपकरणों से भिन्न हैं। वैसे, 'हाथ' आदि उपकरणों का प्रयोग भी दूसरे वर्ग के करणवाचक वाक्यांशों में प्रयुक्त उपकरणों की तरह हो सकता है। जैसे—

1. उसने **हाथ से** चेहरे को ढक लिया।

यहाँ चेहरे से 'हाथ' पृथक नहीं होगा। इसलिए इस उदाहरण में 'हाथ' को दूसरे प्रकार का उपकरण माना जायेगा।

प्रयोग की दृष्टि से इस वर्ग के उपकरणों को अन्य वर्ग के उपकरणों से पृथक किया जा सकता है।

क–1. उसने **हाथ से** चित्र को रँगा।
2. उसने **तूलिका से** चित्र को रँगा।
3. उसने **लाल रंग से** चित्र को रँगा।
ख–4. वह **बायें हाथ से** पत्र लिख रहा है।
5. वह **कलम से** पत्र लिख रहा है।
6. वह **लाल स्याहो से** पत्र लिख रहा है।
ग–7. उसने **अपने हाथ से** घर को जगमगा दिया।
8. उसने **प्रकाश से** घर को जगमगा दिया।

'लाल रंग', 'लाल स्याही' और 'प्रकाश' दूसरे वर्ग के उपकरण हैं, और ये कर्म से पृथक नहीं होंगे। इनमें इस विशेषता के कारण ही इनका प्रयोग निम्न प्रकार से भी किया जा सकता है।

1. यह चित्र **लाल रंग में** है।
2. यह पत्र **लाल स्याही** में है।
3. घर **प्रकाश में** जगमगा रहा है।

किन्तु निम्नलिखित वाक्य गलत हैं।

1. * यह चित्र **हाथ में** है।
2. * यह चित्र **तूलिका में** है।
3. * यह पत्र **बायें हाथ में** है।
4. * यह चित्र **कलम में** है।
5. * घर **हाथ में** जगमगा रहा है।

यहाँ 'हाथ में' वाक्यांश करणवाचक के रूप में प्रयुक्त नहीं है। यही अन्य प्रयोगों के बारे में कहा जा सकता है। इसी प्रकार निम्नलिखित प्रयोग के आधार पर भी प्रथम और द्वितीय वर्ग के उपकरणों में भेद किया जा सकता है—

हाथ का चित्र।
लाल रंग का चित्र।

दूसरा वाक्यांश द्वयार्थक नहीं है, क्योंकि लाल रंग और चित्र का सम्बन्ध एक ही प्रकार का है। किन्तु पहला उपवाक्य द्वयार्थक है; पहला अर्थ, चित्र में हाथ बना हुआ है; दूसरा अर्थ, चित्र हाथ से बनाया गया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस प्रकार निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि दूसरे वर्ग के उपकरण एक खास विशेषता रखते हैं—अर्थ और प्रयोग दोनों दृष्टियों से।

5:3:3—**आँख वर्ग**—इस वर्ग में आने वाले उपकरणों के स्वधर्म के रूप में क्रियाएँ प्रयुक्त होती हैं। आँख का धर्म है 'देखना', कान का धर्म है 'सुनना', दिमाग का धर्म है 'सोचना', पानी का धर्म है 'सींचना' आदि। देखने का कार्य केवल आँखों से ही संभव है, इसलिए सामान्य रूप से 'आँख' का प्रयोग करण कारक में नहीं किया जाता। किन्तु किसी विशेषण के साथ इसका प्रयोग करण कारक में हो सकता है। यही बात कान, पानी आदि के बारे में कही जा सकती है। जैसे—

1. * मोहन ने उसको **आँखों से** देखा।
2. मोहन ने उसको **अपनी आँखों से** देखा।
3. * मोहन ने **कानों से** समाचार सुना।
4. मोहन ने **अपने कानों से** समाचार सुना।
5. * मोहन ने पौधों को **पानी से** सींचा।
6. मोहन ने पौधों को **तालाब के पानी से** सींचा।

चिन्हित वाक्य सामान्य रूप से प्रयोग में नहीं आते।

प्रयोग की दृष्टि से भी इस वर्ग के उपकरण अन्य वर्गों के उपकरणों से भिन्न हैं। निम्नलिखित उदाहरणों पर विचार कीजिये—

1. उसने **रेडियो से** समाचार सुना।
2. उसने **अपने कानों से** समाचार सुना।
3. उसने **दूरबीन से** तारे को देखा।
4. उसने **अपनी आँखों से** तारे को देखा।

'रेडियो' और 'दूरबीन' 'कान' और 'आँख' से भिन्न प्रकार के उपकरण हैं। इस भेद का प्रभाव निम्नलिखित रूपान्तरणों में देखा जा सकता है—

1. **रेडियो से** समाचार प्रसारित किया जाता है।
2. * **कानों से** समाचार प्रसारित किया जाता है।
3. **दूरबीन से** दूर की चीजें दिखायी जाती हैं।
4 * **आँखों से** दूर की चीजें दिखायी जाती हैं।

5:3:4—**मोटर वर्ग**—इस वर्ग में ऐसे उपकरण आते हैं, जो यात्रा के काम आते हैं ; जैसे—मोटर, गाड़ी, जहाज़, नाव, रिक्शा आदि। इस वर्ग के उपकरण 'में' के साथ भी करणवाचक वाक्यांश में आते हैं।

1. वह **मोटर से** बनारस गया।
2. वह **मोटर में** बनारस गया।
3. वह **रिक्शे से** आया।
4. वह **रिक्शे में** आया।
5. वह **हवाई जहाज़ से** आ रहा है।
6. वह **हवाई जहाज़ में** आ रहा है।
7. वह **नाव से** जा रहा है।
8. वह **नाव में** जा रहा है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कपड़ा वर्ग के उपकरण भी 'में' के साथ करणवाचक वाक्यांश में आ सकते हैं, किन्तु मोटर वर्ग के उपकरण से वे इस रूप में भिन्न हैं कि मोटर आदि कर्म से संयुक्त नहीं होते जबकि कपड़ा आदि संयुक्त हो जाते हैं। और इसीलिए कर्म के साथ दूसरे वर्ग के उपकरणों का प्रयोग इस रूप में संभव है।

1. घर **प्रकाश में** जगमगा रहा है।
2. वह **आभूषणों में** सुशोभित हो रही है।

यहाँ 'घर' और 'वह' वास्तव में कर्म कारक के शब्द हैं।

मोटर उपवर्ग के उपकरणों के साथ इस प्रकार का प्रयोग संभव नहीं है। 'घर **मोटर में** जा रहा है' आदि प्रयोग नहीं होंगे।

5:3:5—मिट्टी वर्ग––इस वर्ग में उन उपकरणों को रखा जा सकता है, जो उपादान कारण के रूप में आती हैं, जैसे—मिट्टी, रूई, ऊन, काठ, लोहा आदि। उदाहरण––

1. उसने **मिट्टी से** घड़ा बनाया।
2. उसने **रूई** से सूत बनाया।
3. उसने **लोहे से** कुर्सी बनायी।

उपर्युक्त करणवाचक वाक्यांशों का प्रयोग 'की' के साथ भी मिलता है।

1. उसने **मिट्टी का** घड़ा बनाया।
2. उसने **रूई का** सूत बनाया।
3. उसने **लोहे की** कुर्सी बनायी।

इस वर्ग के उपकरण वस्तु से किसी रूप में पृथक नहीं किये जा सकते। दूसरे वर्ग के उपकरणों (कपड़ा आदि) को वस्तु से पृथक करने पर भी वस्तु की सत्ता बनी रहती है, किन्तु इस वर्ग के उपकरणों को पृथक करते ही वस्तु की सत्ता भी नष्ट हो जाती है। 'लाल स्याही' और 'लाल रंग' का जैसा प्रयोग हो सकता है, वैसा इस वर्ग के उपकरणों का नहीं। जैसे––

क–1. चित्र लाल रंग का है।
  2. घड़ा मिट्टी का है।
ख–1. चित्र लाल रंग में है।
  2. * घड़ा मिट्टी में है।
ग 1. * पत्र लाल स्याही का है।
  2. घड़ा मिट्टी का है।
घ 1. पत्र लाल स्याही में है।
  2. * घड़ा मिट्टी में है।

इसीलिए 'लाल स्याही' और 'लाल रंग' को मिट्टी वर्ग में न रखकर 'कपड़ा वर्ग' में रखा गया है। दूसरे वर्ग में 'लाल स्याही' और 'लाल रंग' क्रमशः पत्र और चित्र के उपादान कारण हैं भी नहीं।

5:3:6––ऊपर पाँच प्रकार के करणवाचक वाक्यांशों का वर्णन किया गया। 'से' और 'में' के प्रयोग को दिखाया गया। 'द्वारा' भी करणवाचक वाक्यांशों के साथ आता है। किन्तु इसका प्रयोग कम होता है।

1. उसने **नाव द्वारा** नदी पार की।
2. **रेडियो द्वारा** समाचार सुनाया जाता है।
3. उसने **डाक द्वारा** चिट्ठी भेजी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

निम्नलिखित वाक्यों में 'द्वारा' का प्रयोग देखिये——

1. उसने **कलम द्वारा** पत्र लिखा ।
2. उसने **प्रकाश द्वारा** घर को जगमगा दिया ।
3. वह **चम्मच द्वारा** खाना खा रहा है ।

इन वाक्यों में 'कलम द्वारा' आदि वाक्यांशों का प्रयोग प्रचलित नहीं है ।

5:3:7——अभी तक जिन करणवाचक वाक्यांशों का उल्लेख किया गया है, वे परसर्गों के साथ आये हैं । कुछ परिस्थितियों में करणवाचक वाक्यांशों का परसर्गरहित प्रयोग भी मिलता है । 'मारना' क्रिया के साथ जब करणवाचक वाक्यांशों में प्रहार करने वाले उपकरण आते हैं, तो उनके परसर्गरहित रूप मिलते हैं । जैसे—

क–1. उसने मोहन को **जूते से** मारा ।
2. उसने मोहन को **जूता** मारा ।

ख–1. उसने राम को **डंडे से** मारा ।
2. उसने राम क। **डंडा** मारा ।

ग–1. उसने राम को **गोली से** मारा ।
2. उसने राम को **गोली** मारी ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

6

साहचर्यवाचक अव्यय वाक्यांश

6:1:0--साहचर्यवाचक वाक्यांश की रचना में निम्नलिखित तत्वों से सहायता ली जाती है।

1. –के साथ,–के साथ-साथ।
2. साथ-साथ, एक साथ, साथ।
3. –समेत,–सहित, स–।
4. –से।

6:2:0–'के साथ' का प्रयोग संज्ञा और क्रियार्थक संज्ञा दोनों के साथ होता है। पहले संज्ञा के साथ 'के साथ' के प्रयोग पर विचार किया जायेगा।

एक कारक में आने वाले भिन्न शब्दों में जब साहचर्य भाव होता है, तब उन शब्दों में से एक के साथ 'के साथ' का प्रयोग करते हैं, तथा 'और' को च्युत कर देते हैं। जिस शब्द से 'के साथ' जुड़ता है, वह फिर उस कारक में नहीं रह जाता जैसे--

1. राम और मोहन घर गये।

रूपान्तरण--

2. **राम के साथ** मोहन घर गया।
3. राम **मोहन के साथ** घर गया।

नम्बर 1 वाक्य से यह स्पष्ट नहीं है कि राम और मोहन अलग-अलग घर गये या एक साथ। यदि दोनों एक साथ घर गये हैं, और इसको स्पष्ट करना है, तो राम या मोहन से 'के साथ' जोड़ देंगे। तथा 'और' को हटा देंगे। ऊपर के उदाहरण में 'राम' और 'मोहन' एक ही कारक में हैं। रूपान्तरण के बाद जिस शब्द के साथ 'के साथ' जुड़ता है, वह कर्ता कारक में फिर नहीं रहता। अर्थात 'राम के साथ' या 'मोहन के साथ' कर्ता कारक में नहीं हैं।

कर्ता कारक में आने वाले भिन्न शब्दों से संयुक्त 'के साथ' के कुछ और उदाहरण नीचे हैं—

1. राम और मोहन ने खाना खाया।

रूपान्तरण--राम ने **मोहन के साथ** खाना खाया।

2. सीता और उषा गाना गायेगी।

रूपान्तरण--सीता **उषा के साथ** गाना गायेगी।

3. राम और मोहन पुस्तक पढ़ेंगे।

राम **मोहन के साथ** पुस्तक पढ़ेगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इसी प्रकार कर्म कारक में आने वाले भिन्न शब्दों में साहचर्य दिखाने के लिए 'के साथ' का प्रयोग हो सकता है—

1. मैंने **नमक और** रोटी खायी।
   मैंने **नमक के साथ** रोटी खायी।
2. उसने पुस्तक और कलम दी।
   उसने **पुस्तक के साथ** कलम दी।
3. मैंने मोहन और राम को बुलाया।
   मैंने **मोहन के साथ** राम को भी बुलाया।

किन्तु कारण कारक में आने वाले भिन्न शब्दों में साहचर्य प्रकट करने के लिए 'के साथ' का प्रयोग नहीं किया जाता।

जैसे—

1. मोहन ने उसको लाठी और पत्थर से मारा।
   * मोहन ने उसको **लाठी के साथ** पत्थर से मारा।
   * मोहन ने उसको **पत्थर के साथ** लाठी से मारा।
2. मैंने कलम और पेंसिल से पत्र लिखा।
   * मैंने **कलम के साथ** पेंसिल से पत्र लिखा।
   * मैंने **पेंसिल के साथ** कलम से पत्र लिखा।

सम्प्रदान कारक में आने वाले भिन्न शब्दों में साहचर्य प्रकट करने के लिए 'के साथ' का प्रयोग हो सकता है। जैसे—

1. उसने राम और मोहन को दो रुपये दिये।
   उसने **राम के साथ** मोहन को भी दो रुपये दिये।

अपादान कारक में प्रयुक्त भिन्न शब्दों में साहचर्य प्रकट करने के लिए 'के साथ' प्रयुक्त नहीं होता। जैसे—

1. पक्षी छत और पेड़ से उड़ गये।
   *पक्षी **छत के साथ** पेड़ से उड़ गये।
   *पक्षी **पेड़ के साथ** छत से उड़ गये।

'सम्बन्ध' और 'सम्बोधन' में आने वाले भिन्न शब्द भी 'के साथ' से साहचर्य नहीं प्रकट करते।

जैसे—

1. उसने राम और मोहन की पुस्तकें जला दीं।
   *उसने राम के साथ मोहन की पुस्तक जला दी।
2. राम और मोहन ! तुम दोनों घर जाओ।
   *राम के साथ मोहन ! तुम दोनों घर जाओ।

अधिकरण कारक में आने वाले भिन्न शब्दों में साहचर्य प्रकट करने के लिए 'के साथ' का प्रयोग होता है। जैसे—

1. उसने लोटे और गिलास में पानी भर दिया।
   उसने **लोटे के साथ** गिलास में भी पानी भर दिया।
2. मैंने गांवों और शहरों में इसका प्रचार किया।
   मैंने **गांवों के साथ** शहरों में भी इसका प्रचार किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

6:2:1—एक कारक में दो से अधिक आने वाले भिन्न शब्दों में साहचर्य प्रकट करने के लिए' भी 'के साथ' का प्रयोग होता है। ऐसी स्थिति में भिन्न शब्दों के दो वर्ग हो जाते हैं, और यदि प्रत्येक वर्ग में एक से अधिक शब्द हैं, तो वे 'और' से संयुक्त होंगे। जैसे—

1. राम, मोहन और राधे घर गये।
   क. राम और मोहन **राधे के साथ** घर गये।
   ख. राम **मोहन और राधे के साथ** घर गया।

6:2:2—विभिन्न कारकों में आने वाली संज्ञाओं में साहचर्य प्रकट करने के साथ-साथ 'के साथ' दो क्रियाओं में भी साहचर्य प्रकट करता है। जिस क्रिया के साथ 'के साथ' संयुक्त होता है, वह क्रियार्थक संज्ञा के रूप में आती है। उदाहरण—

1. उसने नहाया और कपड़े धोये।
   उसने **नहाने के साथ** कपड़े भी धोये।
2. उसने एक गाना और एक कहानी सुनायी।
   उसने **गाना सुनाने के साथ** एक कहानी भी सुनायी।

6:2:3—'के साथ-साथ' का प्रयोग 'के साथ' के समान होता है। 'के साथ' के स्थान पर 'के साथ-साथ' का प्रयोग हो सकता है।

6:3:0—साथ-साथ

'साथ-साथ' का प्रयोग एक कारक में आने वाले भिन्न शब्दों में साहचर्य भाव प्रकट करने के लिए होता है। 'के साथ' से यह इस रूप में भिन्न है कि 'और' को च्युत नहीं करना पड़ता। इन दोनों में दूसरा भेद यह है कि 'साथ-साथ' सभी कारकों में आने वाले शब्दों में साहचर्य प्रकट करने के लिए प्रयुक्त हो सकता है। जैसे—

1. राम और मोहन **साथ-साथ** घर गये। (कर्ता कारक)
2. राम पुस्तक और कापी **साथ-साथ** खरीदेगा। (कर्म कारक)
3. राम ने उसको चाकू और डंडे से **साथ-साथ** मारा। (करण कारक)
4. उसने मोहन और सोहन को **साथ-साथ** रुपये दिये। (सम्प्रदान कारक)
5. पानी छोटी और बड़ी टंकियों से **साथ-साथ** गिर रहा है। (अपादान)
6. उसने लोटे और गिलास में **साथ-साथ** पानी भरा। (अधिकरण)

'संबंध' और 'सम्बोधन' में आने वाले भिन्न शब्दों में साहचर्य प्रकट करने के लिए 'साथ-साथ का प्रयोग नहीं होता।

1. *उसने मोहन और राम की **साथ-साथ** पुस्तकें जला दीं।
2. *राम और मोहन **साथ-साथ**! यहाँ आओ।

6:3:1—एक कारक के बहुवचन के शब्दों में साहचर्य प्रकट करने के लिए भी 'साथ-साथ' का प्रयोग होता है। ऐसी स्थिति में 'के साथ' का प्रयोग नहीं हो सकता। यहाँ भी सभी कारकों में 'साथ-साथ' का प्रयोग मिलता है। जैसे—

1. लड़के **साथ-साथ** घर गये। (कर्ता)
2. उसने सब पुस्तकें **साथ-साथ** खरीदीं। (कर्म)
3. उसने सब हथियारों से **साथ-साथ** मारा। (करण)
4. उसने सब आदमियों को **साथ-साथ** रुपये दिये। (सम्प्रदान)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

5. पानी सब टंकियों से **साथ-साथ** गिर रहा है। (अपादान)

6. उसने सब बर्तनों में **साथ-साथ** पानी भर दिया। (अधिकरण)

'संबंध' और 'संबोधन' में इस तरह का प्रयोग नहीं मिला।

6:3:2–एकसाथ–'एकसाथ' का प्रयोग 'साथ-साथ' के स्थान पर होता है। प्रयोग की दृष्टि से दोनों में अन्तर नहीं है।

6:3:3–साथ–'साथ' का प्रयोग 'साथ-साथ' और 'एक साथ' के समान ही होता है। किंतु एक भेद है। 'साथ' का प्रयोग सभी कारकों में आने वाले शब्दों के साथ नहीं होता। इसका प्रयोग सामान्य रूप से कर्ता और कर्म कारक में आने वाले शब्दों में साहचर्य प्रकट करने के लिए होता है। उदाहरण नीचे हैं—

1. राम और मोहन **साथ** घर गये। (कर्ता)
2. उसने कापी और पुस्तक **साथ** खरीदी। (कर्म)
3. उसने चाकू और डंडे से **साथ** मारा। (करण)
4. उसने मोहन और सोहन को **साथ** रुपये दिये। (सम्प्रदान)
5. पानी लोटे और गिलास से **साथ** बह रहा है। (अपादान)
6. उसने लोटे और गिलास में **साथ** पानी भरा। (अधिकरण)

'करण' कारक में 'साथ' का प्रयोग संदेहास्पद है। सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण में 'साथ' के स्थान पर सामान्य रूप से 'एक साथ' या 'साथ-साथ' का प्रयोग होता है। करण कारक में बहु-वचन शब्द के साथ 'साथ' का प्रयोग हो सकता है—

उसने सब अस्त्रों से **साथ** वार किया। (करण)

6:4.0–'समेत' और 'सहित' का प्रयोग एक समान होता है। इनका प्रयोग केवल कर्ता और कर्म कारक में आने वाले भिन्न शब्दों में साहचर्य दिखाने के लिए होता है। इनका प्रयोग होने पर 'और' का प्रयोग नहीं होता—

1. राम और मोहन घर आये।
   राम मोहन **सहित** घर आया।
   राम मोहन **समेत** घर आया।
2. उसने छिलका और केला खाया।
   उसने छिलका **सहित** केला खाया।
   उसने छिलका **समेत** केला खाया।
3. उसने लड़के और मोहन को दो रुपये दिये।
   *उसने **लड़के समेत** मोहन को दो रुपये दिये।

इसी तरह अन्य कारकों में 'सहित' और 'समेत' का प्रयोग नहीं मिलता।

6:4:1 स–

एक ही कारक के भिन्न शब्दों में साहचर्य प्रकट करने के लिए 'स–' का प्रयोग भी होता है। किंतु इसके उदाहरण भी केवल कर्ता और कर्म कारक के भिन्न शब्दों में साहचर्य प्रकट करने के लिए होता है।

1. मैं और मेरा परिवार बनारस गया।
   मैं **सपरिवार** बनारस गया। (कर्ता)
2. उसने मुझको और मेरे परिवार को बुलाया।
   उसने मुझे **सपरिवार** बुलाया। (कर्म)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

'स–' का प्रयोग काफी सीमित है ।

6 5:0–से

'से' का प्रयोग साहचर्य प्रकट करने के लिए भी होता है।

1. मैंने नमक और रोटी खायी ।
   मैंने नमक **से** रोटी खायी ।
2. उसने दूध और रोटी खायी ।
   उसने दूध **से** रोटी खायी ।

किंतु निम्नलिखित उदाहरणों में 'से' साहचर्यवाचक नहीं है–

1. तुम अपनी बात **विस्तार से** कहो ।
2. मैं आपके यहाँ बड़े **विश्वास से** आया ।
3. वह बड़े **शौक से** रहता है ।

इन वाक्यों में 'से' साहचर्यवाचक नहीं है, क्योंकि 'से' के साथ आने वाले शब्द अन्य शब्दों के साथ एक कारक में नहीं आ सकते । जैसे—

1. *तुम अपनी बात और विस्तार कहो ।
2. *मैं और विश्वास आपके यहाँ आये ।
3. *वह और शौक रहते हैं ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

7

कारणवाचक अव्यय वाक्यांश

7:0—कारणवाचक अव्यय वाक्यांश की रचना में निम्नलिखित शब्द सहायक होते हैं —

1. –के कारण
2. –की वजह
3. –के मारे
4. –से
5. –पर
6. –में
7. –ते–ते

1—क्रियार्थक और साधारण दोनों प्रकार की संज्ञाओं के साथ 'के कारण' का प्रयोग होता है।

जैसे—

1. **उसके न आने के कारण** मोहन को मौका मिल गया।
2. **भूख लगने के कारण** वह रो रहा है।
3. **श्रद्धा के कारण** उसका मस्तक नत था।

2—

1. **पढ़ाई की वजह से** उसकी आँखें कमजोर हो गयीं।
2. **पास न होने की वजह से** उसकी तरक्की रुक गयी।

3—

1. **ठंड के मारे** उसका बुरा हाल है।
2. **पढ़ाई के मारे** मैं कोई काम नहीं कर सकता।

4—

1. मोहन **नहाने से** बीमार पड़ गया।
2. बच्चा **भूख से** तड़प रहा है।

5—

1. **तुम्हारे कहने पर** मैं उसके घर गया।
   (तुम्हारे कहने के कारण)
2. **आपके घर जाने पर** वह नाराज़ हो गया।
3. वह **मेरे हँसने पर** रुष्ट हो गया।

6—

1. पैंट **बैठने में** फट गया।
2. वह **सर्दी में** ठिठुर रहा है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

7—

1. वह **चलते-चलते** थक गया।
2. वह चिंता **करते-करते** मर गया।

कारणवाचक घटक का प्रयोग उपवाक्य के स्तर पर भी होता है।

इसलिए, इस कारण,

1. मैं घर नहीं गया, **इसलिए** काम नहीं हो सका।
2. मोहन बात कर रहा था, **इस कारण** देर हो गयी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४

प्रयोजनवाचक अव्यय वाक्यांश

8:1—प्रयोजन वाक्यांश की रचना संज्ञा के साथ निम्नलिखित कोई एक तत्व जोड़कर होती है—
–के लिए, –के वास्ते, –के हेतु, –के नाम पर, –को, –अर्थ ।

संज्ञा के अन्तर्गत जातिवाचक, भाववाचक आदि संज्ञाएँ, क्रियार्थक संज्ञाएँ और सर्वनाम सम्मिलित हैं ।

8:2:0—प्रयोजनवाचक वाक्यांश की रचना में 'के लिए' का सबसे अधिक प्रयोग होता है । संज्ञा और सर्वनाम के साथ 'के लिए' के कई उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं—

1. उसने **गरीबों की सहायता के लिए** रुपये दिये ।
2. उसने **नौकरी के लिए** रिश्वत दी ।
3. वह **गाय के लिए** घास देता है ।
4. वह **पढ़ने के लिए** आया है ।
5. वह **मेरे लिए** दो पुस्तकें लाया ।
6. **इसके लिए** कुछ पैसे दे दीजिये ।

8:2:1—संज्ञा और सर्वनाम के बाद 'के लिए' का प्रयोग होने पर, फिर इसका लोप नहीं होता । किंतु क्रियार्थक संज्ञाओं के साथ कुछ परिस्थितियों में 'के लिए' का ऐच्छिक रूप से लोप संभव है । जैसे—

1. वह यहाँ **पढ़ने के लिए** आया है ।
2. वह यहाँ **पढ़ने** आया है ।
3. वह रोज **खाने के लिए** घर पहुँच जाता है ।
4. वह रोज खाने घर पहुँच जाता है ।

किंतु निम्नलिखित वाक्यों में क्रियार्थक संज्ञा के साथ आये हुए 'के लिए' का लोप नहीं होगा ।

1. वह **खाना बनाने के लिए** कह रहा था ।
2. *वह **खाना बनाने** कह रहा था ।
3. उसने **पढ़ने के लिए** पुस्तक खरीदी ।
4. *उसने **पढ़ने** पुस्तक खरीदी ।
5. उसने मुझे **खाने के लिए** बुलाया ।
6. *उसने मुझे **खाने** बुलाया ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऊपर के उदाहरणों से स्पष्ट है कि जब 'आना' और 'पहुँचना' क्रियाएँ वाक्य में प्रयुक्त हुईं, तब 'के लिए' का ऐच्छिक लोप संभव हो गया, किन्तु जब अन्य क्रियाएँ (कहना, खरीदना आदि) प्रयुक्त हुईं, तब 'के लिए' का लोप नहीं हो सका। जिन क्रियाओं के वाक्य में प्रयुक्त होने पर 'के लिए' का ऐच्छिक लोप संभव है, उनमें कुछ इस प्रकार हैं—

जाना	चलना	झपटना
दौड़ना	पहुँचना	लपकना
आना	उठना	चढ़ना
ठहरना	भेजना	बैठना आदि।

उदाहरण—

1. वह **भोजन करने (के लिए)** गया।
2. वह मोहन को **मारने (के लिए)** दौड़ा।
3. वह सुबह **पढ़ने (के लिए)** उठता है।
4. वह **फल तोड़ने (के लिए)** ऊपर चढ़ गया।
5. मैं वहाँ **भोजन करने (के लिए)** बैठा।
6. मैं दो बजे **पढ़ने (के लिए)** बैठा।

इसी प्रकार अन्य उदाहरण।

8:3 कभी-कभी 'के वास्ते', 'के हेतु' और 'के नाम पर' का प्रयोग 'के लिए' के स्थान पर प्रयोजनवाचक के रूप में होता है। 'के नाम पर' का प्रयोग नियंत्रित है, सर्वत्र 'के लिए' के स्थान पर नहीं आयेगा। 'के वास्ते' 'के लिए' का पर्याय है। 'के हेतु' का प्रयोग भी बहुत कम है।

उदाहरण—

1. मैंने **पढ़ने के वास्ते** दो पुस्तकें खरीदीं।
2. वह मेरे **बैठने के वास्ते** एक कुर्सी लाया।
3. उसने **गरीबों के हेतु** बहुत दान दिये।
4. वह **मरने के हेतु** नदी में कूद पड़ा।
5. उसने **गरीबों के नाम पर** चंदा वसूल किया।
6. उसने **देश के नाम पर** अपने प्राण दे दिये।

8:4—प्रयोजनवाचक के रूप में 'को' परसर्ग का भी प्रयोग होता है। इसे सम्प्रदान 'को' से पृथक समझना चाहिए। प्रयोजनवाचक 'को' का प्रयोग केवल क्रियार्थक संज्ञाओं के साथ मिलता है।

1. उसने सेना को **पीछे रहने को** विवश किया।
2. वह अपने दुश्मन के प्राण **निकालने को** तैयार है।
3. शंकर ने अर्जुन से वरदान **मांगने को** कहा।
4. घर में **नहाने को** पानी नहीं है।
5. जाड़े में **पहनने को** ऊनी कपड़े चाहिए।

8:5—प्रयोजनवाचक के रूप में '–अर्थ' का भी प्रयोग होता है। किंतु इसका प्रयोग सीमित शब्दों के साथ होता है। '–अर्थ' का प्रयोग भाववाचक संज्ञाओं के साथ और उनमें भी व्यंजनांत या आकारांत भाववाचक संज्ञाओं के साथ मिलता है। जैसे—

1. उसने गरीबों की **सहायतार्थ** रुपये दिये।
2. उसने **पुण्यार्थ** गंगा में स्नान किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

८

प्रयोजनवाचक अव्यय वाक्यांश

8: 1—प्रयोजन वाक्यांश की रचना संज्ञा के साथ निम्नलिखित कोई एक तत्व जोड़कर होती है—

–के लिए, –के वास्ते, –के हेतु, –के नाम पर, –को, –अर्थ ।

संज्ञा के अन्तर्गत जातिवाचक, भाववाचक आदि संज्ञाएँ, क्रियार्थक संज्ञाएँ और सर्वनाम सम्मिलित हैं ।

8: 2:0—प्रयोजनवाचक वाक्यांश की रचना में 'के लिए' का सबसे अधिक प्रयोग होता है । संज्ञा और सर्वनाम के साथ 'के लिए' के कई उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं—

1. उसने **गरीबों की सहायता के लिए** रुपये दिये ।
2. उसने **नौकरी के लिए** रिश्वत दी ।
3. वह **गाय के लिए** घास देता है ।
4. वह **पढ़ने के लिए** आया है ।
5. वह **मेरे लिए** दो पुस्तकें लाया ।
6. **इसके लिए** कुछ पैसे दे दीजिये ।

8: 2: 1—संज्ञा और सर्वनाम के बाद 'के लिए' का प्रयोग होने पर, फिर इसका लोप नहीं होता । किंतु क्रियार्थक संज्ञाओं के साथ कुछ परिस्थितियों में 'के लिए' का ऐच्छिक रूप से लोप संभव है । जैसे—

1. वह यहाँ **पढ़ने के लिए** आया है ।
2. वह यहाँ **पढ़ने** आया है ।
3. वह रोज **खाने के लिए** घर पहुँच जाता है ।
4. वह रोज **खाने** घर पहुँच जाता है ।

किंतु निम्नलिखित वाक्यों में क्रियार्थक संज्ञा के साथ आये हुए 'के लिए' का लोप नहीं होगा ।

1. वह **खाना बनाने के लिए** कह रहा था ।
2. *वह **खाना बनाने** कह रहा था ।
3. उसने **पढ़ने के लिए** पुस्तक खरीदी ।
4. *उसने **पढ़ने** पुस्तक खरीदी ।
5. उसने मुझे **खाने के लिए** बुलाया ।
6. *उसने मुझे **खाने** बुलाया ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऊपर के उदाहरणों से स्पष्ट है कि जब 'आना' और 'पहुँचना' क्रियाएँ वाक्य में प्रयुक्त हुईं, तब 'के लिए' का ऐच्छिक लोप संभव हो गया, किन्तु जब अन्य क्रियाएँ (कहना, खरीदना आदि) प्रयुक्त हुईं, तब 'के लिए' का लोप नहीं हो सका। जिन क्रियाओं के वाक्य में प्रयुक्त होने पर 'के लिए' का ऐच्छिक लोप संभव है, उनमें कुछ इस प्रकार हैं—

जाना	चलना	झपटना
दौड़ना	पहुँचना	लपकना
आना	उठना	चढ़ना
ठहरना	भेजना	बैठना आदि।

उदाहरण—

1. वह **भोजन करने (के लिए)** गया।
2. वह मोहन को **मारने (के लिए)** दौड़ा।
3. वह सुबह **पढ़ने (के लिए)** उठता है।
4. वह **फल तोड़ने (के लिए)** ऊपर चढ़ गया।
5. मैं वहाँ **भोजन करने (के लिए)** बैठा।
6. मैं दो बजे **पढ़ने (के लिए)** बैठा।

इसी प्रकार अन्य उदाहरण।

8:3 कभी-कभी 'के वास्ते', 'के हेतु' और 'के नाम पर' का प्रयोग 'के लिए' के स्थान पर प्रयोजनवाचक के रूप में होता है। 'के नाम पर' का प्रयोग नियंत्रित है, सर्वत्र 'के लिए' के स्थान पर नहीं आयेगा। 'के वास्ते' 'के लिए' का पर्याय है। 'के हेतु' का प्रयोग भी बहुत कम है।

उदाहरण—

1. मैंने **पढ़ने के वास्ते** दो पुस्तकें खरीदीं।
2. वह मेरे **बैठने के वास्ते** एक कुर्सी लाया।
3. उसने **गरीबों के हेतु** बहुत दान दिये।
4. वह **मरने के हेतु** नदी में कूद पड़ा।
5. उसने **गरीबों के नाम पर** चंदा वसूल किया।
6. उसने **देश के नाम पर** अपने प्राण दे दिये।

8:4—प्रयोजनवाचक के रूप में 'को' परसर्ग का भी प्रयोग होता है। इसे सम्प्रदान 'को' से पृथक समझना चाहिए। प्रयोजनवाचक 'को' का प्रयोग केवल क्रियार्थक संज्ञाओं के साथ मिलता है।

1. उसने सेना को **पीछे रहने को** विवश किया।
2. वह अपने दुश्मन के प्राण **निकालने को** तैयार है।
3. शंकर ने अर्जुन से वरदान **मांगने को** कहा।
4. घर में **नहाने को** पानी नहीं है।
5. जाड़े में **पहनने को** ऊनी कपड़े चाहिए।

8:5—प्रयोजनवाचक के रूप में '–अर्थ' का भी प्रयोग होता है। किंतु इसका प्रयोग सीमित शब्दों के साथ होता है। '–अर्थ' का प्रयोग भाववाचक संज्ञाओं के साथ और उनमें भी व्यंजनांत या आकारांत भाववाचक संज्ञाओं के साथ मिलता है। जैसे—

1. उसने गरीबों की **सहायतार्थ** रुपये दिये।
2. उसने **पुण्यार्थ** गंगा में स्नान किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

९

विविध अव्यय वाक्यांश

9:0: प्रस्तुत अध्याय में निम्नलिखित शब्दों से बनने वाले अव्यय वाक्यांशों का वर्णन किया गया है—

1. विना, बगैर ।
2. के बावजूद, –के होते हुए, –ने पर भी, –के अतिरिक्त, –के अलावा ।
3. –के स्थान पर ।
4. –में (मूल्यवाची)

9:1 'विना' और 'बगैर' का प्रयोग संज्ञा, सर्वनाम और क्रिया के साथ होता है ।

'विना' का प्रयोग संज्ञा के पूर्व या पश्चात होता है । संज्ञा के पश्चात इसका प्रयोग होने पर 'विना' के पूर्व ऐच्छिक रूप से 'के' का प्रयोग मिलता है । जैसे—

मोहन विना	चाय विना
मोहन के विना	चाय के विना

सर्वनाम के पश्चात 'विना' 'के' लेता है । सर्वनाम के बाद 'के' अनिवार्य रूप में आता है । जैसे—

*आप विना	*तुम विना
आप के विना	तुम्हारे विना

संज्ञा के पूर्व 'विना' का प्रयोग होने पर संज्ञा के बाद 'के' अनिवार्य रूप में आता है । जैसे—

विना मोहन के
विना चाय के

सर्वनाम के पूर्व 'विना' के आने पर सर्वनाम के बाद भी 'के' अनिवार्य रूप से आता है । जैसे—

विना तुम्हारे
विना आपके

'विना' की तरह 'बगैर' का प्रयोग भी संज्ञा और सर्वनाम के पूर्व और पश्चात हो सकता है । संज्ञा के पश्चात 'बगैर' ऐच्छिक रूप से 'के' के साथ आता है । प्रायः 'बगैर' की जगह '–के बगैर' का ही प्रयोग अधिक मिलता है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उदाहरण –

मोहन बग़ैर	चाय बग़ैर
मोहन के बग़ैर	चाय के बग़ैर

सर्वनाम के पश्चात '–के बग़ैर' का प्रयोग होता है, 'बग़ैर' का नहीं।

*तुम बग़ैर	*हम बग़ैर
तुम्हारे बग़ैर	हमारे बग़ैर

'बग़ैर' संज्ञा और सर्वनाम के पूर्व भी प्रयुक्त हो सकता है। ऐसी स्थिति में संज्ञा और सर्वनाम के बाद 'के' का आना अनिवार्य होता है। जैसे—

बग़ैर मोहन के	बग़ैर आप के
बग़ैर चाय के	बग़ैर उसके

9:2 'बिना' और 'बग़ैर' का प्रयोग क्रिया के साथ भी होता है। केवल 'खाये', 'पढ़े', 'गये' जैसे क्रियारूपों के साथ 'बिना' और 'बग़ैर' का प्रयोग होता है। क्रिया के पूर्व और पश्चात दोनों तरफ इनका प्रयोग हो सकता है। क्रिया के साथ 'बिना' और 'बग़ैर' के प्रयुक्त होने पर 'के' का प्रयोग नहीं होता। जैसे—

खाये बिना	बिना खाये
खाये बग़ैर	बग़ैर खाये

*खाकर बिना/बग़ैर	बिना/बग़ैर	खाकर
*खाने बिना/बग़ैर		खाने
*खाया बिना/बग़ैर		खाया
*खाते बिना/बग़ैर		खाता
आदि।		खाऊँ
		आदि।

9:3 '–के बावजूद', '–के होते हुए' आदि शब्दों का प्रयोग संज्ञाओं और सर्वनाओं के साथ होता है। इनके उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं।

1. **मोहन के बावजूद** श्याम ने भी रुपये दिये।
2. **श्याम के होते हुए** इस काम का होना कठिन है।
3. **डाक्टर के न होने पर** भी रोगी अच्छा हो गया।
4. **तुम्हारे अतिरिक्त** और कोई नहीं आयेगा।
5. **श्याम के अलावा** कौन यह काम कर सकता है ?

9:4—''के स्थान पर' का प्रयोग स्थानापन्न के अर्थ में होता है। जैसे—

1. उसने **पुस्तक के स्थान पर** कलम दी।
2. **सोहन के स्थान पर** श्याम जायेगा।

'में' मूल्यवाची है।

1. उसने यह पुस्तक दो **रुपये में** दी।
2. यह साइकिल दो सौ **रुपये में** है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परिशिष्ट

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

1

'कि' उपवाक्य

1:1:0 'कि' दो उपवाक्यों को जोड़ने वाला संयोजक है। 'कि' के बाद आने वाले उपवाक्य को 'कि उपवाक्य' कहा जा सकता है। वाक्य में कार्य की दृष्टि से 'कि उपवाक्य' के निम्नलिखित रूप मिलते हैं—

1. कर्म के रूप में, 2. कर्ता के रूप में, 3. विशेषण के रूप में, 4. क्रिया विशेषण के रूप में, 5. कारण के रूप में, 6. अन्य प्रयोग।

इसका अर्थ यह है कि 'कि उपवाक्य' का रूपान्तरण उपर्युक्त वाक्यांशों में हो सकता है।

1:2:0—कर्म के रूप में 'कि उपवाक्य'-निम्नलिखित सकर्मक क्रियाएँ कर्म के रूप में 'कि उपवाक्य' को लेती हैं—

कहना	चाहना	पूछना
टोकना	देखना	भूल जाना
बताना	बोलना	समझना
मानना	लिखना	सुझाना
समझना	सिखाना	
सुनना	सुनाना	
सोचना	जानना	

ये क्रियाएँ प्रथम उपवाक्य में ऐच्छिक रूप से 'यह' को लेती हैं।

उदाहरण—

1. उसने (यह) देखा कि सब सो रहे हैं।
2. उसने (यह) कहा कि राम बीमार है।
3. उसने (यह) चाहा कि पुस्तक लौटा दी जाये।
4. मैं (यह) मानता हूँ कि तुम ठीक कह रहे हो।
5. मैं (यह) समझता हूँ कि वह नहीं आयेगा।

अन्य सकर्मक क्रियाएँ कर्म के रूप में 'कि उपवाक्य' नहीं लेतीं। निम्नलिखित उदाहरण देखिये—

1. मोहन ने घर बनाया।
2. *मोहन ने बनाया कि........

स्पष्ट है कि 'बनाना' क्रिया 'कहना', 'सुनना' आदि की तरह 'कि उपवाक्य' नहीं ले सकती। ऊपर जिन क्रियाओं की सूची दी गयी है, उनमें से कई इस रूप में भी प्रयुक्त होती हैं—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

1. सुना जाता है कि मोहन अमेरिका गया।
2. कहा जाता है कि वहाँ के लोगों को चावल पसन्द है।

इसी प्रकार समझना, देखना, पूछना, सोचना, बताना क्रियाएँ आयेंगी।

'कर्म' के रूप में 'कि उपवाक्य' को लेने वाली कुछ क्रियाओं के साथ कर्ता कारक में 'को' परसर्ग लगता है। जैसे--

याद पड़ना, दिखायी देना, सुनायी पड़ना, सुनायी देना, ज्ञात होना, मालूम होना, सूझना।

1. मुझे (यह) याद पड़ता है कि वह पिछले साल आया था।
2. मोहन को (यह) सूझता है कि इस काम को अभी किया जाय।
3. मुझे (यह) ज्ञात हुआ कि वह घर आ गया है।
4. मुझे (यह) दिखायी दे रहा है कि वह नहीं आयेगा।
5. मोहन को (यह) सुनायी पड़ रहा है कि हम शोर मचा रहे हैं।

'करना' के साथ कई शब्द संयुक्त होकर आते हैं, और 'कर्म' के रूप में 'कि उपवाक्य' को लेते हैं। जैसे—

महसूस, स्वीकार, स्पष्ट, सूचित
सचेत, आज्ञा, उम्मीद आदि। महसूस करना आदि।

'कर्म' के रूप में आने वाले 'कि उपवाक्य' को कई बार वाक्यांश में रूपान्तरित करके कर्म के स्वाभाविक स्थान पर रखना संभव होता है। जैसे—

1. उसने देखा कि सब सो रहे हैं।
2. उसने **सबको सोते** देखा।
3. मैं मानता हूँ कि तुम ठीक कह रहे हो।
4. मैं **तुम्हारा कहना** ठीक मानता हूँ।

किंतु सभी प्रकार के 'कि उपवाक्यों' का इस प्रकार रूपान्तरण संभव नहीं है—

1. मैंने देखा कि मोहन रो रहा है।
2. मैंने सुना कि वह घर आ रहा है।

रूपान्तरण—

1. *मैंने मोहन का रोना देखा।
2. *मैंने उसका घर आना सुना।

जब कर्म वाक्यांश के रूप में होता है, तो उसे क्रिया से पूर्व रखते हैं, और जब वह उपवाक्य के रूप में होता है, तो उसे 'कि' से जोड़कर क्रिया के बाद रखते हैं। इसीलिए सर्वत्र रूपान्तरण सम्भव नहीं है।

1:3:0 कर्ता के रूप में 'कि उपवाक्य'—इस प्रकार का 'कि उपवाक्य' निम्नलिखित वाक्यों में मिलता है।

1. (यह)	संभव मुमकिन	है कि वह घर जा रहा हो। (कि-उपवाक्य, संभावनार्थ)
2. (यह)	अच्छा आश्चर्य	है कि वह घर जा रहा है। (कि-उपवाक्य, संभावनार्थ)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कर्ता वाक्यांश के रूप में 'कि उपवाक्य' का रूपान्तरण—

उसका घर जाना	संभव	है।
	मुमकिन	
	अच्छा	
	आश्चर्य	

3. (यह)	कष्ट	की बात है कि तुमको अवसर नहीं मिला।
	चिंता	
	दुख	

'कष्ट' के स्थान पर दुख, सुख, ग्लानि आदि शब्द आ सकते हैं।

रूपान्तरण—

तुम्हें अवसर न मिलना	कष्ट	की बात है।
	दुख	
	क्षोभ	

1:4:0 विशेषण के रूप 'कि उपवाक्य'—निम्नलिखित प्रकार के वाक्यों में 'कि उपवाक्य' का प्रयोग विशेषण के रूप में होता है। इन वाक्यों में प्रयुक्त 'कि उपवाक्य' को सम्बन्धवाचक विशेषण के रूप में रूपान्तरित किया जा सकता है।

1:4:1 संज्ञा+करना—

1. मोहन ने (यह)	विश्वास	किया कि तुम समय से घर पहुँचोगे।
	आशा	
	दावा	

इस प्रकार की और संज्ञाओं की सूची इस प्रकार है

वादा	संकेत	जिक्र	+ करना	कि·······
घोषणा	माँग	फैसला		
कामना	निश्चय	आलोचना		
शिकायत	खोज	निवेदन आदि।		

विशेषण वाक्यांश के रूप में रूपान्तरण—

1. मोहन ने **तुम्हारे पास होने की** आशा की।
2. उसने **तुम्हारे समय से घर पहुँचने का** दावा किया।

किंतु इस प्रकार के रूपान्तरणों की जगह 'कि उपवाक्य' ही प्रयोग में अधिक हैं।

1:4:2 संज्ञा+देना—

1. मोहन ने (यह) आज्ञा दी कि सब लोग चले जायें।
2. मोहन ने (यह) आदेश दिया कि कैदी को छोड़ दिया जाये।
3. मोहन ने (यह) आश्वासन दिया कि काम हो जायेगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

'देना' के साथ आने वालो कुछ अन्य संज्ञाएँ—

बयान	तर्क	गवाही	देना+ +कि............
सुझाव	संकेत	उत्तर	
आदेश	आज्ञा	आश्वासन	
दलील	सूचना	चेतावनी	
सलाह	छूट		

विशेषण वाक्यांश में रूपान्तरण—

1. मोहन ने **सब लोगों** को **चले जाने** की आज्ञा दी।
2. मोहन ने **कैदियों** को **छोड़ देने** का आदेश दिया।
3. मोहन ने **काम हो जाने** का आश्वासन दिया।

1:4:3 निष्कर्ष+निकालना

1. उन्होंने (यह) निष्कर्ष निकाला कि यह सब काल्पनिक है।

रूपान्तरण—

1. उन्होंने **इन सबके काल्पनिक होने** का निष्कर्ष निकाला।

1:4:4 संज्ञा+लगाना

1. उसने (यह) पता लगाया कि छुट्टी कब होगी।
2. उसने (यह) अनुमान लगाया कि मोहन लौट आयेगा।
3. उसने (यह) अभियोग लगाया कि मोहन चोर है।

रूपान्तरण—

1. उसने **छुट्टी** का पता लगाया।
2. उसने **मोहन के लौट आने** का अनुमान लगाया।
3. उसने **मोहन पर चोरी** का अभियोग लगाया।

1:4:5 संज्ञा+होना

1. मुझे (यह) विश्वास हो गया है कि वह जायेगा।

रूपान्तरण—

1. मुझे **उसके जाने** का विश्वास हो गया।

1:4:6 संज्ञा+चलना या लगना।

1. मुझे (यह) पता चल गया कि मोहन बीमार है।

रूपान्तरण—

1. मुझे **मोहन के बीमार होने** का पता चल गया।

1.4:7 'है' से बनने वाले—

क—(मेरी) (यह)	प्रार्थना निवेदन कहना	है कि तुम घर जाओ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्य संज्ञाएँ—

इच्छा	अनुमान	निवेदन	है	कि...........
प्रार्थना	मतलब	अभिप्राय		
सौभाग्य	समाचार	अधिकार		
		आदि		

रूपान्तरण—

1. तुमसे घर जाने की प्रार्थना है ।
2. तुमसे घर जाने का निवेदन है ।

ऐसे 'कि उपवाक्यों' का सामान्य रूप से रूपान्तरण नहीं होता ।

ख—(कर्ता+को)+विश्वास+है कि

1. (मुझको) (यह) विश्वास है कि वह पास हो जायेगा ।

अन्य संज्ञाएँ—

इच्छा	आशा	अधिकार	है	कि...........
भरोसा	उम्मीद	पता		
संदेह	आदि			

'कि उपवाक्य' का रूपान्तरण—

1. मुझे उसके पास हो जाने का	विश्वास	है ।
	भरोसा	
	पता	

1:4:8—अभी तक विशेषण के रूप में आने वाले जिन 'कि उपवाक्यों' का वर्णन किया गया, उनके साथ प्रथम उपवाक्य में किसी और संयोजक तत्व का आना अनिवार्य नहीं था । ऐच्छिक रूप से 'यह' को प्रथम उपवाक्य में रख सकते थे । किंतु इनके अतिरिक्त विशेषण के रूप में प्रयुक्त होने वाले कुछ ऐसे 'कि उपवाक्य' हैं, जो प्रथम उपवाक्य में 'ऐसा' या 'इस' या 'इतना' लेते हैं । ऐसे वाक्यों में प्रथम उपवाक्य में 'ऐसा', 'इस' या 'इतना' को रखे बिना 'कि उपवाक्य' को नहीं लाया जा सकता । उदाहरण नीचे हैं—

(क) ऐसा—कि—

1. उसने एक ऐसा घर बनाया है कि उसमें पचास लोग रह सकते हैं ।
2. उसने एक ऐसी दवा बनायी कि लोग खाकर फिर से नवयुवक बन जायें ।

इन वाक्यों में 'ऐसा' को निकाल देने से वाक्य गलत हो जायेंगे । इन वाक्यों के अर्थ को इस रूप में भी प्रकट कर सकते हैं—

1. उसने **पचास लोगों के रहने लायक** एक घर बनाया है ।
2. उसने **लोगों को नवयुवक बना देने वाली** एक दवा बनायी है ।

(ख) इस—कि—

1. वह **इस** योग्य हो गया है कि अपने पैरों पर खड़ा हो सके ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रूपान्तरण—

1. वह अपने पैरों पर खड़ा होने के योग्य हो गया है।

(ग) इतना—कि—

1. उसका हृदय इतना कोमल है कि जरा-सी बात पर घबड़ा जाती है।

यहाँ 'कि उपवाक्य' प्रविशेषण के रूप में प्रयुक्त है। यहाँ विशेषण के रूप में इसका रूपान्तरण नहीं होगा। 'इतना' वास्तव में परिमाणवाचक है, यहाँ अभिप्राय है—अत्यन्त कोमल हृदय।

1:5:0 क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त 'कि उपवाक्य'

क्रियाविशेषण के रूप में जब 'कि उपवाक्य' का प्रयोग होता है, तब प्रथम उपवाक्य में 'ऐसा' का प्रयोग क्रिया से पूर्व होता है—जैसे—

1. वह ऐसा चिल्ला रहा है कि लोगों के कान फट रहे हैं।

2. वह ऐसा घूरता है कि बच्चे डर जाते हैं।

यहाँ 'कि उपवाक्य' क्रिया की विशेषता बता रहे हैं।

1:6:0 कारण के रूप में प्रयुक्त 'कि उपवाक्य'

निम्न प्रकार के वाक्यों में इस प्रकार का 'कि उपवाक्य' आता है।

क—1-मोहन (इसलिए)	दुखी	है कि वह घर नहीं जा सका।

'दुखी' के स्थान पर अन्य विशेषण शब्द, जो मानसिक अवस्था के द्योतक हैं, आ सकते हैं। जैसे—

प्रसन्न, क्रुद्ध, क्षुब्ध, उदास, निराश आदि।

उपर्युक्त वाक्य के 'कि उपवाक्य' का रूपान्तरण कारणवाचक वाक्यांश के रूप में हो सकता है।

2. घर न जाने से मोहन दुखी है।

ख—1. मुझे (इसलिए)	कष्ट	है कि तुमको पुरस्कार नहीं मिला।

'कष्ट' के स्थान पर निम्नलिखित संज्ञा शब्द आ सकते हैं—

खेद, चिंता, दुख, क्षोभ, ग्लानि आदि।

'कि उपवाक्य' का कारणवाचक वाक्यांश में रूपान्तरण-

2. तुमको पुरस्कार न मिलने से मुझे कष्ट है।

ग–1. मोहन (इसलिए) दुखी हुआ कि वह पास न हो सका।

यह वाक्य क (1) वाक्य से केवल इस रूप में भिन्न है कि क्रिया के स्थान पर वहाँ 'है' और यहाँ 'होना' के विविध रूप आते हैं। 'दुखी' के स्थान पर अन्य समानधर्म विशेषण आ सकते हैं; प्रसन्न, चिंतित, क्षुब्ध, आदि।

रूपान्तरण—

2. तुम्हारे पास न होने से मोहन दुखी हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

घ 1–मुझे (इसलिए) दुख हो रहा है कि तुमको पुरस्कार नहीं मिला ।

ख—1 और इस वाक्य में केवल 'है' और 'होना' क्रिया का अन्तर है ।

इस खंड में ऊपर जिन वाक्यों को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया गया, उनके प्रथम उपवाक्य में कारणवाचक 'इसलिए' का आना ऐच्छिक है । उन वाक्यों में ही यह सामर्थ्य है कि वे बिना 'इसलिए' के भी 'कि उपवाक्य' को ले सकते हैं । इन वाक्यों में 'कि उपवाक्य' को लेने का सामर्थ्य मानसिक अवस्थाओं के बोधक संज्ञा शब्दों तथा उनके विशेषण रूपों के कारण हैं । दुख-दुखी, सुख-सुखी, चिंता-चिंतित आदि ।

निम्नलिखित वाक्यों में 'कि उपवाक्य' को रखने के लिए प्रथम उपवाक्य में 'इसलिए' का रखना आवश्यक है ।

क–1. वह इसलिए बड़ा है कि उसमें सचाई है ।

यहाँ 'इसलिए' को निकाल देने पर 'कि उपवाक्य' को नहीं रखा जा सकता ।

2. *वह बड़ा है कि उसमें सचाई है ।

ख–1. मुझे इसलिए हानि है कि वह फेल हो जायेगा ।

2. *मुझे हानि है कि वह फेल हो जायेगा ।

ग–1. मोहन इसलिए धनवान हुआ कि वह श्रम करता था ।

2. *मोहन धनवान हुआ कि वह श्रम करता था ।

घ–1. मुझे इसलिए लाभ हुआ कि तुम नहीं आये ।

2. *मुझे लाभ हुआ कि तुम नहीं आये ।

च–1. मैं इसलिए आया कि कल तुमको जाना है ।

2. *मैं आया कि कल तुमको जाना है ।

ज–1. खंभा इसलिए है कि छत गिर न पड़े ।

2. *खंभा है कि छत गिर न पड़े ।

'इसलिए' का प्रयोग 'प्रयोजन' के लिए भी होता है ।

झ–1. वह इसलिए आया कि अपने भाई से मिल सके ।

2. *वह आया कि अपने भाई से मिल सके ।

1:7:0 'कि उपवाक्य' के अन्य प्रयोग—

क—लगना—

1. (मुझे) (यह) लगता है कि वह बीमार है ।

2. मोहन को (यह) लगता है कि मैं झूठ बोल रहा हूँ ।

यहाँ 'कि उपवाक्य' का रूपान्तरण अन्य 'कि उपवाक्यों' की तरह नहीं होगा ।

ख—चाहिये—

1. तुम्हें (यह) चाहिये कि घर चले जाओ ।

2. राम को (यह) चाहिये कि पुस्तक खरीद ले ।

रूपान्तरण—

3. तुम्हें **घर चला जाना** चाहिये ।

4. राम को **पुस्तक खरीद लेना** चाहिये ।

'लगना' और 'चाहिये' के साथ आनेवाले 'कि उपवाक्य' को पूरक उपवाक्य कहा जा सकता है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ग—नकारात्मक वाक्यों में 'कि उपवाक्य' को रखा जा सकता है।

1. वह बीमार नहीं है कि उसे दवा दे रहे हो।
2. वह डरपोक नहीं है कि पत्ता खड़खड़ाने से डर जायेगा।

स्वीकारात्मक वाक्यों में भी 'कि उपवाक्य' आ सकता है, यदि पहले उपवाक्य को प्रश्नार्थक अनुतान में कहा जाये। उदाहरण के लिए ऊपर के दोनों वाक्य लिए जा सकते हैं।

3. वह बीमार है ? कि उसे दवा दे रहे हो।
4. वह डरपोक है ? कि पत्ता खड़खड़ाने से डर जायेगा।

घ— ये श्रीमान जी हैं कि कुछ बताते नहीं।
यह भाभी हैं कि बस हँसे जा रही हैं।
एक मैं हूँ कि बैठा लिख रहा हूँ।

ङ—1. वह पहुँचा ही था कि मैं आ गया।
2. वह गा ही रहा था कि तबला आ गया।
3. मैं उससे बात कर ही रहा था कि जोरों से पानी बरसने लगा।

उपर्युक्त वाक्यों में 'कि' का प्रयोग समयवाचक के रूप में है।

च—'कि' का प्रयोग 'या' के अर्थ में भी होता है। प्रश्नार्थक वाक्यों में।

1. वह आज आयेगा कि नहीं।
2. वह आज आयेगा या नहीं।
3. वह खाना खायेगा कि उपवास रखेगा।
4. वह खाना खायेगा या उपवास रखेगा।
5. वह आयेगा कि मोहन।
6. वह आयेगा या मोहन। आदि।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

2

नकारात्मक शब्द

2:1:0—हिन्दी में वाक्यों को नकारात्मक बनाने के लिए तीन नकारात्मक निपातों और कुछ शब्दों का प्रयोग किया जाता है। नकारात्मक निपातों में 'नहीं', 'न' और 'मत' हैं। इनमें 'मत' का प्रयोग केवल 'विधि' उपवाक्यों के साथ होता है। 'न' और 'नहीं' कुछ स्थानों पर समान रूप से एक दूसरे की जगह प्रयुक्त होते हैं, किंतु कुछ स्थानों पर कोई एक ही प्रयुक्त हो सकता है, दूसरा नहीं। नकारात्मक निपातों के अलावा कुछ ऐसे शब्द हैं, जो वाक्य में नकारात्मक के रूप में प्रयुक्त होते हैं, जैसे—थोड़े, कहाँ, भला। एक क्रियारूप ऐसा है, जो निषेध का अर्थ व्यक्त करता है। नीचे इन सबके प्रयोगों का वर्णन किया जा रहा है।

नकारात्मक निपात

2:2:0—'नहीं' का प्रयोग विधि वाक्यों को छोड़कर सामान्य रूप से सभी प्रकार के वाक्यों में होता है। विधि वाक्यों में 'न' या 'मत' का प्रयोग होता है। जैसे—

1. तुम घर **न** जाओ।
2. तुम घर **मत** जाओ।
3. *तुम घर नहीं जाओ।

किंतु विधि वाक्यों में 'नहीं' के प्रयोग को एकदम निषिद्ध नहीं कहा जा सकता। जैसे—

1. आप अभी जाइये नहीं।

यह वाक्य प्रयोग में है।

2:2:1:0—वाक्य में शब्दक्रम की दृष्टि से 'नहीं' के चार स्थान दिखायी देते हैं।

1. क्रिया से ठीक पूर्व, —क्रिया।
2. मुख्य क्रिया और सहायक क्रिया के बीच में, मुख्य क्रिया—सहायक क्रिया।
3. क्रिया के ठीक बाद, क्रिया—
4. पूरक या कर्म के ठीक पूर्व, —पूरक/कर्म।

इनमें पहला स्थान अधिक सामान्य है। चौथा स्थान यदाकदा प्रयुक्त होता है। दूसरे और तीसरे स्थान पर 'नहीं' का प्रयोग अधिक बलात्मक होता है। दूसरा स्थान कम बलात्मक और तीसरा स्थान अधिक बलात्मक है।

1. —क्रिया
   1. वह घर **नहीं** गया।
   2. वह घर नहीं जा रहा है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

3. यह भेद नहीं बताया जा सकता ।
4. उसको नहीं जाने दिया जा सकता ।

2. मुख्य क्रिया—सहायक क्रियाएँ

1. वह भेद बता नहीं सकता ।
2. यह भेद बताया नहीं जा सकता था ।
3. वह घर जा नहीं रहा था ।
4. वह सामान उठा नहीं पा रहा था ।
5. वह हँस नहीं रहा था ।

दो सहायक क्रियाओं के बीच में 'नहीं' को नहीं रखा जाता । जैसे—

1. *यह भेद बताया जा नहीं सकता था ।
2. *वह जाने पा नहीं रहा था ।
3. *यह भेद बताया जा सकता नहीं था ।
4. *उससे हँसते बनता नहीं था ।

इन वाक्यों में 'नहीं' का प्रयोग गलत स्थानों पर हुआ है ।

3. क्रिया—

1. वह घर जाता नहीं ।
2. मुझसे तो गाया जाता नहीं ।
3. वह मुझे जाने देता नहीं ।
4. वह घर गया नहीं ।
5. मैं खाऊँगा नहीं ।

जब लम्बी संयुक्त क्रियाएँ आती हैं, तो प्रायः 'नहीं' का प्रयोग क्रिया के वाद नहीं करते । जैसे—

1. यह भेद बताया जा सकता था नहीं ।
2. वह जाने पा रहा था नहीं ।

आदि ।

'नहीं' का प्रयोग वाक्य के अन्त में अधिक बलात्मक है ।

4. —पूरक/कर्म

1. आम नहीं अच्छा था ।
2. राम नहीं सहमत था ।
3. उसने नहीं गाली दी ।
4. उसने नहीं छड़ी तोड़ी ।

अन्य कारकों में आने वाले शब्दों के पूर्व भी 'नहीं' का प्रयोग मिलता है ।

1. उसने नहीं डंडा मारा । (डंडा—करण कारक)
2. वह नहीं छत से गिरा । (छत से—अपादान)

2:2:1:1 'नहीं' के प्रयोग का संयुक्त क्रियाओं पर काफ़ी प्रभाव पड़ता है। यहाँ संयुक्त क्रिया से तात्पर्य मुख्य क्रिया और एक या अनेक सहायक क्रियाओं से बनने वाली संयुक्त क्रियाओं से है । सहायक क्रिया के रूप में आने वाली क्रियाएँ निम्नलिखित हैं—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आना	उठना	करना
चलना	चुकना	जाना
टपकना	डालना	देना
धमकना	पड़ना	पाना
बनना	बसना	बैठना
मारना	रखना	रहना
लगना	लेना	सकना
होना		

इनमें से केवल आठ सहायक क्रियाएँ 'नहीं' के साथ प्रयुक्त हो सकती हैं, शेष नहीं। ये आठ सहायक क्रियाएँ इस प्रकार हैं--

जाना, देना, पड़ना, पाना, बनना, रहना, सकना, होना।

अन्य सहायक क्रियाएँ 'नहीं' के साथ नहीं आतीं। जैसे—

क-- 1. उसने शेर को मार डाला।
2. उसने शेर को **नहीं** मारा।

ख--1. वह खाना खा **चुका**।
2. उसने खाना **नहीं** खाया।

ग--1. वह गा **सकता** है।
2. वह **नहीं** गा **सकता**।

घ---1. वह घर जा **रहा** था।
2. वह घर **नहीं** जा **रहा** था।

ऊपर के उदाहरणों से स्पष्ट है कि 'डालना' और 'चुकना' 'नहीं' के साथ नहीं आते, जबकि 'सकना' और 'रहना' आ सकते हैं। इसी प्रकार अन्य सहायक क्रियाओं के बारे में समझना चाहिये।

2:2:1:2 ऊपर जिन आठ सहायक क्रियाओं का उल्लेख किया गया, उनके और वर्गीकरण हो सकते हैं। सबसे पहले इनके दो वर्ग हो सकते हैं ; ऐसी सहायक क्रियाएँ जो प्रायः निषेधात्मक निपात के साथ आयें और ऐसी सहायक क्रियाएँ जो स्वीकारात्मक और निषेधातमक दोनों रूपों में समान रूप से आयें। पहले वर्ग में 'पाना' और 'बनना' हैं, दूसरे वर्ग में शेष छह हैं। 'पाना' और 'बनना' का प्रयोग प्रायः 'नहीं' के साथ होता है।

1. उससे घर **नहीं** जाते बनता।
2. उससे **नहीं** हँसते बनता।
3. वह घर **नहीं** जा पाया।
4. वह बड़ी **कठिनाई से** पत्र लिख पाया।

चौथे वाक्य में 'नहीं' का प्रयोग नहीं है, किंतु कार्य को बड़ी 'कठिनाई से' किया जा सका।

2:2:1:3 उपर्युक्त आठ सहायक क्रियाओं के वर्गीकरण का दूसरा आधार इस प्रकार है; ऐसी सहायक क्रियाएँ जो 'नहीं' के साथ हर स्थिति में बनी रहें, और ऐसी सहायक क्रियाएँ जो 'नहीं' के साथ हर स्थिति में न बनी रहें। वास्तव में दूसरे वर्ग की सहायक क्रियाएँ एकाधिक अर्थों में प्रयुक्त होती हैं, और ये कुछ अर्थों में प्रयुक्त होने पर 'नहीं' के साथ नहीं आतीं और कुछ अर्थों में प्रयुक्त होने पर आतीं हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ख--मोहन ने मुझे अच्छी तरह **नहीं** समझाया ।

5\. क--वह मुझको घर जाने **देता** है !

ख--वह मुझको घर **नहीं** जाने **देता** ।

तीसरे और चौथे उदाहरणों में 'नहीं' के आने पर 'देना' का प्रयोग नहीं है, क्योंकि इन वाक्यों में 'देना' न तो अनुमतिबोधक है, और न वाच्य परिवर्तन में सहायक । 'देना' से जब वाच्य परिवर्तन किया जाता है, तब कर्ता में 'को' परसर्ग लगता है। पहले और दूसरे नम्बर के उदाहरणों से यह स्पष्ट है ।

सहायक क्रिया के रूप में 'पड़ना' का प्रयोग करने से यदि कर्ता में 'को' परसर्ग लगे, तो 'नहीं' के साथ 'पड़ना' का प्रयोग हो सकता है, अन्यथा नहीं । अनिवार्यता को प्रकट करने और वाच्य परिवर्तन के लिए 'पड़ना' का प्रयोग होने पर वह 'नहीं' के साथ आ सकता है ।

उदाहरण--

1\. क--**मुझको** वह बीमार जान **पड़ता** है ।

ख--**मुझको** वह बीमार **नहीं** जान **पड़ता** ।

2\. क--**मुझको** फूल लाल दिखायी **पड़ता** है ।

ख--**मुझको** फूल लाल **नहीं** दिखाई **पड़ता** ।

3\. क--**मुझको** कल घर जाना **पड़ेगा** ।

ख--**मुझको** कल घर **नहीं** जाना **पड़ेगा** ।

4\. क--कार्टून को देखते ही **वह** हँस **पड़ा** ।

ख--कार्टून को देखते ही **वह नहीं** हँसा ।

5\. क--**वह** माँ को देखकर रो **पड़ा** ।

ख--**वह** माँ को देखकर **नहीं** रोया ।

चौथे और पाँचवें उदाहरणों में 'नहीं' के साथ 'पड़ना' का प्रयोग नहीं हुआ है ।

'रहना' का प्रयोग जब क्रिया की सातत्य अवस्था के बोधक के रूप में होता है, तब वह 'नहीं' के साथ आ सकता है, अन्यथा नहीं । अवस्थाबोधक के रूप में जब 'रहा' का प्रयोग होता है, तब उसके पूर्व की क्रिया धातु रूप में होती है । 'रहा' के पूर्व की धातु में 'ता' या 'आ' अवस्थाबोधक प्रत्यय नहीं लगते । यदि 'रहा' के पूर्व की धातु में 'ता' या 'आ' जुड़े हैं, तो 'नहीं' के साथ 'रहा' का प्रयोग नहीं मिलेगा । नीचे के उदाहरणों से यह बात स्पष्ट हो जायेगी ।

1\. क--वह पुस्तक पढ़ **रहा** है ।

ख--वह पुस्तक **नहीं** पढ़ **रहा** है ।

2\. क--वह सामान ढोता आ **रहा** है ।

ख--वह सामान **नहीं** ढो **रहा** है ।

ग--वह सामान **नहीं** ढोता ।

3\. क--मोहन अपनी बात कहता **रहा** ।

ख--मोहन ने अपनी बात **नहीं** कही ।

4\. क--वह इन प्रथाओं को ढोये आ **रहा** है ।

ख--वह इन प्रथाओं को **नहीं** ढो **रहा** है ।

ग--वह इन प्रथाओं को **नहीं** ढोता ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पहला वर्ग	
पाना	बनना
सकना	होना

दूसरा वर्ग	
जाना	देना
पड़ना	रहना

'नहीं' के साथ पहले वर्ग की सहायक क्रियाओं का प्रयोग निम्नलिखित वाक्यों में देखिये।

1. वह पुस्तक **नहीं** पढ़ **पाता**।
2. वह रात को **नहीं** सो **पाता**।
3. मुझसे **नहीं** लिखते **बनता**।
4. वह घर **नहीं** जा **सकता**।
5. उसने **नहीं** खाया **होगा**।

यहाँ पर 'पाना', 'बनना', 'सकना' और 'होना' सहायक क्रियाएँ दूसरे स्थान पर आयी हुई हैं। अर्थात मुख्य क्रिया के ठीक बाद प्रयुक्त हैं।

संयुक्त क्रियाओं का विस्तार पाँच घटकों तक संभव है। ऊपर के वाक्यों की संयुक्त क्रियाओं में केवल दो-दो घटक हैं, 'पढ़ पाता', 'सो पाता' आदि। तीसरे घटक के रूप में 'पाना' और 'बनना' का प्रयोग नहीं मिलता। 'सकना' और 'होना' का प्रयोग तीसरे घटक के रूप में हो सकता है।

1. मोहन उसे **नहीं** ले जा **सकता** था।
2. उसे पत्र **नहीं** लिखा गया **होगा**।

चौथे घटक के रूप में भी 'सकना' और 'होना' का प्रयोग हो सकता है। लेकिन 'नहीं' के साथ इनका प्रयोग चौथे स्थान पर नहीं मिलता। पाँच घटकों की संयुक्त क्रिया में 'होना' का प्रयोग पाँचवें स्थान पर अर्थात अन्त में हो सकता है, किंतु 'नहीं' के साथ पाँचवें स्थान पर 'होना' का प्रयोग नहीं मिलता।

दूसरे वर्ग की सहायक क्रियाएँ 'जाना', 'देना', 'पड़ना' और 'रहना' हैं। 'जाना' का प्रयोग जब वाच्य परिवर्तन के लिए होता है, तब वह 'नहीं' के साथ आ सकता है, अन्यथा नहीं। उदाहरण--

1. क--वहाँ गाना गाया **जाता** था।
   ख--वहाँ गाना **नहीं** गाया **जाता** था।
2. क--वह मेरी बात पर हँसता **जाता** था।
   ख--वह मेरी बात पर **नहीं** हँसता था।
3. क--दवा न मिलने से यह रोग बढ़ता चला **जाता** है।
   ख--दवा न मिलने से यह रोग **नहीं बढ़ता**।

'देना' का प्रयोग जब वाच्य परिवर्तन में सहायक और अनुमतिबोधक के रूप में होता है, तब वह 'नहीं' के साथ आ सकता है, अन्यथा नहीं। उदाहरण--

1. क--वहाँ से मधुर गीत सुनायी **देता** था।
   ख--वहाँ से मधुर गीत **नहीं** सुनायी **देता** था।
2. क--आसमान में तारे दिखायी **देते** हैं।
   ख--आसमान में तारे **नहीं** दिखायी **देते**।
3. क--उसने गाना सुना **दिया**।
   ख--उसने गाना **नहीं** सुनाया।
4. क--मोहन ने मुझे अच्छी तरह समझा **दिया**।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस प्रकार उन सहायक क्रियाओं का वर्णन समाप्त हुआ जो 'नहीं' के साथ आ सकतो हैं। उनका इस रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

सहायक क्रियाएँ

नहीं	+	1–	पाना बनना सकना होना
		2–	जाना (वाच्य परिवर्तन) देना (वाच्य परिवर्तन और अनुमति) पड़ना (कर्ता+को) रहना (सातत्य, धातु+—)

नीचे संयुक्त क्रियाओं वाले कुछ स्वीकारात्मक वाक्य दिये जा रहे हैं, इन वाक्यों के साथ ही इनके नकारात्मक रूप भी दिये जा रहे हैं। दोनों प्रकार के वाक्यों की तुलना से सहायक क्रियाओं की प्रकृति पर प्रकाश पड़ेगा। च्युत होने वाली सहायक क्रियाएँ और 'नहीं' काले मुद्रित हैं—

1. क—दो पुस्तकें लिखी जा **चुकी** हैं।
   ख—दो पुस्तकें **नहीं** लिखी गयी हैं।
2. क—लकड़ी को तोड़ **डाला** गया।
   ख—लकड़ी को **नहीं** तोड़ा गया।
3. क—उसको पुस्तकें दे **दी** जायेंगी।
   ख—उसको पुस्तकें **नहीं** दी जायेंगी।
4. क—वह मुझको ठहर **जाने** देता है।
   ख—वह मुझको **नहीं** ठहरने देता।
5. क—मुझे जाड़े में शीत सहते **रहना** पड़ता है।
   ख—मुझे जाड़े में शीत **नहीं** सहना पड़ता।
6. क—वह सुनता **जा** रहा था।
   ख—वह **नहीं** सुन रहा था।
7. क—इसको साँचे में ढाल **दिया** जा सकता है।
   ख—इसको साँचे में **नहीं** ढाला जा सकता।
8. क—बीमारी बढ़ती **चली जा** रही है।
   ख—बीमारी **नहीं** बढ़ रही है।

पहले, दूसरे और तीसरे उदाहरणों में 'जाना' 'नहीं' के साथ है, क्योंकि वह वाच्य परिवर्तन में सहायक हैं। किन्तु चौथे, छठे और आठवें उदाहरणों में 'जाना' 'नहीं' के साथ नहीं आया है, क्योंकि यहाँ वह वाच्य परिवर्तन करने वाला नहीं है। इसी प्रकार पाँचवें उदाहरण में 'रहना' 'नहीं' के साथ नहीं आया है, क्योंकि इसके पूर्व की धातु में 'ता' लगा हुआ है। किन्तु छठे और आठवें उदाहरणों में 'रहना' 'नहीं' के साथ भी है, क्योंकि यह सातत्य बोधक है, और पूर्व को धातु में 'ता' या 'आ' प्रत्यय नहीं लगा है। इसी प्रकार अनुमतिबोधक या वाच्य परिवर्तन में सहायक न होने के कारण सातवें उदाहरण में 'देना' 'नहीं' के साथ नहीं है। किन्तु चौथे उदाहरण में अनुमतिबोधक होने के कारण 'देना' 'नहीं' के साथ भी है। 'पड़ना' अनिवार्यताबोधक होने के कारण पाँचवें उदाहरण में 'नहीं' के साथ भी प्रयुक्त हुआ है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

2: 2: 1: 4—संयुक्त और साधारण वाक्यों में सामान्य रूप से जो सहायक क्रियाएँ 'नहीं' के साथ प्रयुक्त नहीं होतीं, उनका प्रयोग मिश्रित वाक्यों में 'नहीं' के साथ मिल जाता है। कुछ उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं।

1. क—जब तक तुम विजय नहीं प्राप्त कर लेते तब तक विश्राम न करो।
   ख–*तुम विजय नहीं प्राप्त कर लेते।
2. क—यदि वह नहीं हँस पड़ता तो वच्चा रोने लगता।
   ख–*वह नहीं हँस पड़ता।
3. क—वह नहीं खा चुका है तो क्या कर रहा है?
   ख–*वह नहीं खा चुका है।

'ख' वाले वाक्य ठीक नहीं लगते, क्योंकि 'नहीं' के साथ सामान्य रूप से 'लेना', 'पड़ना', 'चुकना' सहायक क्रियाओं का प्रयोग नहीं होता। किन्तु यही सहायक क्रियाएँ मिश्रित वाक्यों में 'नहीं' के साथ प्रयुक्त मिल जाती हैं।

2: 2: 1: 5 'नहीं' के आने से कालबोधक 'है' कुछ स्थितियों में च्युत हो जाता है। अभ्यास-बोधक 'ता' के बाद आने वाला 'है' प्रायः च्युत हो जाता है।

1. क—वह मोहन को देखकर हँसता है।
   ख—वह मोहन को देखकर **नहीं** हँसता।
2. ग—उसे भेद बता दिया जा सकता है।
   ख—उसे भेद **नहीं** बताया जा सकता।

अवस्थाबोधक 'आ' और 'रहा' के बाद 'है' च्युत नहीं होता।

1. क—उसने आम खाया है।
   ख—उसने आम **नहीं** खाया है।
2. क—वह कहानी पढ़ रहा है।
   ख—वह कहानी **नहीं** पढ़ रहा है।

योजक और सत्तार्थक 'है' 'नही' के साथ आने पर च्युत नहीं होते। उदाहरण—

1. ईश्वर **नहीं** है।
2. लड़का अच्छा **नहीं** है।
3. मोहन बीमार **नहीं** है।

'कि' उपवाक्य वाले वाक्यों में योजक 'है' का लोप ऐच्छिक रूप से 'नहीं' के साथ हो सकता है।

1. पता नहीं (है) कि कौन आ रहा है।
2. आपको अधिकार नहीं (है) कि मुझे मारें।

2: 2: 1: 6 'नहीं' की सहायता से दो उपवाक्यों को संयुक्त किया जा सकता है। दोनों उप-वाक्यों के समान घटकों में से एक-एक को च्युत कर देते हैं।

1. मोहन रोटी नहीं खाता। मोहन आम खाता है।	}	मोहन रोटी नहीं, आम खाता है। मोहन आम खाता है, रोटी नहीं।
2. मोहन आम नहीं खाता है। राम आम खाता है।	}	मोहन नहीं, राम आम खाता है। राम आम खाता है, मोहन नहीं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

3. मोहन आम नही फेंकता । मोहन आम खाता है ।	मोहन आम फेंकता नहीं, खाता है । मोहन आम खाता है, फेंकता नहीं ।

2:2:1:7—'नहीं तो' का उल्लेख इस संदर्भ में अनुचित नहीं होगा ।

1. जल्दी जाओ **नहीं तो** पानी बरसने लगेगा ।
2. जल्दी खाना खाओ **नहीं तो** गाड़ी छूट जायेगी ।

'तो' के बिना भी उक्त स्थानों में 'नहीं' का प्रयोग हो सकता है ।

2:2:2:0–'न' का प्रयोग अधिकतर विधि और संकेत के उपवाक्यों में होता है, जहाँ सामान्य रूप से 'नहीं' का प्रयोग नहीं मिलता । शर्त, संभावना और निश्चयार्थक उपवाक्यों में अधिकतर 'नहीं' का प्रयोग होता है । किंतु 'न' का प्रयोग इन स्थानों पर भी मिलता है । जैसे--

1. क—वह निश्चय **नहीं** कर सका ।
   ख—वह निश्चय **न** कर सका ।
2. क—उसने खाना **नहीं** खाया होगा ।
   ख—उसने खाना **न** खाया होगा ।

निम्नलिखित क्रियारूपों के साथ, जो निश्चयार्थक हैं, 'न' का प्रयोग प्रायः नहीं मिलता ।

1. पूर्ण भूतकालिक रूप	--	खाया, आया, आदि ।
2. वर्तमान अभ्यास	--	जाता है, खाता है आदि ।
3. भविष्य	--	खायेगा, जायेगा आदि ।
4. वर्तमान पूर्ण	--	खाया है, गाया है आदि ।
5. भूत अभ्यास	--	पढ़ता था, गाता था आदि ।
6. भूतपूर्ण	--	खाया था, पढ़ा था आदि ।
7. भूत अपूर्ण	--	खा रहा था, पढ़ रहा था आदि ।
8. वर्तमान अपूर्ण	--	पढ़ रहा है, खेल रहा है आदि ।

उदाहरण के लिए कुछ वाक्य--

1. उसने खाना **न** खाया ।
2. वह **न** खा रहा था ।
3. वह खाना **न** खाता था ।
4. वह घर **न** जायेगा ।
5. वह पुस्तक **न** पढ़ रहा है ।
6. उसने **न** खाया है ।
7. उसने रोटी **न** खायी थी ।
8. वह **न** हँसता है ।

योजक और सत्तार्थक 'है' के साथ भी 'न' का प्रयोग नहीं मिलता । जैसे--

1. वह लड़का अच्छा **न** है ।
2. ईश्वर **न** है ।

उपर्युक्त वाक्यों में 'न' की जगह 'नहीं' का प्रयोग अधिक स्वाभाविक है ।

अन्य वृत्तियों में आने वाली क्रियारूपों के साथ 'न' का प्रयोग देखिये—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

1. तुम घर **न** जाओ।
2. आप न जाइये।
3. शायद वह **न** आया हो।
4. यदि वह **न** आया तो मैं चला जाऊँगा।
5. शायद मैं घर **न** जाऊँ।
6. वह दुखी **न** रहे।
7. मोहन को **न** भेजा जाये।
8. उसने खाना **न** खाया होगा।

2: 2: 2: 1–निम्नलिखित रचनाओं में केवल 'न' का प्रयोग हो सकता है।

1. –ते हुए से बनी कृदन्त रचनाओं में—
   न खाते हुए, न पढ़ते हुए।
2. –ये हुए से बनी कृदन्त रचनाओं में—
   न बैठे हुए, न गये हुए, न सोये हुए।
3. –कर, पूर्वकालिक क्रिया के साथ—
   न खाकर, न जाकर, न देखकर।
4. -ना से बनी क्रियार्थक संज्ञाओं के साथ—
   न पहचानने पर, न खाने से, न पहनने पर।

2: 2: 2: 2–'न' संयोजक का भी कार्य करता है। दो शब्दों या दो उपवाक्यों को मिलाने के लिए इसका प्रयोग होता है।

शब्दों के उदाहरण—

कोई न कोई, कुछ न कुछ, कभी न कभी
किसी न किसी, एक न एक

इन वाक्यांशों का अर्थ स्वीकारात्मक है।

जब दो या दो से अधिक नकारात्मक उपवाक्यों को संयुक्त करना होता है, तब 'न' की सहायता ली जाती है। प्रत्येक उपवाक्य के साथ 'न' को जोड़ दिया जाता है। यदि दोनों उपवाक्यों में परस्पर भिन्न घटक हैं, तो कोई घटक च्युत नहीं होता। किन्तु यदि समान घटक होते हैं, तो समान घटकों में से एक को छोड़कर बाकी च्युत हो जाते हैं। दोनों तरह के उदाहरण—

1. क—राम घर नहीं जायेगा।
   ख—मोहन आम नहीं खायेगा। } →

संयुक्त वाक्य—**न** राम घर जायेगा, **न** मोहन आम खायेगा।

2. क—राम घर नहीं जायेगा।
   ख—राम खाना नहीं खायेगा। } →

संयुक्त वाक्य—न राम घर जायेगा, न खाना खायेगा।

दूसरे उदाहरण के संयुक्त वाक्य में दूसरी बार 'राम' को नहीं रखा गया है, क्योंकि संयुक्त होने वाले दोनों उपवाक्यों में 'राम' घटक समान हैं।

वाक्य में 'न' का स्थान काफ़ी महत्वपूर्ण है। जिस घटक का निषेध करना होता है, उसके ठीक पहले ही सामान्य रूप से 'न' को रखा जाता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

1. उससे **न** उठते बनता था, **न** खाते बनता था ।

2. **न** उससे उठते बनता था, **न** राम से ।

3. **न** उसके पास काव्य साधना का अवकाश था, **न** मेरे पास ।

4. उसके पास **न** काव्य साधना का अवकाश था, **न** संगीत साधना का

5. उसके पास काव्य साधना का **न** अवकाश था, **न** रुचि ।

दूसरे उपवाक्य में 'न' का स्थान लगभग निश्चित है ; उपवाक्य के आरम्भ में । पहले उपवाक्य में उसका स्थान निश्चित नहीं है, और स्थान परिवर्तन से अर्थ परिवर्तन भी हो जाता है ।

2:2:2:3–'न' के साथ 'तो' का प्रयोग भी मिलता है ; 'न तो' जैसे––उपर्युक्त वाक्यों में पहला वाक्य––

1. उससे **न तो** उठसे बनता था, **न तो** खाते बनता था ।

स्पष्ट है कि 'न' की जगह 'न तो' का प्रयोग ऐच्छिक रूप से कर सकते हैं ।

2:2:2:4–जिन क्रियारूपों के साथ 'न' का प्रयोग सामान्य रूप से हो सकता है, वहाँ उसका स्थान क्रिया से ठीक पूर्व होता है । इस स्थान में परिवर्तन करने से वाक्य रचना पर प्रभाव पड़ता है । जैसे––

1. क —तुम घर **न** जाओ । (पूर्णवाक्य)
   ख —**न** तुम घर जाओ । (अपूर्ण वाक्य)
   ग—तुम **न** घर जाओ । (अपूर्ण वाक्य)
2. क—उसने खाना **न** खाया होगा । (पूर्ण वाक्य)
   ख – उसने **न** खाना खाया होगा । (अपूर्ण वाक्य)
   ग—**न** उसने खाना खाया होगा । (अपूर्ण वाक्य)

2:2:2:5––'न' के अन्य प्रयोगों में 'न केवल' और 'न कि' हैं ।

1. **न केवल** मोहन, बल्कि राम भी जायेगा ।
2. मोहन जायेगा **न कि** राम ।
3. हम भले ही **क्यों न** गिर गये हों, यह काम करेंगे ।

2:2:3:0–मत—

'मत' का प्रयोग केवल 'विधि' उपवाक्यों में होता है––

1. तुम **मत** जाओ ।
2. आप खाना **मत** खाइये ।

'मत' का प्रयोग सामान्य रूप से क्रिया से ठीक पहले होता है । बल देने के लिए कभी-कभी इसको क्रिया के बाद भी रख देते हैं । जैसे––

1. तुम जाओ **मत** ।
2. आप खाना खाइये **मत** ।

आदि ।

2:3:0–**निषेधवाचक अन्य शब्द**––

'थोड़' या 'थोड़े ही', 'कहाँ', 'भला' —ये शब्द निम्नलिखित वाक्यों में निषेधवाचक के रूप में प्रयुक्त हैं––

1. मैं दिल्ली **थोड़े ही** जा रहा हूँ । (नहीं जा रहा हूँ)
2. वह बीमार **थोड़े ही** है । (नहीं बीमार है)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

3. मैं उसको **थोड़े ही** मारूँगा । (नहीं मारूँगा)
4. आजकल **कहीं** पानी बरसता है । (नहीं बरसता)
5. लोटे में पानी **कहाँ** है । (नहीं है)
6. मोहन **भला** घर जायेगा । (नहीं जायेगा)

'कहीं' और 'भला' वाले वाक्य प्रश्नार्थक अनुतान में बोले जाते हैं, जिनके उत्तर नकारात्मक होते हैं, और उस वाक्य में ही निहित होते हैं ।

2: 4: 0--उपर्युक्त शब्दों के अलावा निम्नलिखित क्रिया रूप भी निषेधवाचक होता है—

1. उसको घर **जाना चाहिए था** । (अर्थात वह घर नहीं गया था)
2. उसको परीक्षा में **बैठना चाहिए था** । (अर्थात वह परीक्षा में नही बैठा था)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

3

‘और’

3:1:0–‘और’ एक संयोजक है। इसकी सहायता से दो वाक्यों को जोड़कर संयुक्त वाक्य की रचना की जाती है। ऐसे संयुक्त वाक्यों में दोनों उपवाक्य मुख्य और समानस्तरीय होते हैं।

‘और’ की सहायता से दो वाक्यों को जोड़ने पर दूसरे वाक्य के कई वाक्यांश विशेष परिस्थितियों में च्युत हो जाते हैं। इसका नियमीकरण इस प्रकार किया जा सकता है।

दो वाक्यों में समान कारक में आने वाले समान शब्दों में से एक को च्युत कर दिया जाता है, और समान कारक में आने वाले भिन्न शब्दों को ‘और’ से जोड़ दिया जाता है।

उदाहरण--

यदि दो वाक्यों में समान कारक में आने वाले सभी वाक्यांश परस्पर भिन्न हों, तो उनमें से कोई वाक्यांश च्युत नहीं होगा।

जैसे--

	1	2	3	
क—1.	राम ने	गाना	गाया।	} →
	मोहन ने	खाना	खाया।	

संयुक्तवाक्य--3. राम ने गाना गया **और** मोहन ने खाना खाया।

यहाँ 1×1, 2×2, 3×3 हैं। ($\times$ भिन्नता का द्योतक है।)

ख--ऐसे वाक्य जिनके दो वाक्यांश परस्पर समान हों, एक भिन्न हो। दूसरे और तीसरे घटक समान हैं। 1×1, $2 = 2$, $3 = 3$

	1	2	3	
1.	राम ने	पुस्तक	पढ़ी।	} →
2.	मोहन ने	पुस्तक	पढ़ी।	

3. राम ने पुस्तक पढ़ी **और** मोहन ने पुस्तक पढ़ी।
4. राम ने पुस्तक पढ़ी **और** मोहन ने।
5. राम **और** मोहन ने पुस्तक पढ़ी।

उपर्युक्त संयुक्त वाक्यों को देखने पर पता चलता है कि ‘पुस्तक’ और ‘पढ़ी’ को ऐच्छिक रूप से च्युत किया जा सकता है। अन्तिम संयुक्त वाक्य दो वाक्यों का प्रगाढ़ संयोग है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ग––ऐसे वाक्य, जिनमें पहले और दूसरे घटक समान हों। 1＝1, 2＝2, 3 × 3,

	1	2	3	
1.	राम ने	खाना	पकाया।	} →
2.	राम ने	खाना	खाया।	

3. *राम ने खाना पकाया **और** राम ने खाना खाया।
4. राम ने खाना पकाया **और** खाया।
5. *राम ने खाना पकाया **और** खाना खाया।

इन संयुक्त वाक्यों में दोनों समान वाक्यांशों में से एक-एक का च्युत हो जाना अनिवार्य है। इसीलिए तीसरे और पाँचवें वाक्य गलत हैं।

घ––ऐसे वाक्य, जिनमें पहले और तीसरे घटक समान हों।

1＝1, 2 × 2, 3＝3,

	1	2	3	
1.	राम ने	आम	खाया।	} →
2.	राम ने	लड्डू	खाया।	

3. *राम ने आम खाया **और** राम ने लड्डू खाया।
4. राम ने आम खाया **और** लड्डू खाया।
5. राम ने आम खाया **और** लड्डू।
6. राम ने आम **और** लड्डू खाये।

यहाँ दूसरे 'राम ने' को च्युत करना अनिवार्य है, किंतु दूसरे 'खाया' को च्युत करना ऐच्छिक है।

ङ––ऐसे वाक्य, जिनके पहले और दूसरे घटक भिन्न हों।

1 × 1, 2 × 2, 3＝3,

	1	2	3	
1.	मोहन ने	पुस्तक	खरीदी।	} →
2.	राम ने	आम	खरीदा।	

3. मोहन ने पुस्तक खरीदी **और** राम ने आम खरीदा।
4. मोहन ने पुस्तक खरीदी **और** राम ने आम।

च—ऐसे वाक्य, जिनके पहले और तीसरे घटक भिन्न हों।

1 × 1, 2＝2, 3 × 3,

1. मोहन ने पुस्तक खरीदी। } →
2. राम ने पुस्तक पढ़ी।
3. मोहन ने पुस्तक खरीदो **और** राम ने पुस्तक पढ़ी।
4. मोहन ने पुस्तक खरीदी **और** राम ने पढ़ी।

'पुस्तक' को च्युत करना ऐच्छिक है।

ज––ऐसे वाक्य, जिनके दूसरे और तीसरे घटक भिन्न हों।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

1 = 1, 2 × 2, 3 × 3,

1. राम ने चित्र बनाया।
2. राम ने फिल्म देखी। } →
3. *राम ने चित्र बनाया **और** राम ने फिल्म देखी।
4. राम ने चित्र बनाया **और** फिल्म देखी।

उपर्युक्त उदाहरणों को देखने से पता चलता है कि यदि कर्ता कारक में समान शब्द आये हैं, तो उनमें से एक का च्युत होना आवश्यक है, जबकि कर्म कारक या क्रिया में आने वाले समान शब्दों में से एक का च्युत हो जाना प्रायः ऐच्छिक है। उदाहरण के लिए **ग, घ** और **च** में आने वाले संयुक्त वाक्यों को देखिये।

अब कुछ दूसरे प्रकार के वाक्यों के उदाहरण दिये जायेंगे।

	1	2	3	
झ—1.	हममें	आनन्द का भाव	होना चाहिये।	} →
2.	हममें	गर्व का भाव	होना चाहिये।	

3. हममें आनन्द का भाव होना चाहिये और गर्व का।
4. हममें आनन्द और गर्व का भाव होना चाहिये।

संयुक्त होने वाले वाक्यों का रूप इस प्रकार है—

1 = 1, 2 × 2, 3 = 3,

ञ—1. मोहन को घड़े की आवश्यकता है।
2. सोहन को घड़े की आवश्यकता है। } →
3. मोहन को घड़े की आवश्यकता है **और** सोहन को।
4. मोहन **और** सोहन को घड़े की आवश्यकता है।

समान कारक में आने वाले भिन्न और समान शब्दों या वाक्यांशों का वर्णन ऊपर किया गया। समान कारक में आने वाले भिन्न शब्द 'और' से संयुक्त होते हैं, और समान शब्दों में से एक को छोड़कर बाकी को च्युत कर दिया जाता है।

3:2:0: अब भिन्न कारक में आने वाले भिन्न और समान शब्दों पर विचार किया जायेगा। भिन्न कारक में आने वाले भिन्न शब्द 'और' से संयुक्त नहीं होते। जैसे—

1. मोहन ! **और** लड़कों को बुलाओ।
2. मोहन **और** लड़कों को बुलाओ।
3. तुम **और** लड़के लाओ।
4. तुम **और** लड़के आये।

पहले और तीसरे वाक्यों में 'और' संयोजक नहीं है, क्योंकि उसके दोनों तरफ आने वाले शब्द भिन्न कारकों में है। दूसरे और चौथे वाक्यों में 'और' संयोजक है, क्योंकि उसके दोनों तरफ के शब्द एक कारक में हैं।

3:2:1—भिन्न कारक में आने वाले समान शब्दों में से कोई च्युत नहीं होता।

1. राम ने	मोहन को		बुलाया।	} →
राम ने	मोहन को	पुस्तक	दी।	

3. राम ने **मोहन को** बुलाया **और उसे** पुस्तक दी।

'मोहन को' वाक्यांश दोनों वाक्यों में समान हैं, किन्तु भिन्न कारकों में होने के कारण उनमें से कोई च्युत नहीं हुआ। दूसरी बार 'मोहन को' का सर्वनामीकरण हो गया है; उसे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दूसरा उदाहरण--

1. राम घर बनाता है। } →
2. राम घर में रहता है। }

3. राम घर बनाता है **और उसमें** रहता है।

भिन्न कारकों में आने के कारण 'घर' को च्युत नहीं किया गया। दूसरी बार 'घर' को 'उसमें' के रूप में रखा गया है।

3:3:0--एक कारक में आने वाले जब कई भिन्न शब्दों को 'और' से जोड़ना होता है, तब अन्तिम दो शब्दों के बीच में स्थित 'और' को छोड़ कर बाकी 'और' को च्युत कर देते हैं।

उदाहरण--

क--1. राम ने घर बनाया। } →
2. मोहन ने घर बनाया। }

3. राम और मोहन ने घर बनाया।

ख--1. राम और मोहन ने घर बनाया। } →
2. श्याम ने घर बनाया। }

3. राम और मोहन और श्याम ने घर बनाया।

यहाँ अन्तिम 'और' को छोड़कर शेष को च्युत कर दिया जायेगा--

4. राम, मोहन और श्याम ने घर बनाया।

3:4:0--'और' से संयुक्त होने वाले वाक्यों पर एक प्रकार का नियंत्रण दिखायी पड़ता है। सामान्य रूप से दोनों वाक्यों की क्रियाएँ एक ही काल और एक ही अवस्था में होती हैं। उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्यों को देखिये--

1. मोहन सुबह **टहलता है** और श्याम गेंद **खेलता है**।
2. वह पुस्तक **पढ़ रहा है** और मोहन घर **जा रहा है**।
3. तुमको दवा खानी **चाहिये** और उसको पूजा करनी **चाहिये**।
4. मोहन आगरे में **पढ़ता था** और सोहन गाँव में खेती **करता था**।
5. राम खाना खायेगा और सोहन घर **जायेगा**।
6. तुम घर **जाओ** और मैं बनारस **जाऊँ**।
7. आप यहाँ **रुकिये** और आप वहाँ **चलिये**।

ऊपर के वाक्यों में एक ही काल की क्रियाएँ दो संयुक्त वाक्यों में प्रयुक्त हैं। नीचे के वाक्यों पर ध्यान दीजिये--

1. मोहन सुबह टहलता **है** और श्याम घर जा **रहा है**।
2. वह पुस्तक **पढ़ रहा है** और तुमको पूजा करनी **चाहिये**।
3. वह पुस्तक **पढ़ रहा है** और मोहन गाना गाता **था**।
4. राम खाना **खायेगा** और तुम घर **जाओ**।
5. वह **घर जाया करता था** और राम पुस्तक पढ़ सकता था।

ऊपर के पाँचों संयुक्त वाक्य अटपटे हैं, क्योंकि प्रत्येक वाक्य में आने वाली दोनों क्रियाओं के काल में अन्तर है। लेकिन इन संयुक्त वाक्यों को गलत नहीं कहा जा सकता। उचित सन्दर्भों में ये प्रयुक्त हो सकते हैं।

'और' के समान 'तथा', 'व' और 'एवं' का प्रयोग होता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राज्य संग्रहालय पुस्तकालय, लखनऊ
क्रम संख्या 3941
प्राप्ति तिथि 28/8/70
State Museum, Library, Lko.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh